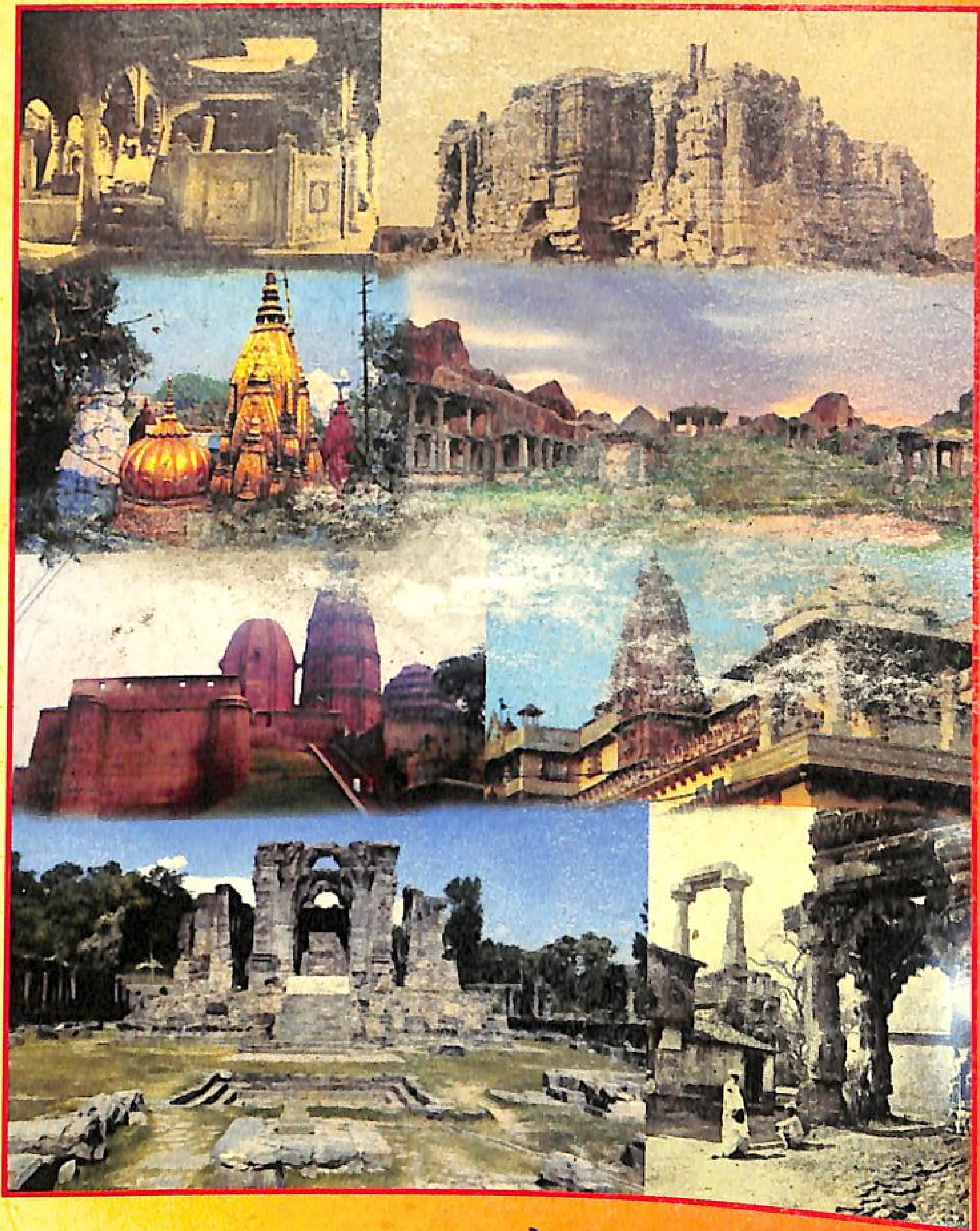
हिन्दू मन्दिरों पर बनी मस्जिदें



अनवर शेख

हिन्दू मन्दिरों पर बनी मस्जिदें

अनवर शेख



प्रकाशक
सांस्कृतिक गौरव संस्थान

प्रकाशकः

सांस्कृतिक गौरव संस्थान

संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6,
रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-110022
दूरभाषः 011-26195368, 26181315
ईमेलः<sgsdelhi05@gmail.com>
वेबसाइटः www.hindusthangaurav.com

सहयोग राशि : 130 रूपये

मुद्रकः

एक्सलप्रिंट
सी-36, फ्लैटेड फैक्ट्री कॉम्प्लेक्स
झण्डेवालान, नई दिल्ली-110055

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

मुसलमानों ने हिन्दू मंदिरों का विध्वंस क्यों किया?

इस्लाम के अनन्य जानकार और इंग्लैंड के निवासी स्वर्गीय श्री अनवर शेख जी ने इस पुस्तक के विषय पर तर्कयुक्त रीति से और पूरी निष्ठा से प्रकाश डाला है। श्री अनवर शेख ने यह सिद्ध किया है कि विदेशी आक्रमणकारियों ने तलवार और आग के द्वारा अपने आधिपत्य की स्थापना के लिए राष्ट्रों का दमन किया। विचित्र बात है कि एक पैगंबर अपनी कब्र से अपने अनुयायियों से यह बताता है कि क्या करना है और क्या नहीं। वह कायदे-कानूनों का एक संग्रह बनाकर जिन्हें वह दैवी-मूल के होने का दावा करता है, ऐसा करने में सफल हो जाता है। बड़े-बड़े देशों के वासियों ने भी विदेशी लुटेरों के हाथों से इसी प्रकार मुसीबतें झेली हैं, जैसी हिन्दुस्थानियों/हिन्दुओं ने झेली हैं।

इस्लाम के मिथकशास्त्र (माइथोलॉजी) में अल्लाह, जो एक आदमी के आश्रित है, उसका स्तर उस आदमी से नीचे है, जिसे पैगंबर का नाम दिया गया है। वह पैगंबर मूर्ति से घृणा करता था और उनके ध्वंस की वकालता करता था, क्योंकि वह स्वयं को पूजनीय मूर्ति के समान माना जाए, ऐसा चाहता था। इस क्रम में अल्लाह मोहम्मद का भक्त बन गया। इसका परिणाम यह हुआ कि अल्लाह की मूर्ति का ध्वंस कर दिया, जो काबा में विराजमान थी। कमाल की बात है कि मुसलमान, जैसा मोहम्मद ने किया, उसके अनुसार करना रहना चाहते हैं अर्थात्, वास्तव में पैगंबर ने अपने अनुयायियों की मनोवृत्ति पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया है और वह प्रथम मध्यस्थ हो गया है और ऐसा प्रथम व्यक्ति बन गया है, जिसकी मध्यस्थता अल्लाह को माननी पड़ेगी। रोचक बात यह है कि इस्लामी कायदे-कानूनों में यह प्रावधान है कि एक मुसलमान एक बार में चार से अधिक बीवियाँ नहीं रख सकता, किन्तु पैगंबर की एक साथ

कम-से-कम नौ बीवियाँ थीं। स्पष्टतः पैगंबर अल्लाह के नियमों से ऊपर था।

श्री शेख ने पुस्तक में यह उल्लेख किया है कि पैगंबर मोहम्मद का हिन्दुस्थान के प्रति अरुचि वाला व्यवहार हो गया था। इसका कारण यह था कि हिन्दुस्थान मोहम्मद के सपनों के प्रति वास्तविक खतरा था। उनकी अरुचि का कारण यह भी था कि अरबों की जीवनशैली और मजहब भारतीय संस्कृति और धार्मिक परंपराओं से गहराई से प्रभावित थी। वस्तुतः अरब निवासी न केवल मूर्तिपूजक थे, बल्कि उनकी मूर्ति पूजा त्रिमूर्ति के हिन्दू सिद्धांतों पर आधारित थी।

पैगंबर अपनी प्रतिभा को लोगों के मनों में उतारना चाहते थे, परन्तु यह तब तक संभव नहीं था जब तक हिन्दू प्रतिमाओं को नष्ट न कर दिया जाए, इसलिए यह स्पष्ट उल्लेख हुआ है कि मक्का के मुख्य मंदिर काबा मंदिर के साथ-साथ अन्य अनेक प्रतिमाएँ भी काले पत्थर के साथ स्थापित थीं और पैगंबर वहाँ प्रायः नियमित रूप से जाते थे। उन्होंने हिन्दुत्व पर प्रहार इसलिए किया क्योंकि यह अरब मूर्तिपूजा प्रथा का स्रोत था और अरबी प्रायद्वीप ने अनेक शताब्दियों पहले सिंधु घाटी से सांस्कृतिक प्रेरणा ली थी। कुछ प्रमाणों के अनुसार अन्य अरबी मन्दिरों में भी इसी प्रकार के काले पत्थर थे।

श्री शेख ने निष्कर्ष निकाला है कि हिन्दू मूर्तियों का विनाश मुस्लिम आक्रमणकारियों की हुकूमत और धन की लालसा की आंतरिक रूप से तुष्टि के लिए कसरत थी। **अहिंसा को जीवन पद्धति बनाकर हिन्दुओं ने स्वयं को किसी भी विध्वंसकारी का आकर्षक लक्ष्य बना लिया है।**

इस प्रकार असंख्य हिन्दू मंदिरों को निंदनीय और दुःखद विध्वंस झेलना पड़ा है।

हिन्दू लेखकों में सत्य के अन्वेषक अति प्रबुद्ध लेखक-द्वय श्री रामस्वरूप जी तथा श्री सीताराम गोयल जी अत्यंत प्रशंसा के पात्र हैं, जिन्होंने मुसलमानों द्वारा किए गए विनाश, हिन्दू स्त्रियों के अपहरण और लूट-मार का यथातथ्य वर्णन/विवेचन किया है।

श्री शेख ने मराठा विद्वान श्री जी. एम. जगत्यानी की भूरि-भूरि प्रशंसा की है, जो वेदों के प्रचारक थे। इसी प्रकार टेक्सास के श्री ए. घोष का भी सम्मानपूर्वक उल्लेख किया है।

सांस्कृतिक गौरव संस्थान की ओर से हम हिन्दू राइटर्स फोरम के प्रकांड लेखक विद्वान डॉ. कृष्णवल्लभ पालीवाल जी के प्रति भी हार्दिक सम्मान प्रकट करते हैं, जिन्होंने इस्लामी बर्बरता का विवेचन करने में सारा जीवन लगा दिया है और लगभग 88 वर्ष की आयु में भी प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं।

हमने उपरिलिखित महानुभावों के संग्रह से हजारों प्रमुख मंदिरों की सूची के पुनः प्रकाशन का यत्न किया है ताकि भावी पीढ़ियों को इस लोमहर्षक भारी दमन की जानकारी हो और भावी पीढ़ी यह सोचे कि किस प्रकार इस विध्वंस से हुए घोर अपमान का निराकरण हो। उल्लिखित महान लेखकों और विद्वानों के प्रति हम कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
संवत् 2076 वि.
दिनांक 6 अप्रैल 2019

-डॉ. महेश चन्द्र गुप्त
राष्ट्रीय मुख्य परामर्शदाता
सांस्कृतिक गौरव संस्थान

भूमिका

भारत में मन्दिरों के विध्वंस व पुनर्निर्माण का ऐतिहासिक घटनाक्रम

भारत में मन्दिर विध्वंस से जुड़ा प्रथम विदेशी आक्रमण ईसा के 150 वर्ष पूर्व अर्थात् 2019+150=2169 वर्ष पूर्व यूनान के मिलेंडर (मिलिंद) द्वारा किया गया था जिसने अयोध्या पर आक्रमण करके श्रीराम मन्दिर को ध्वस्त कर दिया था। इस घटना के 3 माह बाद ही पुष्यमित्र शुंग वंश के राजा द्युमत्सेन ने मिलिन्द की हत्या करके अयोध्या को पुनः अपने अधिकार में कर लिया। (History of Kaushal, Page 206-207) स्वतंत्र अयोध्या में राम मन्दिर का पुनर्निर्माण करने का सौभाग्य सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य प्रथम को मिला जिनका शासनकाल 320 ई. से 326 ई. तक रहा। आगामी कालखण्ड में 600 वर्ष तक भारत पूर्ण स्वतंत्र बना रहा तथा मन्दिर ध्वंस अथवा अन्य राजनीतिक आक्रमणों से पूर्णतः मुक्त रहा।

दूसरा विदेशी आक्रमण: भारत पर दूसरा विदेशी आक्रमण 1001 ई. से 1023 ई. तक महमूद गजनवी द्वारा 12 बार किया गया। गजनवी ने 9वें आक्रमण के समय (1017 से 1019 ई.) मथुरा के श्रीकृष्ण मन्दिर को ध्वस्त किया। इसी गजनवी ने 1026 में सोमनाथ मन्दिर (गुजरात) को लूटा और उसे ध्वस्त किया। गजनवी के उत्तराधिकारी सालार मसूद द्वारा 1033 ई. में अयोध्या के राममंदिर को ध्वस्त करने हेतु भीषण आक्रमण किया गया। जिसका प्रतिरोध कौशल नरेश सुहेल देव द्वारा किया गया और सालार मसूद की 50 हजार की सेना को कब्र में सुला दिया गया। राजा सुहेलदेव को सालार मसूद पर यह विजय 14 जून 1033 को बहराइच से दस कोस दूर घाघरा नदी के तट पर मिली। इासके बाद अजमेर से सेना लेकर मुजफ्फर खान आया, उसे भी मार डाला गया। इन युद्धों में अरब व ईरान के हजारों घरों के चिराग बुझ गए और इसके 160 वर्ष बाद तक मुसलमान भारत पर कोई आक्रमण करने में सफल नहीं हो सके।

सन् 1114 से 1154 के कालखण्ड में अयोध्या के राजा गोविन्द

चन्द्रदेव एवं उनके वंशजों ने जिस भव्य राम मंदिर का निर्माण कराया था, उसी को बाबर ने 1528 में तुड़वाया था (23 मार्च 1528)। बाबर के सेनापति मीरबांकी की 1 लाख 75 हजार संख्या की मुस्लिम सेना का भीषण विरोध राजा देवी दीन पाण्डे तथा भीटी के महाराज महेताब सिंह ने 17 दिन तक चले युद्ध में किया और मीरबांकी के लगभग 1 लाख 30 हजार सैनिक मार डाले गए। 1526 से 1530 तक चार वर्ष के बाबर काल में हिन्दुओं ने चार भीषण युद्ध लड़े जिनमें 1 लाख 73 हजार हिन्दू सैनिकों का बलिदान हुआ।

बाबर के बाद हुमायूँ के समय 1530 से 1556 तक 10 आक्रमण हुए जिनका प्रतिरोध राजा रण विजय सिंह एवं रानी जया राजकुमारी तथा स्वामी महेश्वरानन्द के नेतृत्व में किया गया अंत में इनकी प्राणाहुति राम मंदिर के लिए हो गई।

अकबर के समय 20 आक्रमण हुए (सन् 1556 से 1604 ई.)

अकबर ने हिन्दुओं का भीषण प्रतिरोध देखकर एक चबूतरा मस्जिद परिसर के बाहर बनवाकर राम की पूजा को आरंभ कराया।

राम चबूतरे पर राम की पूजा करने सम्बन्धी समझौता अकबर के बाद जहाँगीर (1605-1627 ई.) व शाहजहाँ (1628-1658 ई.) तक यथावत् बना रहा।

औरंगजेब के काल में 30 बार भीषण संघर्ष हुए (1658-1707ई.)

औरंगजेब ने राम चबूतरे को नष्ट करने के लिए दिल्ली से मुगल सेना के 50 हजार सैनिकों को अयोध्या भेजा। संत वैष्णव दास ने गुरु गोविन्द सिंह को आगरा में संदेश भेजा। समाचार पाकर गुरु गोविन्द सिंह आ गए और 50,000 की मुगल सेना को अयोध्या से 35 किमी. पहले ही रुदौली में हिन्दू सेना से पराजित होना पड़ा। दूसरा संग्राम अयोध्या से 10 किमी. पहले सआदतगंज के पास हुआ जिसमें सिख सेना ने मुगल सेना की तोपें छीनकर उन्हीं से मुगल सेना को ध्वस्त कर दिया। आलमगीरनामा में औरंगजेब ने लिखा है कि काफिरों ने 30 हमले किए और शाही फौज हार गई तथा शहजादा मनसबदार हसन अली खान भी इस युद्ध में मारा गया। हिन्दू साधुओं की सेना के शस्त्र और शास्त्र दोनों विजयी रहे। हिन्दू जन समुदाय भी इस संघर्ष में निरंतर सक्रिय रहा।

मुगलकाल से लेकर ब्रिटिश काल तक अयोध्या की रक्षा के लिए 79 बार भीषण संघर्ष हो चुके हें जिनमें 3 लाख से अधिक राम भक्तों का बलिदान हुआ।

इतिहास से शिक्षा लेकर बाबर ने हुमायूँ को लिखा-''तुम कभी धार्मिक पूर्वाग्रह को अपने मन पर हावी मत होने देना और सभी वर्गों की धार्मिक भावनाओं व रीतिरिवाजों को ध्यान में रखकर निष्पक्ष न्याय करना। **विशेष रूप से गोहत्या से दूर रहना। किसी भी समुदाय के पूजा स्थल को नष्ट मत करना।** मैंने धार्मिक पूर्वाग्रह को मन में लाकर उसका दुष्परिणाम देख लिया है, इसलिए तुम वैसा मत करना, अन्यथा स्वयं ही नष्ट हो जाओगे।

विशेष:-उपरोक्त लिखित अयोध्या का इतिहास सम्पूर्ण भारत में मंदिरों के विध्वंस व पुनर्निर्माण का एक प्रत्यक्ष दर्पण है। हजारों मंदिर ध्वस्त करके उनके स्थान पर मस्जिदें और मजारे बनाई गई। अनेक स्थानों पर मंदिरों के पुनर्निर्माण भी होते रहे। इसी संदर्भ में स्वतंत्र भारत के इतिहास में मस्जिदों व मजारों का विध्वंस कर उस स्थान पर पुनः मंदिर निर्माण का स्वर्णिम अध्याय लिखा गया। भारत के उप प्रधानमंत्री व गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा सन् 1025 में ध्वस्त किए गए सोमनाथ मंदिर के स्थान पर बनी सभी मस्जिद व हजारों मजारों को सरदार पटेल ने सरकारी बुलडोजर से ध्वस्त करा दिया और केन्द्र सरकार द्वारा वहाँ पर भव्य सोमनाथ मंदिर की पुन:प्रतिष्ठा कराई गई। भारत सरकार के निर्देशन में 8 मई 1950 को भगवान शिव के वाहन नन्दी की रजत प्रतिमा की स्थापना करके मंदिर निर्माण की प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई। राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा 11 मई 1951 को सोमनाथ मंदिर के गर्भ में शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा की गई एवं राष्ट्रपति जी का ऐतिहासिक प्रेरक भाषण भी इस अवसर पर हुआ। जिस प्रकार सरदार पटेल ने सोमनाथ मंदिर का स्वर्णिम अध्याय लिखा, आशा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी भी उसी प्रकार अयोध्या स्थित श्री रामलला विराजमान करके स्वर्णिम अध्याय लिखने में सफल होंगे। मन्दिर बचेंगे तो हिन्दू बचेंगे। हिन्दू बचेंगे तो मंदिर बचेंगे।

-दिनेश चन्द्र त्यागी

महामंत्री, सांस्कृतिक गौरव संस्थान

यह सूची **Hindu Temples, What Happened to Them,** Volume 1, A Preliminary Survey, By Arun Shourie, Harsh Narain, Jay Dubashi, Ram Swarup, Sita ram Goel, Voice of india , 218, Ansari Road, New Delhi-110 002 के पृष्ठ 88-191 से ली गई है। सूची का हिन्दीकरण किया गया है। सूची का क्रम बदल दिया गया है।

-संपादक

प्रमुख मन्दिरों को तोड़कर बनाई गई मस्जिदों और इमारतों की सूची

कोष्ठकों में ध्वंस/अपमान के संभावित ईस्वी वर्ष दिए हैं

दिल्ली

मेहरौली

01. कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद (1198)।

02. कुतुब मीनार।

03. शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का मकबरा (1235)।

04. शेख कुतुबुद्दीन बख्तयार काकी की दरगाह (1236)।

05. जहाज महल।

06. अलाई दरवाजा।

07. अलाई मीनार।

08. अलाउद्दीन खिलजी का मकबरा और मदरसा।

09. गयासुद्दीन बलबन का मकबरा और मदरसा।

10. शेख फजलुल्लाह का मजार और मस्जिद (जमाली-कमाली)।

11. माढ़ी मस्जिद।

सुल्तान गढ़ी

01. सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश के पुत्र नसीरुद्दीन का मकबरा (1231)।

पालम

01. बाबरी (गजनफर) मस्जिद (1528)।

बेगमपुर

01. मस्जिद।

02. विजयमण्डल।

03. कालू सराय की मस्जिद।

04. शेख नजीबुद्दीन मुतवक्कल चिश्ती की मजार (1272)।

तुगलकाबाद

01. गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा।

चिराग-ए-दिल्ली

01. शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए-दिल्ली की दरगाह (1356)।

02. बहलोल लोदी का मकबरा।

निजामुद्दीन

01. शेख निजामुद्दीन औलिया की दरगाह और जमातखाना (1325)।

02. कलां मस्जिद।

03. चौंसठ खम्भा।

04. खान-ए-जहान तिलंगानी का मकबरा।

05. निजामुद्दीन औलिया का चिल्ला।

06. लाल महल।

हौज खास

01. फिरोज शाह तुगलक का मकबरा और मदरसा।

02. दादी पोती का मकबरा।

03. बिरन का गुम्बद।

04. छोटी और संकरी गुमटी।

05. नीली मस्जिद (1505-06)।

06. ईदगाह (1404)।

07. बाग-ए-आलम का गुम्बद (1501), नूरुद्दीन मुबारक गजनवी का मजार (1234-35)।

मालवीय नगर

01. लाल गुम्बद या शेख कबीरुद्दीन औलिया की मजार (1397)

02. शेख अलाउद्दीन की मजार (1507)।

03. शेख यूसूफ कत्ताल की मजार (1527)।

लोदी गार्डेन्स

01. मुहम्मद शाह का मकबरा।

02. बड़ा गुम्बद मस्जिद (1494)।

03. शीश गुम्बद।

04. सिकन्दर लोदी का मकबरा।

पुराना किला

01. शेरशाह गेट।

02. कला की कुहना मस्जिद।

03. खैरुल मंजिल मस्जिद।

शाहजहानाबाद

01. तुर्कमान गेट पर काली मस्जिद।

02. रजिया सुलतान का मकबरा।

03. भोजल पहाड़ी पर जामी मस्जिद।

04. घटा या जैनतुल मस्जिद।

05. शाह तुर्कमान की दरगाह (1240)।

रामकृष्णपुरम्

01. तीन बुर्जी मकबरा।

02. मलिक मुनीर की मस्जिद।

03. बजीरपुर का गुम्बद।

04. मुण्डा गुम्बद।

05. बड़ा लाओ का गुम्बद।

06. बर्जे का गुम्बद।

वजीराबाद

01. शाह आलम की मजार और मस्जिद।

साउथ एक्सटेंशन

01. काले खान की गुम्बद।

02. भूरे खान की गुम्बद।

03. छोटे खान की गुम्बद।

04. बड़े खान की गुम्बद।

अन्य क्षेत्र

01. कोटला मुबारकपुर में मुबारक शाह का मकबरा।

02. तीनमूर्ति में कुशक महल।

03. सुन्दर नगर का सुन्दर बुर्ज।

04. जामी मस्जिद कोटला फिरोज शाह।

05. तिलक ब्रिज के पास अब्दुन्नबी की मस्जिद।

06. रौशन आरा बेगम का मकबरा।

07. मालचा महल।

08. भूली भठियारी का महल।

09. कदम शरीर।

10. चौबुर्जा मस्जिद।

11. पीर गायब।

राजस्थान

अजमेर जनपद

यह हिन्दू राजधानी थी, जो मुस्लिम महानगरी में परिवर्तित हो गई। निम्नलिखित भवन या तो मंदिर के स्थान पर या मंदिर की भवन सामग्री से बनाए गए हैं।

01. अढ़ाई-दिन-का झोपड़ा (1191)।

02. कलंदर मस्जिद, तारागढ़।

03. गंज-ए-शहीदाँ, तारागढ़।

04. मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह (1236)।

05. चिल्ला-ए-चिश्ती, अन्नासागर झील के पास।

06. सैयद हुसैन की दरगाह और मजार, तारागढ़।

07. जहाँगीरी महल, पुष्कर।

08. शाहजहाँनी मस्जिद (1637)।

09. अन्नासागर बारादरी।

अलवर जनपद

01. मखदूम शाह की मजार, अलवर, मंदिर के स्थान पर।

02. बहरोर

क. कादिर खाँ की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

ख. दरगाह के पास की मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

03. तिजारा

क. भरतरी मजार, मंदिर को परिवर्तित कर।

ख. दरगाह के पास की मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

भरतपुर जनपद

01. बरमबाद, मस्जिद (1652-53), मंदिर के स्थान पर।

02. बारी

क. अरब के पठानों की कब्रिस्तान, मंदिर के स्थान पर।

ख. मस्जिद (1510), मंदिर के स्थान पर।

03. बयाना

क. ऊखा या नोहारा मस्जिद, ऊषा मंदिर को परिवर्तित कर।

ख. काजीपाड़ा मस्जिद (1305), मंदिर भवन सामग्री का प्रयोग करके।

ग. फौजदारी मस्जिद, मंदिर-भवन सामग्री का प्रयोग करके।

घ. सैयद पाड़ा मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

ड. मुफोंकी मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री।

प. खम्भे वाला स्थान, झालर बावली, मंदिर के स्थान पर।

फ. विजयगढ़ किले की तलेती मस्जिद, मंदिर को परिवर्तित कर।

व. झालर बावली के पास वाली ईदगाह, मंदिर के स्थान पर।

भ. अबू कंदहार कब्रिस्तान, मंदिर के स्थान पर।

म. भीतरी बाहरी मोहल्ला की मस्जिद, विष्णु मंदिर भवन सामग्री से।

04. एत्मदा, पीरस्तान, मंदिर के स्थान पर।

05. कमन

क. चौरासी खंभा मस्जिद, काम्यकेश्वर मंदिर को परिवर्तित कर।

ख. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

चित्तौड़गढ़ जनपद

01. घाइबी पीर की मजार और कब्रिस्तान, मंदिर के स्थान पर।

02. कनाती मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

जयपुर जनपद

01. जामी मस्जिद, अम्बर (1569-70) मंदिर के स्थान पर।

02. चन्सु

क. गुर्ग अल शाह की छतरी (1571) मंदिर भवन सामग्री से।

ख. नीलगारों की मस्जिद, मंदिर स्थल पर

03. जामी मस्जिद, दौसा (1688-89) मंदिर के स्थल पर।

04. नरैना

क. जामी मस्जिद (1444) मंदिर भवन सामग्री से।

ख. त्रिपोलिया दरवाजा, मंदिर भवन सामग्री से।

05. साम्भर

क. गंज-ए-शहीदाँ, मंदिर स्थल पर।

ख. ख्वाजा हिसामुद्दीन जिगरसुख्ता की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ग. मोहल्ला नख्खास की मस्जिद (1695-96) मंदिर स्थल पर।

घ. रामबाग की मस्जिद (1696-97) मंदिर स्थल पर।

06. टोर्डी, खारी बावली, मंदिर भवन सामग्री से।

जैसलमेर जनपद

01. फकीरों-का-तकिया, जैसलमेर, मंदिर स्थल पर।

02. मस्जिद पोखरन (1704-05) मंदिर स्थल पर।

जालौर जनपद

01. शाही या तोपखाना मस्जिद (1323) पार्श्वनाथ मंदिर भवन सामग्री से।

02. ईदगाह (1318) मंदिर स्थल पर।

03. बावली वाली मस्जिद (1523) मंदिर स्थल पर।

झालावाड़ जनपद

मस्जिद सुनेल (1466-67) मंदिर स्थल पर।

झुंझुनु जनपद

जामी मस्जिद, नरहद, मंदिर भवन सामग्री से।

जोधपुर जनपद

01. याक-मीनार की मस्जिद (1649) मंदिर स्थल पर।

02. मन्दौर

   क. शाही मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. गुलाम खाँ की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

   ग. तन्नापीर का दरगाह, मंदिर भवन सामग्री से।

03. जामी मस्जिद, पीपर शहर (1658) मंदिर स्थल पर।

कोटा जनपद

01. बरन, मस्जिद मंदिर स्थल पर।

02. बूँदी, मीराँ मस्जिद, शहर के पूर्वी पहाड़ पर मंदिर स्थल पर।

03. गारौन

   क. जामी मस्जिद (1694) मंदिर स्थल पर।

   ख. हजरत हमीदुद्दीन की दरगाह, मिट्ठा-शाह मंदिर स्थल पर।

04. शाहाबाद

   क. शेरशाह सूरी की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. जामी मस्जिद (1671-72), मंदिर स्थल पर।

   ग. रहमी खां दाता की दरगाह (1534-35) मंदिर स्थल पर।

05. शेरशाह सूरी का किला, शेरशाह, ब्रह्मा, बुद्ध और जैन मंदिरों की सामग्री से।

नागौर जनपद

01. मस्जिद, अमरपुर (1655) मंदिर स्थल पर।

02. मस्जिद, बकलिया (1670) मंदिर स्थल पर।

03. मस्जिद, बालापीर मंदिर स्थल पर।

04. बड़ी खाटू

   क. शाही मस्जिद (1200), मंदिर भवन सामग्री से।

ख. कनाती मस्जिद (1301) मंदिर स्थल पर।

ग. पहाड़ियों की मस्जिद और छः शहीद मजारें, मंदिर भवन सामग्री से।

घ. जालियाबास की मस्जिद (1320), मंदिर स्थल पर।

ड. बड़ी और छोटी मस्जिद, सय्यद्‌दन मोहल्ला, मंदिर स्थल पर।

च. खानजादों की मस्जिद (1482) मंदिर स्थल पर।

छ. मुहम्मद कत्ताल की दरगाह और मस्जिद (1333) मंदिर भवन सामग्री से।

ज. धोबियों की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

झ. मस्जिद-ए-संगतराशान (1639), मंदिर स्थल पर।

ण. बाबा ईशाक मघरीबी की दरगाह (1360) मंदिर स्थल पर।

ट. सम्मन शाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ठ. गंज-ए-शहीदाँ, मंदिर स्थल पर।

ड. मोमिनों की मस्जिद (1667) मंदिर स्थल पर।

ढ़. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

05. बाँसी, बड़ी मस्जिद (1252) मंदिर स्थल पर।

06. छोटी खाटू, शाह निजाम बुखारी की दरगाह छोटी खाटू (1670), मंदिर स्थल पर।

07. डिडवाना

क. काजियों की मस्जिद (1252), मंदिर स्थल पर।

ख. गुदड़ी बाजार की मस्जिद (1357), मंदिर स्थल पर।

ग. बंद मस्जिद (1384) मंदिर स्थल पर।

घ. शेखों की मस्जिद (1377) मंदिर स्थल पर।

ड. जामी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

च. कला की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

छ. हवाला मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ज. सैयदों की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

झ. तकिया की मस्जिद (1582-83) मंदिर स्थल पर।

ञ. कचहरी मस्जिद (1638), मंदिर स्थल पर।

ट. धोबियों की मस्जिद (1662), मंदिर स्थल पर।

ठ. जुलाहों की मस्जिद (1664), मंदिर स्थल पर।

ड. लौहारों की मस्जिद (1665), मंदिर स्थल पर।

ढ. बिसातियों की मस्जिद (1675-76) मंदिर स्थल पर।

ण. मोचियों की मस्जिद (1686), मंदिर स्थल पर।

त. शाह चांगी मदारी मस्जिद (1711) मंदिर स्थल पर।

थ. ईदगाह, मंदिर स्थल पर।

द. दिल्ली दरवाजा के पास का कब्रिस्तान मंदिर स्थल पर।

ध. दीन दरवाजा (1681), मंदिर स्थल पर।

न. रशीदुद्दीन शहीद की मजार, मंदिर स्थल पर।

08. मस्जिद कठोती (1569-70), मंदिर स्थल पर।

09. कुम्हारी

क. बाला पीर की दरगाह और मस्जिद (1496-97) मंदिर स्थल पर।

ख. कलन्दरी मस्जिद।

10. लाडनू

क. जामी मस्जिद (1371), मंदिर भवन सामग्री से।

ख. हाजिरवाली या खलजी मस्जिद (1378-79) मंदिर स्थल पर।

ग. शाही मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

घ. दरगाह या उमराव शहीद गाजी (1371) मंदिर स्थल पर।

ङ. उपर्युक्त दरगाह के पास का कब्रिस्तान मंदिर स्थल पर।

च. मजार-ए-मुराद-ए-शहीद, मंदिर स्थल पर।

11. लोहारपुर

क. पीर जहारुद्दीन की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ख. छोटी मस्जिद (1602), मंदिर स्थल पर।

12. मकराना

क. जामी मस्जिद (शेरशाह), मंदिर स्थल पर।

ख. पहर कुनवा के पास की मस्जिद (1653), मंदिर स्थल पर।

ग. गौर बास की मस्जिद (1678), मंदिर स्थल पर

घ. मस्जिद (1643), मंदिर स्थल पर।

13. मेड़ता

क. सलावतन की मस्जिद (1625-26) मंदिर स्थल पर।

ख. गदिमान की मस्जिद (1665), मंदिर स्थल पर।

ग. जामी मस्जिद (1665), मंदिर स्थल पर।

घ. मोचियों की मस्जिद (1663), मंदिर स्थल पर।

ड. धोबियों की मस्जिद (1665), मंदिर स्थल पर।

च. मोमिनों की मस्जिद (1666), मंदिर स्थल पर।

छ. महाराज की जागीर की मस्जिद (1666) मंदिर स्थल पर।

ज. चौक की मस्जिद (1670), मंदिर स्थल पर।

झ. हज्जामों की मस्जिद (1686-87), मंदिर स्थल पर।

ञ. मियांजी की मस्जिद (1690-91), मंदिर स्थल पर।

ट. साबुनगारों की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ठ. गौस पीर की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ड. तकिया कमाल शाह, मंदिर स्थल पर।

14. नागौर

क. पीर जहीरुद्दीन की मजार, मंदिर स्थल पर।

ख. बाबा चन्द्र की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ग. सूफी हमीदुद्दीन नागौरी चिश्ती की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

घ. शेख अब्दुल कादिर जिलानी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ड. मखदू हुसैन नागौरी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

च. अहमद अली बापजी, मंदिर स्थल पर।

छ. सैयद इमाम नूर की दरगाह (1527), मंदिर स्थल पर।

ज. शाह अब्दुस्सलीम की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

झ. मीरान साहिब की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ञ. शम्सी तालाब के निकट शम्स खान मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ट. जामी मस्जिद (1553), मंदिर स्थल पर।

थ. एक मीनार मस्जिद (1506), मंदिर स्थल पर।

द. धोबियों की मस्जिद (1552), मंदिर स्थल पर।

ध. चौक की मस्जिद (1553), मंदिर स्थल पर।

न. महावतों की मस्जिद (1567-68), मंदिर स्थल पर।

प. हमलों की मस्जिद (1599-1600), मंदिर स्थल पर।

फ. सूरजपोल की शाहजहानी मस्जिद, मंदिर को परिवर्तित कर।

ब. किले के बाहर की मस्जिद (1664), मंदिर स्थल पर।

भ. खरादियों की मस्जिद (1665), मंदिर स्थल पर।

म. घोसियों की मस्जिद (1677), मंदिर स्थल पर।

य. माया बाजार के पास वाली मस्जिद (1677) , मंदिर स्थल पर।

र. कलन्दरों की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ल. कनहरी जुलाहों की मस्जिद (1669), मंदिर स्थल पर।

व. सैयदों की मस्जिद (1433-34), मंदिर स्थल पर।

श. अखाड़े वाली मस्जिद (1475), मंदिर स्थल पर।

15. परबतसर, बदरुद्दीन शाह मदार की मजार, मंदिर स्थल पर।

16. रेन, मस्जिद (1685) मंदिर स्थल पर।

17. रोहल, काजियों की मस्जिद (1684), मंदिर स्थल पर।

18. सोजत, मस्जिद (1680-81), मंदिर स्थल पर।

सवाई माधोपुर जनपद

01. गढ़, कला की मस्जिद (1546-47), मंदिर स्थल पर।

02. हिन्दुअन

क. रंगरेजों की मस्जिद (1439), मंदिर स्थल पर।

ख. ख्वाजा, अजी की मस्जिद, तकिया, मंदिर स्थल पर।

ग. कचहरी मस्जिद (1659-60), मंदिर स्थल पर।

घ. बारा खमा मस्जिद (1665), मंदिर स्थल पर।

ड. तालाब के पूर्व का कब्रिस्तान, मंदिर स्थल पर।

च. रसूल शाह की मजार और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

03. रणथम्भौर, कला की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

सीकर जनपद

रेवासा, मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

टोंक जनपद

नगर, इशारवान बावली, मंदिर स्थल पर।

उदयपुर जनपद

मण्डलगढ़, अलाई मस्जिद, जैन मंदिर को परिवर्तित करके।

हरियाणा

अम्बाला जनपद

01. पिंजोर

फिदाई खान के बागीचे की दीवारें और इमारतें, मंदिर भवन सामग्री से।

02. संथौरा

क. खिलजी के समय की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

ख. जहाँगीर के राज्य में बनी दो मस्जिदें, मंदिर भवन सामग्री से।

ग. काजियों की मस्जिद (1640), मंदिर स्थल पर।

घ. अब्दुल बहाव की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ड. शाह कुमैस की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

फरीदाबाद जनपद

01. जामा मस्जिद, फरीदाबाद (1605), मंदिर स्थल पर।

02. मस्जिद नुह (1392-95) मंदिर भवन सामग्री से।

03. पलवल

क. इकरामवाली या जामी मस्जिद (1221) मंदिर भवन सामग्री से।

ख. ईदगाह (1211) मंदिर भवन सामग्री से।

ग. सैयद चिराग की मजार, मंदिर स्थल पर।

घ. गाजी शाहबुद्दीन की मजार, मंदिर स्थल पर।

ड. सैयद वारह की मजार, मंदिर स्थल पर।

गुड़गाँव (गुरुग्राम) जनपद

01. मस्जिद, बवल (1560), मंदिर स्थल पर।

02. फारूखनगर, जामा मस्जिद (1276), मंदिर स्थल पर।

03. सोहना

क. मस्जिद (1561), मंदिर स्थल पर।

ख. काला और लाल गुम्बद की मजार, मंदिर स्थल पर।

हिसार जनपद

01. बारवाला मस्जिद (1289), मंदिर स्थल पर।

02. फतेहाबाद

क. तुगलक समय की ईदगाह, मंदिर भवन सामग्री से।

ख. हुमायूँ द्वारा बनाई मस्जिद (1539), मंदिर स्थल पर।

03. हाँसी

क. शम्सुद्दीन इल्तुतमिश के राज्य में बनी ईदगाह, मंदिर स्थल पर।

ख. बू अली बख्श मस्जिद (1226), मंदिर स्थल पर।

ग. आदिना मस्जिद (1336), मंदिर स्थल पर।

घ. किले की मस्जिद (1192), मंदिर स्थल पर।

ङ. शहीद गंज मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

च. हुमायूँ की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

छ. नियामतुल्ला वली की दरगाह और समीपवर्ती बारादरी, मंदिर भवन सामग्री से।

ज. बू अली कलन्दर की दरगाह (1246), मंदिर स्थल पर।

झ. शेख जलालुद्दीन हक की दरगाह (1303), मंदिर स्थल पर।

ञ. मुहम्मद जमील शाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ट. विलायत शाह शहीद की दरगाह (1314), मंदिर स्थल पर।

ठ. चहार कुतुब और इसकी जामी मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

04. हिसार

क. लाट की मस्जिद, मंदिर स्थल सामग्री से।

ख. हुमायूँ की जामी मस्जिद (1536), मंदिर स्थल पर।

ग. बहलोल लोदी की मजार और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

घ. दिल्ली गेट के बाहर हुमायूँ की मस्जिद (1533), मंदिर स्थल पर।

ङ. बाबा प्राण पीर पादशाह, मंदिर भवन सामग्री से।

च. फिरोज शाह तुगलक का किला, मंदिर भवन सामग्री से।

छ. जहाज महल, जैन मंदिर को परिवर्तित करके।

ज. गूजरी महल, मंदिर भवन सामग्री से।

05. सिरसा

क. मस्जिद में इमाम नासिर की मजार (1277) मंदिर भवन सामग्री से।

ख. सराय वाल बाबरी मस्जिद (1530), मंदिर स्थल पर।

ग. काजीजादा की मस्जिद (1540), मंदिर स्थल पर।

करनाल जनपद

01. कैथल

क. शेख सलाहुद्दीन अबुल मुहम्मद की दरगाह (1246) मंदिर भवन सामग्री से।

ख. शाह विलायत की मस्जिद (1657-58), मंदिर स्थल पर।

ग. जामी मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

घ. मदरसा, मंदिर भवन सामग्री से।

02. कुरुक्षेत्र

क. टीले वाली मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

03. थानेसर

क. शेख चिल्ली या चेहाली बेनूरी की दरगाह और मदरसा, मंदिर स्थल पर।

ख. हर्ष का टीला के निकट पथरिया मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

ग. चीनी वाली मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

महेन्द्रगढ़ जनपद

नारनौल

क. पीर जर्क शहीद या शाह विलायत की मजार (1137), मंदिर स्थल पर।

रोहतक जनपद

01. झज्जर

क. काली मस्जिद (1397), मंदिर स्थल पर महम।

02. महम

क. पीरजादों की मस्जिद (बाबर के राज्य में बनी) (1529), मंदिर स्थल पर।

ख. हुमायूँ की जामा मस्जिद (1531), मंदिर स्थल पर।

ग. कसाईयों की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

घ. मस्जिद (1669), मंदिर स्थल पर।

ङ. दौलत खाँ की मस्जिद (1696) मंदिर स्थल पर।

03. रोहतक

क. दीनी मस्जिद (1309), मंदिर भवन सामग्री से।

ख. किले की मस्जिद (1324), मंदिर स्थल पर।

ग. बाबर की मस्जिद-ए-खुर्द (1527-28), मंदिर स्थल पर।

घ. बाबर वाली राजपूतों की मस्जिद (1528), मंदिर स्थल पर।

ङ. किले की हुमायूँ की मस्जिद (1538),मंदिर स्थल पर।

च. गोकरन की मस्जिद (1558), मंदिर स्थल पर।

छ. डोगरों वाली मस्जिद (1571), मंदिर स्थल पर।

ज. मस्त खान की मस्जिद (1558-59), मंदिर स्थल पर।

सोनीपत जनपद

01. गोहाना

क. शाह जियाउद्दीन मुहम्मद की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

02. सोनीपत

क. इमाम नासिर की मजार और मस्जिद (1277), मंदिर स्थल पर।

ख. बाबर वाली शेखजादों की मस्जिद (1530), मंदिर स्थल पर।

ग. ख्वाजा शिज्र की मजार, मंदिर स्थल पर।

घ. हुमायूँ की मस्जिद (1538), मंदिर स्थल पर।

हिमाचल प्रदेश

काँगड़ा

क. जहाँगीरी गेट, मंदिर भवन सामग्री से।

उत्तर प्रदेश

आगरा

01. आगरा

क. कलान मस्जिद, सबन कटरा (1521) मंदिर भवन सामग्री से।

ख. हुमायूँ की मस्जिद, कछपुरा (1537-38), मंदिर स्थल पर।

ग. जहाँआरा की जामा मस्जिद (1644), मंदिर स्थल पर।

घ. कलाम खान शहीद की दरगाह, देहरा बाग, मंदिर भवन सामग्री से।

ङ. अकबर के किले का नदी के किनारे वाला भाग, जैन मंदिर स्थल पर।

च. चीनी का रौजा, मंदिर स्थल पर।

02. बिसौली मस्जिद (1667-68), मंदिर स्थल पर।

03. फतेहपुर सीकरी

क. अंबिया वाली मस्जिद और कुछ अन्य, मंदिरों को परिवर्तित करके।

ख. जामा मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

ग. शेख सलीम चिश्ती की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

घ. फतेहपुर सीकरी परिसर, कुछ मंदिरों के स्थल पर।

04. फिरोजाबाद, कदीम मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

05. जजऊ मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

06. रसूलपुर, मकदूमशाह की मजार, मंदिर स्थल पर।

07. सिकन्दरा

क. अकबर का मकबरा, मंदिर स्थल पर।

ख. मिशन कम्पाउण्ड की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

अलीगढ़ जनपद

01. अलीगढ़

क. ईदगाह (1562-63), मंदिर स्थल पर।

ख. शेख जलालुद्दीन चिश्ती शम्सुल आरफीन की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ग. कब्रिस्तान, मंदिर स्थल पर।

घ. शेरशाही मस्जिद (1542), मंदिर स्थल पर।

ड. मस्जिद (1676), मंदिर स्थल पर।

2. पिलखना, बाबरी या जामी मस्जिद (1528-29) मंदिर भवन सामग्री से।

3. सिकन्दरा राव, जामी मस्जिद (1585), मंदिर स्थल पर।

इलाहाबाद (प्रयागराज) जनपद

1. इलाहाबाद

क. अकबर का किला, मंदिर स्थल पर।

ख. खुसरो बाग, मंदिर स्थल पर।

ग. शाह अजमल खान की दरगाह और कब्रिस्तान, मंदिर स्थल पर।

घ. मस्जिद (1641-42), मंदिर स्थल पर।

ड. गुलाबी बाड़ी, जामी मस्जिद (1384), मंदिर स्थल पर।

2. कोह इनाम, जामा मस्जिद (1384), मंदिर स्थल पर।

3. मऊ आइमा, कदीम मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

4. शाहबाजपुर, मस्जिद (1644-45), मंदिर स्थल पर।

आजमगढ़ जनपद

1. दोहरीघाट, कलान मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
2. गांजाहार, मस्जिद (1687-88), मंदिर स्थल पर।
3. मेहनगर, दौलत या अभियान का गुम्बद, मंदिर स्थल पर।
4. निजामाबाद
   क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
   ख. मियाँ मकबूल और हुसैन खान शहीद खान की मजार (1562), मंदिर स्थल पर।
5. कस्बा, हुमायूँ की जामा मस्जिद (1533-34), मंदिर स्थल पर।

बदायूँ जनपद

1. अलापुर, आलमगीरी, मंदिर भवन सामग्री से।
2. बदायूँ
   क. शम्सी या जामा मस्जिद (1233), मंदिर स्थल पर।
   ख. शम्सी ईदगाह (1299), मंदिर भवन सामग्री से।
   ग. हौज-ए-शम्सी (1203), मंदिर भवन सामग्री से।
   घ. शाह विलायत की दरगाह (1390), मंदिर स्थल पर।
   ड. कुछ अन्य मस्जिदें और मजारें, मंदिर स्थल पर।
3. सहसवान, जामा मस्जिद (1300), मंदिर स्थल पर।
4. उझारी, अब्दुल्ला खान की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

बहराइच जनपद

सलार मसूद गाजी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

बलिया जनपद

खारिद

क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. रुकनुद्दीन शाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

बाँदा जनपद

1. औगासी, मस्जिद (1581-82), मंदिर स्थल पर।
2. बसौदा मस्जिद (1692), मंदिर स्थल पर।
3. कलिंजर

   क. पत्थर मल्लाह की मस्जिद (1412-13), लक्ष्मी नारायण मंदिर को परिवर्तित करके।

   ख. मस्जिद (1660-61), मंदिर स्थल पर।

   ग. कुछ अन्य मस्जिदें और मजारें, मंदिर स्थल पर।
4. सोरों, शेख जमाल की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

बाराबंकी जनपद

1. बदोसराय, मलामत शाह की मजार, मंदिर स्थल पर।
2. देवा

   क. हाजी वारिस अली शाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   ख. मस्जिद (1665) मंदिर स्थल पर।
3. फतेहपुर

   क. मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. इमामबाड़ा, मंदिर स्थल पर।
4. रुदौली

   क. मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. शाह अहमद और जोहरा बीबी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।
5. रौजा गांव, दाऊद शाह का रौजा, मंदिर स्थल पर।
6. सराय अकबराबाद, मस्जिद (1579-80), मंदिर स्थल पर।
7. सत्रिख, सालार साह गाजी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

बरेली जनपद

1. आँवला

   क. बेगम मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. अली मोहम्मद रोहिल्ला का मकबरा, मंदिर स्थल पर।

2. बरेली, मर्जाई मस्जिद (1579-80), मंदिर स्थल पर।
3. फरीदपुर, शेखफरीद द्वारा बनवाया गया किला, मंदिर भवन सामग्री से।

बिजनौर जनपद

1. बरमीह खेड़ा, मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।
2. जहानाबाद, नवाब शुजात खान का मकबरा, मंदिर स्थल पर।
3. किरतपुर, कला और अंदर की मस्जिद, मंदिर भवन की सामग्री।
4. मंडावर, जामा मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।
5. नजीबाबाद, पत्थरगढ़ किला, मंदिर भवन सामग्री से।
6. नहटौर मस्जिद।
7. सिवहारा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

बुलन्दशहर जनपद

1. औरंगाबाद सैयद, सभी मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर बनी हैं।
2. बुलन्दशहर

   क. दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   ख. किला कई मंदिरों की सामग्री से।

   ग. ईदगाह, मंदिर स्थल पर।

   घ. मस्जिद (1311), मंदिर स्थल पर।

   ड. मस्जिद (1538), मंदिर स्थल पर।

   च. मस्जिद (1557), मंदिर स्थल पर।

3. खुर्जा, मकदूम साहिब की मजार, मंदिर स्थल पर।

4. शिकारपुर, सिकन्दर लोदी के साम्राज्य में बनी मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।

5. सिकन्दराबाद, सिकन्दर लोदी के साम्राज्य में बनी मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।

एटा जनपद

1. अतरंजीखेड़ा, हजरत हुसैन की मजार, मंदिर स्थल पर।
2. जलेसर
   क. मीरान सैयद इब्राहिम की मजार (1555), मंदिर स्थल पर।
   ख. किला, मंदिर भवन सामग्री से।
3. कासगंज, जामी मस्जिद (1737-38), मंदिर स्थल पर।
4. मरहरा, मस्जिद और मजार, मंदिर स्थल पर।
5. सकित
   क. कदम मस्जिद (1285), मंदिर भवन सामग्री से।
   ख. अकबरी मस्जिद (1563), मंदिर स्थल पर।

इटावा जनपद

1. ओरैया, दो मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।
2. इटावा, जामी मस्जिद, मंदिर को परिवर्तित कर।
3. फफूँद, शाह बुखारी की मजार और मस्जिद (1549), मंदिर स्थल पर।

फर्रुखाबाद जनपद

1. फर्रुखाबाद, कुछ मस्जिदें, मंदिर भवन सामग्री से।
2. कन्नौज
   क. दीना या जामा मस्जिद (1406), सीता की रसोई, मंदिर भवन सामग्री से।
   ख. मकदूम जहानिया की दरगाह, मंदिर भवन सामग्री से।
   ग. बाबा हाजीपीर की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

घ. मस्जिद (1663-64), मंदिर स्थल पर।

ड. बाला पीर की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

3. राजगिरहार, शेख अरबी जमशेद की मजार, मंदिर स्थल पर।

4. शम्साबाद, सभी मस्जिदें और मजारें, मंदिर स्थल पर।

फतेहपुर जनपद

1. हसवा, ईदगाह (1650-51), मंदिर स्थल पर।

2. हथगाँव

   क. जयचंदी मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. बुढ़ानशहदी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

3. कोड़ा (जहानाबाद)

   क. ख्वाजा कर्रक की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   ख. जामा मस्जिद (1688-89) मंदिर स्थल पर।

4. कोट, लाडिन की मस्जिद (1198-99 में निर्मित, 1296 में पुर्ननिर्मित) मंदिर स्थल पर।

फैजाबाद (अयोध्या) जनपद

1. अकबरपुर

   क. कला की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. मस्जिद (1660-61), मंदिर स्थल पर।

2. अयोध्या

   क. बाबरी मस्जिद, राम जन्मभूमि मंदिर स्थल पर (अब नहीं)।

   ख. औरंगजेब द्वारा बनवाई गई मस्जिद, स्वर्गद्वार मंदिर स्थल पर।

   ग. औरंगजेब द्वारा बनवाई गई मस्जिद, त्रेता का ठाकुर मंदिर स्थल पर।

   घ. शाह जुरान गौरी की मजार, मंदिर स्थल पर।

   ड. मणिपर्वत के निकट सीर पैगम्बर और अयूब पैगम्बर की मजारें, बुद्ध मंदिर के स्थान पर, जहाँ बुद्ध के चरण चिह्न अंकित थे।

3. फैजाबाद, इमामबाड़ा, मंदिर स्थल पर।

4. हटिला, गाजी की मजार, अशोकनाथ महादेव मंदिर स्थल पर।

5. किछौछा, रसूलपुर के निकट मकदूम अशरफ की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

गाजीपुर जनपद

1. भिटरी

   क. मस्जिद और मजार, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. ईदगाह, मंदिर स्थल पर।

   ग. ईदगाह के नीचे का पुल, बुद्ध मंदिर की सामग्री का प्रयोग करके।

2. गाजीपुर

   क. मजार और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. चहल सितून महल, मंदिर स्थल पर।

3. हिंगटन

   क. कला की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

4. खगरोल, बारा खम्भा या शेख अंबर की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

5. सैदपुर, दो दरगाहें, बुद्ध मंदिरों को परिवर्तित करके।

गोण्डा जनपद

1. सहेत-महेत (श्रावस्ती)

   क. मकबरा, शोभनाथ जैन मंदिर के स्थान पर।

   ख. मीरान सैयद की मजार, बुद्ध विहार के स्थान पर।

   ग. इमली दरवाजा, मंदिर भवन सामग्री से।

   घ. कर्बला दरवाजा, मंदिर भवन सामग्री से।

गोरखपुर जनपद

1. गोरखपुर, इमामबाड़ा, मंदिर स्थल पर।

2. लार, कुछ मस्जिदें, मंदिर स्थल पर।

3. पाव, कर्बला, बुद्ध स्तूप के स्थान पर।

हमीरपुर जनपद

1. महोबा

   क. किले के भैंसा दरवाजा के बाहर की मस्जिद (1322) मंदिर को परिवर्तित करके।

   ख. परमादिदेव के महल पर की मस्जिद (पहाड़ी पर) मंदिर भवन सामग्री से।

   ग. दो मकबरे, मंदिर भवन सामग्री से।

   घ. पीर मुहम्मद शाह की दरगाह, शिव मंदिर को परिवर्तित करके।

   ङ. मुबारक शाह की दरगाह और निकटवर्ती कब्रिस्तान, ध्वस्त मंदिर के 310 स्तम्भों का प्रयोग करके।

2. राठ, दो मकबरें, मंदिर भवन सामग्री से।

हरदोई जनपद

1. बिलग्राम

   क. सैयदों की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. जामा मस्जिद (1438), मंदिर भवन सामग्री से।

   ग. कुछ अन्य मस्जिदें और दरगाहें, मंदिर भवन सामग्री से।

2. गोपामऊ, कुछ मस्जिदें, मंदिर स्थानों पर।

3. पिहानी

   क. अब्दुल गफूर की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. सद्र-ए-जहान की दरगाह (1647-48), मंदिर स्थल पर।

4. सण्डीला

   क. कदीम मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. बारह खम्भा की मजार, मंदिर स्थल पर।

जालौन जनपद

1. कालपी

   क. चौरासी गुम्बद, कई मंदिर स्थलों पर।

   ख. शाह अब्दुल फैथ अलाई कुरैशी की दरगाह (1449), मंदिर स्थल पर।

   ग. शाह बाबू हाजी समद की दरगाह (1529), मंदिर स्थल पर।

   घ. ड्योढ़ी या जामा मस्जिद (1554), मंदिर स्थल पर।

2. कटरा, मस्जिद (1649), मंदिर स्थल पर।

जौनपुर जनपद

   क. अटाला मस्जिद (1408) अटाला देवी मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. दरीबा मस्जिद, विजयचन्द्र के मंदिर की भवन सामग्री से।

   ग. झांझरी मस्जिद, जयचन्द्र के मंदिर की भवन सामग्री से।

   घ. लाल दरवाजा मस्जिद, विश्वेश्वर मंदिर (वाराणसी) की भवन सामग्री से।

   ड. हम्माम दरवाजा मस्जिद (1567-68), मंदिर भवन सामग्री से।

   च. इब्राहिम बारबाक की मस्जिद (किले के भीतर) (1360) मंदिर भवन सामग्री से।

   छ. जामा मस्जिद, पाताल देवी मंदिर के स्थान पर।

   ज. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

   झ. गोमती पर अकबरी पुल, मंदिर भवन सामग्री से।

   ञ. खालिस मुखलिस या चार अंगुलि मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ट. खान जहाँ की मस्जिद (1364), मंदिर स्थल पर।

   ठ. शाह फिरोज का रौजा, मंदिर स्थल पर।

2. मछली शहर

   क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. कर्बला, मंदिर स्थल पर।

ग. सोलह दूसरी मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।

3. शाहगंज, शाह हजरत अली की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

4. जाफराबाद

   क. मकदूम शाह की दरगाह और मस्जिद (1311 या 1321) मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. इब्राहिम बरबक की मस्जिद, मंदिर को परिवर्तित करके।

   ग. जफर खान की मस्जिद (1397), मंदिर को परिवर्तित करके।

   घ. गंज-ए-शहीदाँ, मंदिर भवन सामग्री से।

   ड. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

   च. शर्की इमारतें और कई मकबरे, मंदिर भवन सामग्री से।

   छ. असरुद्दीन की दरगाह, मंदिर भवन सामग्री से।

झांसी जनपद

1. एरच, जामी मस्जिद (1412) मंदिर भवन सामग्री से।

2. ललितपुर बासा मस्जिद (1358) चार मंदिरों की भवन सामग्री से।

3. तालबेहट

   क. मस्जिद (1405) मंदिर स्थल पर।

   ख. पीन ताजबाज की दरगाह, मंदिर भवन स्थल पर।

कानुपर जनपद

1. जाजमऊ

   क. अलाउद्दीन मकदूम शाह की दरगाह (1360) मंदिर स्थल पर।

   ख. ईदगाह (1307) मंदिर स्थल पर।

   ग. कला की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   घ. जामा मस्जिद (पुनर्निर्मित सन् 1682 में), मंदिर स्थल पर।

2. माकनपुर, शाह मदार की मजार, मंदिर को परिवर्तित करके।

लखनऊ जनपद

1. काकोरी, मकदूम निजामुद्दीन की झांझरी रौजा, मंदिर भवन सामग्री से।
2. लखनऊ

   क. टीलेवाली मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

   ख. आसफुद्दौला इमामबाड़ा, मंदिर के स्थान पर।

   ग. शाह मोहम्मद पीर की दरगाह, लक्ष्मण टीला, मंदिर स्थल पर।

   घ. शेख इब्राहिम चिश्ती रहमतुल्ला की मजार, मंदिर भवन सामग्री से।

   ङ. शेख अब्दुर्रहीम का मकबरा (नादान महल), मंदिर स्थल पर।

   च. मच्छी भवन, मंदिर स्थल पर।
3. मूसानगर, मस्जिद (1662-63), मंदिर स्थल पर।
4. नीमसार, किला, मंदिर भवन सामग्री से।
5. रसूलपुर, मस्जिद (1690-91), मंदिर स्थल पर।

मैनपुरी जनपद

रपड़ी

क. जामी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. ईदगाह (1312), मंदिर स्थल पर।

ग. पीर फद्दू की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

मथुरा जनपद

1. महाबन, अस्सी खम्भा मस्जिद, मंदिर को परिवर्तित करके।
2. मथुरा

   क. ईदगाह, कटरा माउण्ड, केशवदेव मंदिर के स्थान पर।

   ख. अब्दुलनबी द्वारा निर्मित जामा मस्जिद (1662) मंदिर भवन सामग्री से।

   ग. शेख फरीद की मजार, मंदिर भवन सामग्री से।

घ. समीघाट पर मकदूम शाह विलायत की मजार, मंदिर भवन सामग्री से।

3. नैझील, मकदूम शेख सहेती की दरगाह, मंदिर भवन सामग्री से।

मेरठ जनपद

1. बरनावा, हुमायूँ की मस्जिद (1538-39), मंदिर स्थल पर।
2. गढ़मुक्तेश्वर, मस्जिद (1283), मंदिर स्थल पर।
3. हापुड़, जामा मस्जिद (1670-71), मंदिर स्थल पर।
4. जलाली, जामा मस्जिद (1266-67), मंदिर सामग्री का उपयोग।
5. मेरठ

   क. जामा मस्जिद, बुद्ध विहार के अवशेषों पर।

   ख. नौचन्दी की दरगाह, नौचन्दी देवी मंदिर स्थल पर।
6. फलौन्दा, कुतुब शाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

मिर्जापुर जनपद

1. भुली, दक्षिण टोला के मस्जिद, मंदिर स्थली पर।
2. चुनार

   क. शाह कासिम सुलेमान की मजार, मंदिर स्थल पर।

   ख. किला, मंदिर भवन सामग्री से।
3. मिर्जापुर, अनेक मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।

मुरादाबाद जनपद

1. अमरोहा

   क. जामा मस्जिद, मंदिर को तोड़कर।

   ख. शेख सद्धू की मस्जिद और दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   ग. शेख विलायत की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   घ. मस्जिद (1557-58), मंदिर स्थल पर।

   ड. कई अन्य मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।

2. आजमपुर, मस्जिद (1555-56), मंदिर स्थल पर।

3. बछरायूँ, कई मस्जिदें, मंदिर स्थल पर।

4. मुरादाबाद, जामा मस्जिद (1630), मंदिर स्थल पर।

5. मुगलपुरा व अगवानपुर मस्जिद (1695-96), मंदिर स्थल पर।

6. सिरसी, कदीमी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

7. उझारी, शेख दाऊद की मजार।

8. संभल

   क. जामा मस्जिद, विष्णु मंदिर को तोड़कर।

   ख. सराय तरीम (1503) की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ग. मियॉ हातिम संभाली की मजार, मंदिर स्थल पर।

   घ. शेख पंजू की मजार, मंदिर स्थल पर।

मुजफ्फरनगर जनपद

1. देरा दीन पनाह, सईद दीन पनाह की मजार, मंदिर स्थल पर।

2. गाऊसगाह, कला और मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

3. झिंझाना

   क. दरगाह (1495) मंदिर स्थल पर।

   ख. शाह अब्दुल रजाक की मजार और मस्जिद (1623) मंदिर स्थल पर।

4. कैराना

   क. दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   ख. मस्जिद (1551) मंदिर स्थल पर।

   ग. मस्जिद (1553-54) मंदिर स्थल पर।

   घ. मस्जिद (1617-18) मंदिर स्थल पर।

   ड. मस्जिद (1630-31) मंदिर स्थल पर।

   च. मस्जिद (1651-52) मंदिर स्थल पर।

5. मजहेरा मस्जिद और उमर नूर की मजार, मंदिर स्थल पर।

6. संभलहेरा, दो मस्जिदें (1631-32) मंदिर स्थल पर।

7. थाना भवन, मस्जिद (1702-03) मंदिर स्थल पर।

पीलीभीत जनपद

जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

प्रतापगढ़ जनपद

मानिकपुर

कई मस्जिदें और मजार, मंदिरों को तोड़कर।

रामपुर जनपद

जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

रायबरेली जनपद

1. डलमऊ

    क. ईदगाह (1357-58) मंदिर स्थल पर।

    ख. किला, बुद्ध स्तूपों के अवशेषों पर।

    ग. मस्जिद (1616) मंदिर स्थल पर।

2. जायस

    क. जामा मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

    ख. मस्जिद (1674-75) मंदिर स्थल पर।

3. रायबरेली

    क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

    ख. जहान खान मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

    ग. मकदूम सईद जाफरी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

    घ. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

सहारनपुर जनपद

1. अंबेहटा

क. मस्जिद (1533-34) मंदिर स्थल पर।

ख. मस्जिद (1534-35) मंदिर स्थल पर।

2. देवबंद

क. मस्जिद (1510) मंदिर स्थल पर।

ख. मस्जिद (1557) मंदिर स्थल पर।

ग. जामा मस्जिद (1667-68) मंदिर स्थल पर।

3. गंगोह

क. शेख अब्दुल कुदूस की मजार, मंदिर स्थल पर।

ख. तीन मस्जिदें, मंदिर स्थल पर।

4. जैरासी मस्जिद (1675-76) मंदिर स्थल पर।

5. कलियर (पिरान कलियर)

क. पाक पत्तन के बाबा फरीद शकार गंज के शिष्य शेख अलाउद्दीन अली बिन अहमद साबरी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

6. मंगलौर

क. मस्जिद (1285) मंदिर स्थल पर।

ख. शाह विलायत की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

7. रामपुर (मनिहारान) शेख इब्राहिम की मजार, मंदिर स्थल पर।

8. सहारनपुर जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

9. सकरौदा, शाह नच्चान या शाह रुकनुद्दीन की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

10. सरसावा, किलकिली शाह की मजार, मंदिर विध्वंसों में सर्वोच्च।

शाहजहाँपुर जनपद

1. कुर्सी, मस्जिद (1652) मंदिर स्थल पर।

2. शाहजहाँपुर बहादुर खान की मस्जिद (1647) मंदिर स्थल पर।

सीतापुर जनपद

1. बिसवाँ मस्जिद (1637-38) मंदिर स्थल पर।
2. खैराबाद, कई मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।
3. लहरपुर, शेख अब्दुल रहमान की मजार, मंदिर स्थल पर।

सुल्तानपुर जनपद

1. अमेठी

   शेख अब्दुल हसन की मजार, मंदिर स्थल पर।
2. इसुली

   क. जामा मस्जिद (1646-47), मंदिर स्थल पर।

   ख. सईद अशरफ जहाँगीर सिमनानी की मजार, मंदिर स्थल पर।

उन्नाव जनपद

1. बाँगरमऊ

   क. अलाउद्दीन धनाँऊ की बड़ी दरगाह (1320) मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. जलालुद्दीन की दरगाह (1302), मंदिर स्थल पर।

   ग. छोटी दरगाह (1374), मंदिर स्थल पर।

   घ. जामा मस्जिद (1384), मंदिर स्थल पर।
2. रसूलाबाद, आलमगिरी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
3. सफीपुर

   क. शाह शफी की दरगाह, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. कुदरतुल्लाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   ग. फहीमुल्लाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   घ. हफीजुल्लाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   ड. अब्दुल्लाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   च. 14 मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।

वाराणसी जनपद

1. असला, शाहजहानी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
2. वाराणसी

   क. ज्ञानवापी की मस्जिद, विश्वेश्वर मंदिर, भवन सामग्री से।

   ख. पंचगंगा घाट की मस्जिद, किरीट विश्वेश्वर मंदिर भवन सामग्री से।

   ग. मस्जिद और सैयद फखरुद्दीन साहब अलवी की दरगाह (1575), मंदिर स्थल पर।

   घ. बिन्दुमाधव मस्जिद (1669) बिन्दुमाधव मंदिर को तोड़कर।

   ड. बकरिया कुण्ड में मंदिर और मजार, मंदिर भवन सामग्री से।

   च. आदमपुर की अढ़ाई कंगूरा की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   छ. दरहारा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ज. लाल खान की मजार, राजघाट पर, मंदिर स्थल पर।

बिहार

भागलपुर जनपद

1. भागलपुर

   क. हजरत शाहबाज की दरगाह (1502), मंदिर के स्थान पर।

   ख. मुजाहिदपुर की मस्जिद (1511-15), मंदिर के स्थान पर।

   ग. मखदूमशाह की दरगाह (1615), मंदिर के स्थान पर।
2. चम्पानगर

   क. कई मजारें, जैन मंदिरों के स्थान पर।

   ख. मस्जिद (1492) जैन मंदिर के स्थान पर।
3. सुल्तानगंज

   नदी के किनारे चट्टान पर निर्मित मस्जिद, मंदिर स्थान पर।

गया जनपद

1. अमठुआ मस्जिद (1536), मंदिर के स्थान पर।

2. गया नादिरगंज में शाही मस्जिद (1617), मंदिर के स्थान पर।

3. काको बीबी कमालो की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

मुंगेर जनपद

1. अमोलझारी–मुसलमानों का कब्रिस्तान, विष्णु मंदिर के स्थान पर।

2. चारुऑवन मस्जिद (1576), मंदिर के स्थान पर।

3. खड़्गपुर

   क. मस्जिद (1656–57), मंदिर के स्थान पर।

   ख. मस्जिद (1695–96), मंदिर के स्थान पर।

4. मुंगेर

   क. किले के दरवाजे, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. शाह नफा चिश्ती की दरगाह (1497–98), मंदिर के स्थान पर।

मुजफ्फरपुर जनपद

1. झुरहा– मामू भांजा की मजार, मंदिर भवन सामग्री से।

नालन्दा जनपद

1. बिहार शरीफ– यह मुस्लिम राजधानी उदण्डपुरा को नष्ट करके बनाई गई, जहाँ पर एक प्रसिद्ध बौद्ध विहार था। अधिकांश मुस्लिम स्मारक या तो मंदिर के स्थान पर या मंदिर भवन सामग्री से बनाए गए हैं। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं–

   क. मख्दमुल मुल्क शरफुद्दीन की दरगाह (1380)।

   ख. बड़ी दरगाह।

   ग. छोटी दरगाह।

   घ. बारादरी।

   ड. शाह फजलुल्लाह गोसाई की दरगाह।

   च. पीर पहाड़ी पर मलिक इब्राहिम बच्चू की मजार।

   छ. कबीरूद्दीन की मस्जिद (1353)।

ज. सैयद मुहम्मद सिबिस्तानी की मजार।

झ. छोटी तकिया में रखी हुई शाह दीवान अब्दुल वहाब की मजार।

ञ. शाह कुमाइस (1359-60) की दरगाह

ट. चाँदपुर मोहल्ला में मस्जिद।

ठ. पहाड़पुर मोहल्ला में जामा मस्जिद।

2. परबती-हाजी चन्दर या चाँद सौदागर की दरगाह, मंदिर भवन सामग्री से।

पटना जनपद

1. हिलसा

   क. शाह जुम्मन मदारिया की दरगाह (1543), पुनर्निर्मित मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. मस्जिद (1604-05), मंदिर के स्थान पर।

2. जाना-जामा मस्जिद (1539), मंदिर के स्थान पर।

3. कैलवॉ-दरगाह और मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

4. मानेर-समस्त मुस्लिम स्मारक मंदिर के स्थान पर बनाए गए हैं उनमें कुछ निम्नलिखित हैं-

   क. सुल्तान उल मखदूम शाह याहया मानेरी की बड़ी दरगाह।

   ख. मखदूम दौलत शाह की दरगाह।

   ग. जामा मस्जिद।

   घ. हाजी निजामुद्दीन की मजार।

5. मुहम्मदपुर जामा मस्जिद (1510-11), मंदिर के स्थान पर।

6. पटना

   क. पत्थर की मस्जिद (1626), मंदिर के स्थान पर।

   ख. बेगू हज्जाम की मस्जिद (1510-11), मंदिर भवन सामग्री से।

   ग. किलादारी के बाहर मुस्लिम कब्रिस्तान, बौद्ध विहार से निर्मित।

घ. शाह मीर मन्सूर की दरगाह, बौद्ध स्तूप से निर्मित।

ङ. शाह अरजानी की दरगाह, बौद्ध स्तूप के स्थान पर।

च. पीर डमरिया की दरगाह, बौद्ध विहार के स्थान पर।

छ. मिर्जा-मासू की मस्जिद (1605), मंदिर भवन सामग्री से।

ज. मीटनघाट की मस्जिद (1605), मंदिर के स्थान पर।

झ. शाइस्ता खाँ की कटरा मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

ञ. ख्वाजा अम्बर मस्जिद (1688-89), मंदिर के स्थान पर।

ट. बाबूगंज मस्जिद (1683-86), मंदिर के स्थान पर।

ठ. पूरब दरवाजा के निकट शेर शाही मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

ड. चमनी घाट की मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

2. फुलवारीशरीफ

क. शाह पशमीनापोश की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

ख. मिन्हाजुद्दीन रस्ती की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

ग. लालमियाँ की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

घ. साँगी मस्जिद (1549-50), मंदिर के स्थान पर।

पूर्णिया जनपद

क. हदफ, जामा मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

ख. पूर्णिया आनेलपुरा मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

सारन जनपद

क. चिरण्ड मस्जिद (1503-04), मंदिर के स्थान पर।

ख. नरहान-जामा मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

ग. ताजपुर बसाही-ख्वाजा बादशाह की मजार, मंदिर भवन सामग्री से।

शाहाबाद जनपद

1. रोहतासगढ़

   क. औरंगजेब की मस्जिद, मंदिर के हिस्से को परिवर्तित करके।

   ख. साकी सुल्तान की मजार, मंदिर के स्थान पर।

   ग. सासाराम चन्दन-शाहिद पीर की मजार, मंदिर के स्थान पर।

वैशाली जनपद

1. अजमेर-पीर कट्टाल की मजार, मंदिर भवन सामग्री से।
2. चीहर

   क. किला मंदिर, भवन सामग्री से।

   ख. जामा-मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।
3. हाजीपुर

   क. हाजी इलियास की मस्जिद, मंदिर को परिवर्तित करके।

   ख. बरखुरदार औलिया की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

   ग. पीर शतारी की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

   घ. हाजी उल हरमाई की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

   ड. पीर जलालुद्दीन की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।
4. बासारह

   क. पीर मीरान की दरगाह, बौद्ध स्तूप के शीर्ष भाग पर।

   ख. शेख मुहम्मद फेजुल्लाह अली उर्फ काजिन शत्तारी की मजार, मंदिर स्थान पर।

   ग. कब्रिस्तान, अनेक मकबरे, मंदिर भवन सामग्री से।

   घ. मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

मध्यप्रदेश

बैतूल जनपद

1. पहम सुलेमान शाह की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

2. उमरी, रहमान शाह की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

भोपाल जनपद

1. बेरासिया, मस्जिद (1716), मंदिर के स्थान पर।
2. भोपाल, कुदेसिया बेगम द्वारा निर्मित जामा मस्जिद, सभामण्डला मंदिर के स्थान पर।

बिलासपुर जनपद

खिमलासा

1. पाँच पीर की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।
2. नगीना महल, मंदिर के स्थान पर।
3. ईदगाह, मंदिर के स्थान पर।
4. तीन गुम्बद वाली मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

धार जनपद

1. धार

राजा भोज परमार की राजधानी को मुस्लिम राजधानी में परिवर्तित कर दिया गया। निम्नलिखित मुस्लिम स्मारक स्वयं अपनी कहानी कहते हैं–

क. अमाल मौला मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

ख. लाट मस्जिद (1405) जैन मंदिर भवन सामग्री से।

ग. अब्दुल्ला शाह चन्गाल की मजार, मंदिर के स्थान पर।

2. माण्डू

एक प्राचीन हिन्दू नगरी मुस्लिम राजधानी में परिवर्तित कर दी गई। निम्नलिखित स्मारक या तो मंदिर के स्थान या मंदिर भवन सामग्री से बनाए गए–

क. जामा मस्जिद (1454)।

ख दिलावर खाँ की मस्जिद (1405)।

ग. छोटी जामा मस्जिद।

घ. पहरेदारों की मस्जिद (1417)।

ड. मलिक सुधीर की मस्जिद।

च. हुशांग शाह का मकबरा।

छ. जहाज महल।

ज. तवाईल महल।

झ. नाहर झरोखा।

ञ. हिण्डोला महल।

ट. रूपमती मण्डप।

ठ. अशर्फी महल।

ड. दाई की छोटी बहन का महल।

ढ. बाज बहादुर का महल।

ण. नीलकण्ठ का महल।

त. छप्पन महल।

थ. किला और दरवाजे।

द. गड़ा शाह का महल।

ध. हम्माम खाना

धौलपुर जनपद

1. बारी मस्जिद (1346 या 1351), मंदिर के स्थान पर।

पूर्वी नीमार जनपद

1. भदगाँव, जामा मस्जिद (1328), मंदिर के स्थान पर।
2. झीरी मस्जिद (1518), मंदिर के स्थान पर।
3. खण्डवा मस्जिद (1619-20), मंदिर के स्थान पर।

गुना जनपद

1. चन्देरी, यह मुस्लिम शहर निकट के या बूढ़ी चन्देरी के अवशेषों

से बनाया गया निम्नलिखित स्मारक या तो मंदिर के स्थान पर हैं या मंदिर भवन सामग्री से बनाए गए हैं-

क. मस्जिद (1392)।

ख. मोती मस्जिद।

ग. जामा मस्जिद।

घ. पाँचमुण्डा मस्जिद।

ड. कुरबानी चबूतरा।

च. मेवा शाह की दरगाह।

छ. मजार जो कि बड़ा मदरसा के नाम से जानी जाती है।

ज. मजार जो कि छोटा मदरसा के नाम से जानी जाती है।

झ. राजा का मकबरा।

ञ. रानी का मकबरा।

ट. बत्तीसी बावड़ी मस्जिद (1488)।

ठ. हाथीपुर की मस्जिद (1691)।

ड. शेख बरहानुद्दीन की मजार।

ढ. किला।

ण. कुशक महल।

त. ईदगाह (1495)।

2. पिपरी मस्जिद (1451), मंदिर के स्थान पर।

3. शडोरागाँव, जामा मस्जिद (1621-22), मंदिर के स्थान पर।

ग्वालियर जनपद

1. ग्वालियर

क. मोहम्मद गौस की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

ख. गूजरी महल के निकट की जामा मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

ग. गणेश गेट के निकट की मस्जिद, ग्वालिप्पा, मंदिर के स्थान

पर।

घ. किले के पूरब तथा पश्चिम की तरफ के कब्रिस्तान, मंदिर के स्थान पर।

2. झझाओ, लाल पत्थर की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

3. मुन्दरैल, अनेक मस्जिदें (1504), मंदिरों के स्थानों पर।

4. सिपरी, अनेक मस्जिद और मीनारें, मंदिर भवन सामग्री से।

इन्दौर जनपद

1. दीपलपुर, मस्जिद (1670), मंदिर के स्थान पर।

2. महेश्वर।

   क. शाही मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

   ख. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

3. मेहदीपुर

   क. गोदार शाह की मजार, मंदिर के स्थान पर।

   ख. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

4. सनवार, मस्जिद (1674), मंदिर के स्थान पर।

मन्दसौर जनपद

1. कयामपुर

   क. मस्जिद (1617), मंदिर के स्थान पर।

   ख. ईदगाह (1701-02), मंदिर के स्थान पर।

2. मन्दसौर

   क. जामा मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. रामपुरा, पादशाही बावड़ी, मंदिर भवन सामग्री से।

मुरैना जनपद

अलापुर

   क. मस्जिद (1561-62), मंदिर के स्थान पर।

   ख. मस्जिद (1586-87), मंदिर के स्थान पर।

ग. मस्जिद (1697-98), मंदिर के स्थान पर।

शाजापुर जनपद

अगरतला, मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

शिवपुरी जनपद

1. नारोड़, जंजीरी मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।
2. नरवार

   क. शाह मदार की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

   ख. जामा मस्जिद (1509) मंदिर भवन सामग्री से।

   ग. हवापुर गेट के अन्दर की मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।
3. पवाया

   क. किला, मंदिर भवन सामग्री से।
4. रानोड

   क. मस्जिद (1331-32), मंदिर के स्थान पर।

   ख. मस्जिद (1441), मंदिर के स्थान पर।

   ग. मस्जिद (1633), मंदिर के स्थान पर।

   घ. मस्जिद (1640), मंदिर के स्थान पर।
5. शिवजी, जामा मस्जिद (1440), मंदिर के स्थान पर।

उज्जैन जनपद

1. बारनगर, मस्जिद (1481), मंदिर के स्थान पर।
2. उज्जैन

   क. जामा मस्जिद जो कि बिना नींव की मस्जिद (1403) के नाम से जानी जाती है, मंदिर के स्थान पर।

   ख. मस्जिद, चौबीस खम्भा गेट के निकट खुदायी में प्राप्त, मंदिर भवन सामग्री से।

   ग. मोची मस्जिद, मंदिर को परिवर्तित करके।

विदिशा जनपद

1. बासौदा मस्जिद (1720–21), मंदिर के स्थान पर।
2. भोरांसा

   क. कालन्दरी मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. जागीरदार की मस्जिद (1683), मंदिर के स्थान पर।

   ग. बड़ा बाग में बड़ी मस्जिद (1685), मंदिर के स्थान पर।

   घ. बन्दी बाग की मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

   ङ. बारा खम्भा मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

   च. एक खम्भा मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

   छ. बिना नींव की मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

   ज. बन्दी बाग में कब्रिस्तान, क्षतिग्रस्त मंदिरों के मध्य में निर्मित।

   झ. ईदगाह, मंदिर के स्थान पर।

   ञ. किला (1594–95), मंदिर के स्थान पर।
3. पारासरी, मस्जिद (1694–95), मंदिर के स्थान पर।
4. रैंकला मस्जिद (1694–95), मंदिर के स्थान पर।
5. शमसाबाद मस्जिद (1461), मंदिर के स्थान पर।
6. सिरौंज

   क. आलमगीरी मस्जिद (1662–63), मंदिर के स्थान पर।

   ख. मोहल्ला रकाबगंज में मस्जिद (1657–58), मंदिर के स्थान पर।

   ग. शेख साहिब की दरगाह (1657), मंदिर के स्थान पर।
7. ताल मस्जिद (1644–45), मंदिर के स्थान पर।
8. उदयपुर

   क. मस्जिद (1336), मंदिर सामग्री से।

ख. औरंगजेब द्वारा निर्मित मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

ग. मोती मस्जिद (1488-89), मंदिर के स्थान पर।

घ. मस्जिद (1549), मंदिर के स्थान पर।

ड. शाहजहाँ की दो मस्जिदें, मंदिर के स्थान पर।

च. जहाँगीर की मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

9. विदिशा

क. आलमगीरी या विजयमण्डल मस्जिद (1682) मन्दिर को परिवर्तित करके।

ख. लोहंगी पहाड़ी पर मस्जिद (1457), मंदिर के स्थान पर।

ग. शाहजहाँनी मस्जिद (1650-51), मंदिर के स्थान पर।

घ. शहर की दीवार, मंदिर भवन सामग्री से।

पश्चिमी नीमाड़ जनपद

1. असिरगढ़

क. जामा मस्जिद (1584), मंदिर के स्थान पर।

ख. शाहजहाँ के राज्यकाल में निर्मित मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

ग. ईदगाह (1588-89), मंदिर के स्थान पर।

घ. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

2. भीकनगाँव, ईदगाह (1643-44), मंदिर के स्थान पर।

3. बैदिया मस्जिद (1456-57), मंदिर के स्थान पर।

4. बुरहानपुर

क. जामा मस्जिद (1588-89), मंदिर के स्थान पर।

ख. बीबी साहिब की मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

ग. शाह मसूद की मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

घ. शाह बहाउद्दीन बाजन की मस्जिद और दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

ड. सूफी नूर शाह की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

सिहोर जनपद

मस्जिद (1332), मंदिर के स्थान पर।

दमोह जनपद

क. गाजी मियाँ की दरगाह, मंदिर के स्थान पर।

ख. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

1. देवास जनपद

क. मस्जिद (1526), मंदिर के स्थान पर।

ख. मस्जिद (1705), मंदिर के स्थान पर।

ग. मस्जिद (1707), मंदिर के स्थान पर।

2. गनधावल, गाँव के अन्दर निर्मित कब्रिस्तान जैन मंदिर सामग्री से।

3. सारंगपुर

क. मदरसा (1493), मंदिर के स्थान पर।

ख. जामा मस्जिद (1604), मंदिर के स्थान पर।

ग. पीन जान की घाट मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

घ. किला मंदिर भवन सामग्री से।

ड. उंछोड़ ईदगाह (1681), मंदिर के स्थान पर।

पन्ना जनपद

1. अजेयगढ़, किला मंदिर भवन सामग्री से।
2. नचन मस्जिद, मंदिर को परिवर्तित करके।

रायसेन जनपद

पालभाई की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

रायगढ़ जनपद

खुजनेर, दउवलशाह की मजार, मंदिर भवन सामग्री से।

रतलाम जनपद

बरौदा, मस्जिद (1452-56), मंदिर के स्थान पर।

सागर जनपद

1. धमोनी, बाल जटी शाह की दरगाह (1671), मंदिर के स्थान पर।
2. कन्जिया
   क. खान साहिब की मस्जिद (1594-95), मंदिर के स्थान पर।
   ख. ईदगाह (1640), मंदिर के स्थान पर।
   ग. आलमगीरी मस्जिद (1703), मंदिर के स्थान पर।
   घ. कला की मस्जिद (1643), मंदिर के स्थान पर।
3. खिमलासा, पाँच पीर, मंदिर के स्थान पर।

गुजरात

जिला अहमदाबाद

1. अहमदाबाद, यहाँ के मुस्लिम स्मारकों और भवनों में असावल, पाटन और चन्द्रावती के तोड़े गए मंदिरों की सामग्री का प्रयोग किया गया। कुछ भवनों की सूची नीचे दी जा रही है।
   क. भद्रा का महल और चबूतरा।
   ख. भद्रा में अहमदशाह की मस्जिद।
   ग. अहमदशाह की जामा मस्जिद।
   घ. हैबतखाँ की मस्जिद।
   ड. रानी रूपमती की मस्जिद।
   च. रानी बाई हारीर की मस्जिद।
   छ. मलिक सारंग की मस्जिद।
   ज. महफूज खाँ की मस्जिद।
   झ. सैयद आलम की मस्जिद।
   ञ. पत्थरवाली या कुतुबशाह की मस्जिद।
   ट. सकर खाँ की मस्जिद।
   ठ. बाबा लूलू की मस्जिद।

ड. शेख हसन मोहम्मद चिश्ती की मस्जिद।

त. इसानपुर की मस्जिद।

थ. मलिक शब्बान की मस्जिद और मजार।

द. रानी सीपरी (सबराई) की मस्जिद और

ध. वटवा में शाहआलम की मस्जिद और मजार।

न. सुल्तान अहमद शाह (प्र.) का मकबरा

2. डेकवारा, मस्जिद (1387) मंदिर के स्थान पर।

3. ढोकला

   क. बहलोल खाँ गाजी की मस्जिद और मजार, मंदिर के स्थान पर।

   ख. बरकत शहीद की मजार (1318), मंदिर के स्थान पर।

   ग. टंक या जामा मस्जिद (1316), मंदिर के स्थान पर।

   घ. हिलाल खाँ काजी की मस्जिद (1333), मंदिर सामग्री से।

   ड. खिरनी मस्जिद (1377) बावन जिनालय को परिवर्तित करके।

   च. काली बजार मस्जिद (1364) मंदिर के स्थान पर।

4. ईसापुर मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

5. मण्डल

   क. सैयद की मस्जिद, मंदिर स्थान पर।

   ख. जामा मस्जिद, मंदिर स्थान पर।

6. पलड़ी, पत्थर की मस्जिद, मंदिर स्थान पर।

7. रणपुर जामा मस्जिद (1524-25), मंदिर स्थान पर।

8. सरखेज

   क. शेख अहमद खट्टगंज बख्श की दरगाह (1445), मंदिर सामग्री से।

   ख. सुल्तान महमूद बेगड़ा का मकबरा, मंदिर सामग्री से।

9. उस्मानपुर सैयद उस्मान की मस्जिद और मजार, मंदिर स्थान पर।

जिला बनासकाँठा

1. हलद्वार, लून शाह और गूजर शाह की मजारें, मंदिर स्थानों पर।
2. हलोल
   - क. एक मीनार की मस्जिद, मंदिर स्थान पर।
   - ख. गाजी मस्जिद के साथ पीर अमीर ताहिर की दरगाह, मंदिर स्थान पर।
   - ग. पीर घोड़ा की मजार (1421-23), मंदिर स्थान पर।
3. दभोई
   - क. पाँच बीबी की दरगाह, मंदिर सामग्री से।
   - ख. माई ढोकरी की मजार, मंदिर सामग्री से।
   - ग. किला, मंदिर सामग्री से।
   - घ. हिरा, बड़ौदा, महुडा और नन्दौडी दरवाजे मंदिर सामग्री से।
   - ड. महुंड मस्जिद, मंदिर सामग्री से।

3. देतेश्वर, कुतुबुद्दीन की मजार, मंदिर स्थान पर।
4. सनखेड़ा मस्जिद (1515-16), मंदिर स्थान पर।

जिला भरूँच

1. आमोद, जामा मस्जिद, मंदिर सामग्री से।
2. भरूँच
   - क. जामा मस्जिद (1321) वैदिक और जैन मंदिर सामग्री से।
   - ख. गजनवी मस्जिद (1326), मंदिर स्थान पर।
   - ग. ईदगाह (1326), मंदिर स्थान पर।
   - घ. चुनारवाड़ा मस्जिद (1458), मंदिर स्थान पर।
   - ड. काजी की मस्जिद (1609), मंदिर स्थान पर।
   - च. मखदूम शरीफुद्दीन की मजार (1413), मंदिर स्थान पर।

3. जम्बूसर, जामा मस्जिद (1508-09), मंदिर स्थान पर।

4. तंकारिया, बड़ी या जामा मस्जिद (1453), मंदिर स्थान पर।

जिला भावनगर

1. बोटाद, पीर हमीद खॉ की मजार, मंदिर स्थान पर।

2. तोलजा, हसन पीर की दरगाह और ईदगाह, मंदिर स्थान पर।

3. घोड़ा मस्जिद (1614), मंदिर स्थान पर।

जिला जामनगर

1. अमरान, दवलशाह की दरगाह, मंदिर सामग्री से।

2. बेट द्वारका, पीर किरमानी की दरगाह, मंदिर स्थान पर।

3. द्वारका, मस्जिद (1473), मंदिर स्थान पर।

जिला जूनागढ़

1. जूनागढ़

   क. बोरवाड़ मस्जिद (1470), मंदिर स्थान पर।

   ख. ऊपरकोट में जामा मस्जिद, जैन मंदिर के स्थान पर।

   ग. माई गढेची में मस्जिद, जैन मंदिर को परिवर्तित करके।

2. लोलियाना, मदारशाह की दरगाह, मंदिर स्थान पर।

3. कुटियाना, जामा मस्जिद, मंदिर स्थान पर।

पंजाब

जिला बठिण्डा

बाबा हाजी रतन की मजार (1593) मंदिर से परिवर्तित।

जिला गुरदासपुर

टिला, जामा मस्जिद, मंदिर स्थान पर।

जिला जालन्धर

सुल्तानपुर बादशाही सराय, बौद्ध विहार के स्थान पर।

जिला लुधियाना

क. अली सरमस्त की मस्जिद तथा दरगाह (1570), मंदिर के स्थान पर।

ख. काजी की मस्जिद (1517), मंदिर के स्थान पर।

जिला पटियाला

1. बहादुरगढ़ किले की मस्जिद (1666), मंदिर के स्थान पर।
2. बावल मस्जिद (1560), मंदिर के स्थान पर।
3. समाना

क. सैयदों की मस्जिद (1495), मंदिर के स्थान पर।

ख. जामा मस्जिद (1614-15), मंदिर के स्थान पर।

ग. इमामबाड़े वाले निकट की मस्जिद (1637), मंदिर के स्थान पर।

घ. पीरजादा की मस्जिद (1647), मंदिर के स्थान पर।

जिला रोपड़ (रूपनगर)

जामा मस्जिद, मंदिर के स्थान पर।

जिला संगरूर

सुनाम

क. कदीनी मस्जिद (1414), मंदिर के स्थान पर।

ख. गंज ए शहीदां, मंदिर के स्थान पर।

कश्मीर

1. अम्बरशहर

फरुखजाद की जियारत, मंदिर सामग्री से।

2. बड़गाम

क. घागरपुर

अब्बानशाह की जियारत, मंदिर के स्थान पर।

ख. नरबाई

सैयद सवालिया शाह की जियारत, मंदिर के स्थान पर।

3. ब्रिजबेहड़ा मस्जिद, मंदिर स्थान पर।

4. बुमजू

   क. बाबा बमदीन की जियारत, भीमकेशव मंदिर तोड़कर।

   ख. रुकुनुद्दीन ऋषि की जियारत, मंदिर तोड़कर।

   ग. घाटी में आगे की जियारत, मंदिर तोड़कर।

5. गुलमर्ग

   बाबा इमामदीन ऋषि की जियारत, मंदिर सामग्री से।

6. गुपकर

   ज्येस्थर और दूसरे मकबरों की जियारत, मंदिर सामग्री से।

7. हटमार

   जामा मस्जिद, मंदिर सामग्री से।

8. खोनमुँह

   कई जियारतें, मंदिर सामग्री से।

9. कित्शोम

   दो मस्जिदें, मंदिर स्थान पर।

10. लोद्वी

   जियारत, मंदिर सामग्री से।

11. लोहार

   सैयद चनन गाज की जियारत, मंदिर स्थान पर।

12. लोकबवान

   बाग का चबूतरा, लोक भवन तीर्थ की सामग्री से।

13. मरसुस

   शाह अब्दुल्ला की जियारत, मंदिर स्थान पर।

14. पम्पोर

   क. मीर मोहम्मद हमदानी की जियारत, विष्णुस्वामी मंदिर सामग्री से।

ख. अन्य जियारतें मंदिर सामग्री से।

15. पानद्रेथान

मस्जिद, मेरुवर्धन स्वामी, मंदिर सामग्री से

16. संगर

जियारत, मंदिर सामग्री से।

17. सार

ख्वाजा खिज्र की जियारत, मंदिर सामग्री से

18. शालीमार बाग चौथे रास्ते पर चबूतरा मंदिर सामग्री से।

19. **श्रीनगर**

प्राचीन हिन्दू नगर मुस्लिम राजधानी में बदल दिया गया। निम्नलिखित इमारतें मंदिर स्थानों पर बनी हैं और उनमें से अधिकतर मंदिरों की सामग्री से बनाई गई हैं।

क. बहाउद्दीन की जियारत, परिवर्तित जयस्वामी मंदिर।

ख. चौथे पुल के नीचे स्थित मकबरा तथा इसका दरवाजा।

ग. कलशपुर में स्थित शाही हमादानी की दरगाह तथा मस्जिद, काली मंदिर के स्थान पर।

घ. नूरजहाँ द्वारा बनवाई गई नाऊ या पत्थर की मस्जिद।

ड. नाऊ मस्जिद के निकट स्थित मकबरा।

च. डिड मार में स्थित मलिक साहिब की जियारत, डिडा मठ के स्थान पर

छ. विचरनाग के निकट स्थित मस्जिद, मदरसा तथा मकबरा विक्रमेश्वर मंदिर के स्थान तथा सामग्री से निर्मित।

ज. जादीबल में स्थित मदनी साहिब की मस्जिद।

झ. मदीनी साहिब की मस्जिद के दक्षिण पश्चिम की जियारत।

ञ. सिकन्दर बुत्शकिन द्वारा बनवाई गई जामा मस्जिद जिसका कालान्तर में पुनर्निर्माण कराया गया।

ट. नूर पीरस्तान नाम की जियारत, परिवर्तित नरेन्द्र स्वामी मंदिर।

ठ. सुल्तान जैनुल आबदीन का मकबरा।

ड. सिकन्दर बुत्शकिन की रानी, जैनुल आबदीन की माँ का मकबरा।

ढ. जामा मस्जिद के दक्षिण पश्चिम में स्थित पीर हाजी मुहम्मद की जियारत, परिवर्तित विष्णु रणस्वामी मंदिर।

ण. हरी पर्वत पर स्थित मखदम तथा अखुन मुल्ला की जियारत, परिवर्तित भीमस्वामी मंदिर।

त. दारा शिकोह द्वारा बनवाई गई अखुन मुल्ला की मस्जिद।

थ. खाण्डव वन में स्थित पीर मोहम्मद बासुर की जियारत, स्कन्द भवन विहार के स्थान पर।

द. खाण्डव वन के उत्तर पूर्व में स्थित मकबरा।

ध. पीर दस्तगीर की दरगाह।

न. नक्शबन्दी की दरगाह।

प. अकबर द्वारा बनवाए गए किले की दीवार तथा काठी गेट।

फ. झेलम नदी के किनारों पर मीलों की लम्बाई तक बनाए गए घाट, जब यह नदी श्रीनगर में प्रवेश करती है।

ब. पीर शमसुद्दीन सैयद मुहम्मद ईरकी का अस्ताना।

20. सुंदरवन, हजरत बाल की जियारत, मंदिर के स्थान पर।

21. तापर, सोपोर से नईदखाई तक बाँध जैनुल आबदीन द्वारा निर्मित, नरेन्द्रेश्वर नाथ मंदिर से सामग्री प्रयुक्त।

22. थेडा, दमपोर के पास जियारत, मंदिर सामग्री से।

23. वेरनाग, जहाँगीर का बनवाया पत्थर का घेरा, मंदिर सामग्री से।

24. वूलर झील

क. सून लंका, झील के बीच जैनुल आबदीन द्वारा बनवाई आरामगाह।

ख. पश्चिमी तट पर शुकदीन की दरगाह, मंदिर स्थान पर।

25. जुकुर, कई जियारत और मकबरे, मंदिर सामग्री प्रयुक्त।

महाराष्ट्र

अहमदनगर जनपद

1. अम्बा जोगी, किला मंदिर भवन सामग्री से।
2. मुल्ला मस्जिद, भींगर (1367-68), मंदिर स्थल पर।
3. गोधा

   क. ईदगाह (1395), मंदिर स्थल पर।

   ख. मोरखाड़ा (1630), मंदिर स्थल पर।
4. जम्बुखेड़, जामा मस्जिद (1687-88), मंदिर स्थल पर।
5. माधी, रमजान शाह मही सवार की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

अकोला जनपद

1. अकोत, जामा मस्जिद (1667), मंदिर स्थल पर।
2. बालापुर, मस्जिद (1717-18), मंदिर स्थल पर।
3. बसीम, काकी शाह की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
4. जमोड़

   क. मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. पीर पौलाद शाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।
5. मंगलुरपीर

   क. कदीमी मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. पीर हयात कलन्दर की दरगाह (1253), मंदिर स्थल पर।

   ग. सनम साहिब की दरगाह, मंदिर स्थल पर।
6. करंज

   क. असतान मस्जिद (1659), मंदिर स्थल पर।

   ख. मस्जिद (1669-70), मंदिर स्थल पर।

ग. मस्जिद (1698-99), मंदिर स्थल पर।

7. मर्नला

क. जामा मस्जिद (1509), मंदिर स्थल पर।

ख. आलमगीरी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

8. पतुर, अब्दुल अजीज उर्फ शेख आबू चिश्ती की दरगाह (1388), मंदिर स्थल पर।

9. उपराई, शाह दावल की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

अमरावती जनपद

1. आमनेर, लालखान की मजार और मस्जिद (1691-92), मंदिर स्थल पर।

2. इल्लिचपुर

क. जामा मस्जिद 1697 में पुनर्निमित, मंदिर स्थल पर।

ख. दाल शिफा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ग. चौक की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

घ. ईदगाह, मंदिर स्थल पर।

ड. शाह गुलाम हुसैन की मजार, मंदिर स्थल पर।

च. अब्दुल रहमान गाजी (दुलहा शाह) की मजार, मंदिर स्थल पर।

3. ऋतपुर औरंगजेब की जामा मस्जिद (1878 में पुनर्निर्मित), मंदिर स्थल पर।

औरंगाबाद जनपद

1. अंतुर किला, कला की मस्जिद (1615), मंदिर स्थल पर।

2. औरंगाबाद

क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. लाल मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ग. **औरंगजेब का मकबरा, मंदिर स्थल पर।**

3. दौलताबाद

क. जामा मस्जिद (1315), जैन मंदिर को परिवर्तित करके।

ख. किले में याक मीनार की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ग. काजीपुरा में मस्जिद ए-हौज (1458), मंदिर स्थल पर।

घ. ईदगाह (1359), मंदिर स्थल पर।

ड. पीर काटू की दरगाह, मंदिर को परिवर्तित करके।

च. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

4. गंगापुर मस्जिद (1690-91), मंदिर स्थल पर।

5. कागजीपुरा, शाहनिजामुद्दीन की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

6. खुल्दाबाद

क. हजरत बरहानुद्दीन की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ख. परी की तलाव की दरगाह, मंदिर को परिवर्तित करके।

ग. हलीम काका की मजार, मंदिर को परिवर्तित करके।

घ. जलालुल्हक की मजार, मंदिर स्थल पर।

ड. बनी बेगम की बाग में बारादरी, मंदिर स्थल पर।

7. पैधन

क. जामा मस्जिद (1630) मंदिर को परिवर्तित कर।

ख. मौलाना की मस्जिद, रेणुका देवी मन्दिर को परिवर्तित करके।

ग. आलमगीरी मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

घ. मक्द्म हुसैन अहमद की दरगाह (1507), मंदिर स्थल पर।

8. टालटम किला, मंदिर भवन सामग्री से।

9. वैजापुर

क. जाउ गाजी की मजारें, मंदिर स्थल पर।

ख. सैयद रुकनुद्दीन की मजार, मंदिर स्थल पर।

बीड जनपद

क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. काजी की मस्जिद (1624), मंदिर स्थल पर।

ग. महल्ला सद्रकी मस्जिद (1704-05), मंदिर स्थल पर।

घ. शहंशाह वली की दरगाह और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ड. ईदगाह (1704), मंदिर स्थल पर।

मुंबई जनपद

क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. महिम की मजार, मंदिर स्थल पर।

ग. मैना हज्जाम की मजार, महालक्ष्मी मंदिर को परिवर्तित करके।

बुलढाणा जनपद

1. फथखेलड़ा मस्जिद (1581), मंदिर स्थल पर।
2. मल्कापुर, काजी हाउस के पास वाली मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

धुळे जनपद

1. भामेर

   क. मस्जिद (1481-82), मंदिर स्थल पर।

   ख. मस्जिद (1529-30), मंदिर स्थल पर।

2. इरंडोल जामा मस्जिद पांडव वाड़ा, मंदिर भवन सामग्री से।
3. नंदुरबा

   क. मन्यार मस्जिद, सिद्धेश्वर मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. सैयद अनाउद्दीन की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   ग. हिन्दू मंदिरों के ढाँचों के मध्य कुछ मस्जिदें।

4. नसीराबाद कुछ पुरानी मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।
5. निजामाबाद, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

जलगाँव जनपद

1. जलगाँव, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
2. फसखन्दा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
3. शेन्दुरनी, मस्जिद-ए-कबीर (1597), मंदिर स्थल पर।

कोल्हापुर जनपद

1. भडोल, मस्जिद (1551-52), मंदिर स्थल पर।
2. कागल, घाड़बी पीर की दरगाह, मंदिर स्थल पर।
3. काप्शी, मस्जिद-ए-हुसैनी, मंदिर स्थल पर।
4. पन्हाला
   - क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
   - ख. सईदुद्दीन की दरगाह, मंदिर स्थल पर।
   - ग. किले में बड़े इमाम की दरगाह, मंदिर स्थल पर।
   - घ. सादोबा पीर की मजार, मंदिर स्थल पर।
5. शिरोल, जामा मस्जिद (1696), मंदिर स्थल पर।
6. विशालगढ़, मालिक रिहान पीर की मजार, मंदिर स्थल पर।

नागपुर जनपद

रामटेक, औरंगजेब के राज्य में बनी मस्जिद, मंदिर को परिवर्तित करके।

नान्देड़ जनपद

1. भैसा
   - क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
   - ख. तीन दरगाहें, मंदिर स्थल पर।
2. देग्लुर, शाह जियाउद्दीन रिफाई की मजार, मंदिर स्थल पर।
3. कंधार
   - क. जामा मस्जिद (1606), मंदिर स्थल पर।

ख. किले के अंदर की दरगाहें और मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

ग. किले का सम्पर्क मार्ग, मंदिर भवन सामग्री से।

4. नांदेड़, खास बाग की ईदगाह, मंदिर स्थल पर।

नासिक जनपद

1. गलना

क. पीर पूलाद की दरगाह (1581), मंदिर स्थल पर।

2. गोंडेंगाँव, जामा मस्जिद (1703), मंदिर स्थल पर।

3. मालेगाँव, खाकी शाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

4. नासिक, किले में जामा मस्जिद, महालक्ष्मी मंदिर को परिवर्तित करके।

5. पिम्परी, सईद सदराउद्दीन की मजार, मंदिर स्थल पर।

6. राजापुर मस्जिद (1560), मंदिर स्थल पर।

उस्मानाबाद जनपद

1. औसा, मस्जिद (1680), मंदिर स्थल पर।

2. नालदुर्ग, मस्जिद (1560), मंदिर स्थल पर।

3. परेंदा

क. किले के अंदर की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

ख. तालाब के पास की नमाजगाह, मानकेश्वर मंदिर को परिवर्तित करके।

परभणी जनपद

1. चकन, मस्जिद (1682), मंदिर स्थल पर।

2. घोड़ा, जामा मस्जिद 33 मंदिरों की सामग्री से 1586 में निर्मित।

3. जुन्नार

क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. दीवान अहमद की मस्जिद (1587-88), मंदिर स्थल पर।

ग. गुनड़ी की मस्जिद (1581), मंदिर स्थल पर।

घ. मदार चिल्ला की मस्जिद (1611-12), मंदिर स्थल पर।

ड. शिवनेरी पहाड़ियों पर कमानी मस्जिद (1625), मंदिर स्थल पर।

च. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

4. खेड़ दिलावर खान की मजार और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

5. मानचेर, दक्षिणी पश्चिमी द्वार की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

6. सासवाड़, मस्जिद हेमदापंती, मंदिर भवन सामग्री से।

वर्धा जनपद

1. अष्टि

   क. जामा मस्जिद (1521), मंदिर स्थल पर।

   ख. लोदी मस्जिद (1771-72), मंदिर स्थल पर।

2. गिराड़, शेख फरीद की मजार, मंदिर को परिवर्तित करके।

3. पौनार, कदीमी मस्जिद, रामचन्द्र मंदिर को परिवर्तित करके।

रत्नागिरी जनपद

1. चाड़ल

   क. पीर सैयद अहमद की मजार, सांबा मंदिर को परिवर्तित करके।

   ख. हिन्गलाज घाटी के पास का मकबरा, मंदिर स्थल पर।

   ग. कब्रिस्तान, मंदिर स्थल पर।

2. डभोल, पत्थर की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

3. राजपुरी, ऐदरुसिआ खानकाह, मंदिर स्थल पर।

4. येशीर, जामा मस्जिद (1524), मंदिर स्थल पर।

सांगळी जनपद

1. मंगलवेध, किला, मंदिर भवन सामग्री से।

2. मिरज

क. मस्जिद (1415-16), मंदिर स्थल पर।

ख. जामा मस्जिद (1506), मंदिर स्थल पर।

ग. काली मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

घ. नमाजगााह (1586-87), मंदिर स्थल पर।

ड. बड़ा इमाम की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

सतारा जनपद

1. आप्ती मस्जिद (1611-12), मंदिर स्थल पर।
2. कराड

क. जामा मस्जिद (1575-76), मंदिर भवन सामग्री से।

ख. अली की करमगाह (1325), मंदिर स्थल पर।

3. खनपुर, जामा मस्जिद (1325), मंदिर भवन सामग्री से।
4. रहमतपुर

क. मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. जहाँगीर की माँ का मकबरा (1649), मंदिर स्थल पर।

सोलापुर जनपद

1. बेगमपुर, गढ़ेश्वर के पास मकबरा, मंदिर स्थल पर।
2. सोलापुर किला, मंदिर भवन सामग्री से।

ठाणे जनपद

1. कल्याण

क. हजरत याकूब की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ख. मक्का मस्जिद (1586), मंदिर स्थल पर।

2. मलंगगढ़, बाबा मलंग की मजार, मंदिर स्थल पर।

कर्णाटक

बैंगलूरू जनपद

1. डाड् डा-बल्लापुर, अजोधन के मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह।
2. होसकोट

   क. सबल्ली की दरगाह, मंदिर को परिवर्तित करके।

   ख. कासिम की दरगाह, मंदिरों को परिवर्तित करके।

बेलगाम जनपद

1. बेलगाम

   क. किले की मस्जिद-ए-सफा (1519), मंदिर स्थल पर।

   ख. जामा मस्जिद (1585-86), मंदिर स्थल पर।

   ग. किले में बदरुद्दीन शाह की मजार (1351-52), मंदिर स्थल पर।
2. मोकाक, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
3. हुकेरी

   क. मान साहिब की दरगाह (1567-68), मंदिर स्थल पर।

   ख. काली मस्जिद (1584), मंदिर भवन सामग्री से।
4. कुदाची

   क. मखदूम शाह वली की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   ख. शेख मुहम्मद सिराजुद्दीन पीरदादी की मजार, मंदिर स्थल पर।
5. मद्भवी, मस्जिद शिव मंदिर भवन सामग्री से।
6. रायबाग, जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
7. साँपगाँव, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

बेल्लारी जनपद

1. बेल्लारी टीपू सुल्तान द्वारा बनाई गई मस्जिद (1789-90), मंदिर

स्थल पर।

2. हम्पी, विजयनगर के भग्नावशेषों में बनी मस्जिद और ईदगाह, मंदिर भवन सामग्री से।

3. हास्पेट, टीपू सुल्तान द्वारा बाजार गली में बनवाई गई मस्जिद (1795-96), मंदिर स्थल पर।

4. हुविंहदगल्ली, किला, मंदिर भवन सामग्री से।

5. कंचगरबेलगल्लु, हुसैन शाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

6. कुदतनी, दरगाह, दुर्गेश्वर मंदिर भवन सामग्री से।

7. सन्दूर, जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

8. सिरूगुप्प, लाड खन मस्जिद (1674), मंदिर स्थल पर।

9. सुलतानपुरम्, शिला पर की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

बीदर जनपद

1. बीदर, प्राचीन हिन्दू शहर जो कि मुस्लिम राजधानी में परिवर्तित कर दिया गया है। निम्नलिखित भवन या तो मंदिर स्थल पर बनाए गए हैं या मंदिर भवन सामग्री से बनाए गए हैं।

   क. सोला खम्भा मस्जिद (1326-27)

   ख. बहमनी की जामा मस्जिद

   ग. मुख्तार खान की मस्जिद (1671)।

   घ. काली मस्जिद (1694)।

   ड. काली मस्जिद के पश्चिम वाली मस्जिद (1697-98)

   च. फराह बाग मस्जिद, शहर से 3 किमी (1671)।

   छ. अश्तूर में हजरत खलीलुल्लाह की दरगाह (1440)।

   ज. शाह शम्सुद्दीन मुहम्मद कादिरी (मुल्तानी पादशाह) की दरगाह।

   झ. शाह वलीउल्लाह हुसैनी की दरगाह।

   ञ. शाह जैनुल दीन गंज निशीन की दरगाह।

ट. महबूब सुभानी की मस्जिद और दरगाह।

ठ. अश्तूर में अहमदशाह वली की मजार (1436)।

ड. शाह अब्दुल अजीज की मजार (1484)।

त. तख्त महल।

थ. गगन महल।

द. महमद गवान का मदरसा।

2. चाँदपुर, मस्जिद (1673-74), मंदिर स्थल पर।

3. चिल्लेरगी, जामा मस्जिद (1381)।

4. **कल्याणी, पूर्व में चालुक्यों की राजधानी थी। इस नगरी के सभी मंदिर या तो ध्वस्त कर दिए गए या मस्जिद बना दिए गए।**

क. जामा मस्जिद (1323), मंदिर स्थल पर।

ख. मस्जिद (1406), मंदिर स्थल पर।

ग. महल्ला शाहपुर में मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

घ. मौलाना याकूब की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ड. सईद पीर पाशा की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

च. किले की दीवारें और मीनारें, मंदिर भवन सामग्री से।

छ. नवाब का बंगला, मंदिर भवन सामग्री से।

5. कोहिर

क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. दो मुस्लिम फकीरों की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

6. शाहपुर मस्जिद (1586-87), मंदिर स्थल पर।

7. उद्बल, जामा मस्जिद (1661-62), मंदिर स्थल पर।

बीजापुर जनपद

1. अफजल, महल मस्जिद, त्रिकूटा मंदिर भवन सामग्री से।

2. बदामी, पहाड़ी किले का द्वितीय प्रवेश मार्ग (गेटवे) **विष्णु मंदिर भवन सामग्री से।**

3. बेक्कूनाल, गाँव के बाहर की दरगाह, मंदिर भवन सामग्री से।

4. **बीजापुर, प्राचीन हिन्दू शहर, जिसे मुस्लिम राजधानी बनाया गया। शहर के मंदिरों के भग्नावशेषों से/पर निर्मित भवन।**

क. जामा मस्जिद (1498-99)

ख. आर्क में करीमुद्दीन की मस्जिद (1320-21)।

ग. मंगोली गेट के मार्ग में छोटा मस्जिद।

घ. ख्वाजा सम्बल की मस्जिद (1522-23)।

ड. मक्का मस्जिद।

च. आंडू मस्जिद।

छ. जंगीरी मस्जिद।

ज. बुखारा मस्जिद (1536-37)।

झ. दक्खिनी ईदगाह (1538-39)।

ञ. इब्राहीम द्वितीय आदिल शाह का रोज़ा और मस्जिद (1626)।

ट. गोल गुम्बज या मुहम्मद आदिल शाह की रौजा।

ठ. जोड़ गुम्बद।

ड. नौ गुम्बद।

ढ. शाह मूसा कादिरी की दरगाह।

ण. गगन महल।

त. मिहतार महल।

थ. असर महल।

द. आनन्द महल और मस्जिद।

ध. सात मंजिल।

न. नगर दुर्ग।

प. पीर माबारी खण्डायत की मजार।

फ. पीर जमुना की मजार।

ब. शाहपुर पहाड़ी पर शाह मीरान्जी शम्सुल हक चिश्ती की दरगाह।

5. हडगिन्हली, दरगाह, मंदिर भवन सामग्री से।

6. होरती, मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

7. इंग्लेस्वारा, मुहीउद्दीन की मस्जिद मनिया समाधि की सामग्री से।

8. जिरंकलगी, मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

9. कल्फेरी, चावड़ी गाँव के पास की मस्जिद।

10. ममदापुर

क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. कमाल की मजार, मंदिर स्थल पर।

ग. मक्का के सदले की मजार, मंदिर स्थल पर।

11. नल्तवाड़, मस्जिद (1315), मंदिर भवन सामग्री से।

12. पीरापुर, दरगाह, मंदिर स्थल पर।

13. सल्वाडिगी, मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

14. सरूर, मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

15. शेगाँव, दरगाह, मंदिर स्थल पर।

16. तकली, मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

17. तालीकोटा

क. जामा मस्जिद, जैन मंदिर भवन सामग्री से।

ख. पाँच पीर की मस्जिद और गंज-ए-शहीदां, मंदिर स्थल पर।

18. उटांगी, मस्जिद (1323), मंदिर स्थल पर।

चिकमंगलूर जनपद

बाबा बूढ़न, दादा हयात मीर कलन्दर, दत्तात्रेय मंदिर स्थल पर।

चीतलदुर्ग जनपद

हरिहर, हरिहरेश्वर मंदिर के शिखर पर मस्जिद।

धारवाड़ जनपद

1. अलनावर, जामा मस्जिद, जैन मंदिर भवन सामग्री से।
2. बंकापुर
   क. मस्जिद (1538–39), मंदिर स्थल पर।
   ख. जामा मस्जिद (1602–03), मंदिर स्थल पर।
   ग. मस्जिद और कब्रिस्तान, मंदिर स्थल पर।
   घ. डोंगर की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
   ड. शाह अलाउद्दीन कादिरी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।
   च. किला (1590–91), मंदिर भवन सामग्री से।
3. बलूर, मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।
4. डाम्बल, शाह अब्दुल्ला वली की मजार, मंदिर भवन सामग्री से।
5. डन्डापुर जामा मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।
6. धारवाड़, पहाड़ी पर की मस्जिद, जैन मंदिर को परिवर्तित करके।
7. हगल
   क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
   ख. किले की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
8. **हुबली, 1675 और बाद में औरंगजेब द्वारा बनवाई गई 17 मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।**
9. हुल्गुर
   क. सईद शाह कादिरी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।
   ख. उपरोक्त दरगाह के पास की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

10. लक्ष्मेश्वर, काली मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

11. मिसरीकोट, जामा मस्जिद (1586-87), मंदिर स्थल पर।

12. मोघा, जामा मस्जिद आदित्यदेव मंदिर भवन सामग्री से।

13. रोनेबेन्नूर, कला मस्जिद (1742), मंदिर स्थल पर।

14. साबानूर

क. जामा मस्जिद 1847-48 में पुनर्निर्मित, मंदिर स्थल पर।

ख. खैरूल्लाह शाह बादशाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ग. शाह कमाल की दरगाह और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

गुलबर्गा जनपद

1. चिंलोली, दरगाह, मंदिर स्थल पर।

2. डोर्नहाली, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

3. फिरोजाबाद

क. जामा मस्जिद (1406), मंदिर स्थल पर।

ख. शाह खलीफर्तुरहमान कादिरी की दरगाह (1421), मंदिर स्थल पर।

4. गोबर, दरगाह, रत्नराय जिनालय मंदिर भवन सामग्री से।

5. गोगी

क. अरबा मस्जिद (1338), मंदिर स्थल पर।

ख. पीर चन्दा हुसैनी की दरगाह (1454), मंदिर स्थल पर।

ग. शाह हबीबुल्लाह का चिल्ला (1535-36), मंदिर स्थल पर।

6. **गुलबर्गा, प्राचीन हिन्दू शहर जिसे मुस्लिम राजधानी बनाया गया। निम्नलिखित भवन मंदिर तोड़कर बनाए गए हैं।**

क. महल्ला मोमिनपुरा में कलान मस्जिद (1373)।

ख. शाह बाजार की मस्जिद (1379)।

ग. किले में जामा मस्जिद (1367)।

घ. हाजी जैदा की मजार में मस्जिद-ए-लंगर।

ड. फरमान तालाब के निकट मस्जिद (1353-54)।

च. सईद मुहम्मद हुसैनी बन्दा नवाज गेसू दराज चिश्ती की दरगाह।

छ. शेख मुहम्मद सिराजुद्दीन जुनैदी की मजार।

ज. मराघ के हाजी जैदा की मजार (1434)।

झ. सईद हुसैनुद्दीन की मजार।

ञ. किले की दीवारें और द्वार।

7. गुलशरम, शाह जलाल हुसैनी की दरगाह अज्ञैर मस्जिद (1553), मंदिर स्थल पर।

8. मालखेड़ किले में सईद जफर हुसैनी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

9. सागर

   क. सूफी सरमस्त चिश्ती की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   ख. मुनव्वर बादशाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   ग. आशुर खाना मस्जिद (1390-91), मंदिर स्थल पर।

   घ. किला (1411-12), मंदिर भवन सामग्री से।

10. सेरम, जामा मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

11. शाह बाजार, जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

12. शाहपुर

   क. मूसा कादिरी, मूसा कादिरी की दरगाह (1667-68), मंदिर स्थल पर।

   ख. मुहम्मद कादिरी की दरगाह (1627), मंदिर स्थल पर।

   ग. इब्राहीम कादिरी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

13. यादगीर

   क. आथान मस्जिद (1573), मंदिर स्थल पर।

   ख. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

कोलार जनपद

1. मुल्बागल, हैदरवली की दरगाह, मंदिर स्थल पर।
2. नन्दी, गाँव के पूर्व की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

मांड़्या जनपद

1. पांडवपुर, मस्जिद-ए-आला, मंदिर स्थल पर।
2. श्री रंगपट्टनम्, टीपू सुल्तान द्वारा निर्मित जामा मस्जिद (1787) आंजनेय मंदिर स्थल पर।

मैसूर जनपद

तोन्नूर, सईद सालार मसूद की मजार (1358), मंदिर भवन सामग्री से।

उत्तरी कन्नड़ जनपद

1. भत्कल, जामा मस्जिद (1447-48), मंदिर स्थल पर।
2. हलियाल किले की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

रायचूर जनपद

1. जलदुर्गा, मुहम्मदसरवर की दरगाह, मंदिर स्थल पर।
2. कल्लूर, दो मस्जिदें, मंदिर स्थल पर।
3. कोप्पल

   क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. अरबों की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ग. सैलानी पाया की दरगाह, मंदिर स्थल पर।
4. मानवी, मस्जिद (1406-07), मंदिर भवन सामग्री से।
5. मुद्गल

   क. किले में काटे दरवाजे की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. नई मस्जिद (1583-84), मंदिर स्थल पर।

ग. अली आदिल शाह द्वारा निर्मित दो आशुर खाना, मंदिर स्थल पर।

घ. किला (1588), मंदिर भवन सामग्री से।

6. रायचूर

क. किले में एक मीनार मस्जिद (1503), मंदिर स्थल पर।

ख. किले में दफ्तरी मस्जिद (1498-99), मंदिर भवन सामग्री से।

ग. हजार बेग मस्जिद (1511-12), मंदिर स्थल पर।

घ. किले में जामा मस्जिद (1622-23), मंदिर भवन सामग्री से।

ड. सर्राफा बाजार में जामा मस्जिद (1628-29), मंदिर स्थल पर।

च. किले में काली मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

छ. नौरंगी के भीतर की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

ज. चौक की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

झ. जहानिया मस्जिद (1700-01), मंदिर स्थल पर।

ञ. शाह मीर हसन और मीर हुसैन की दरगाह, मंदिर भवन सामग्री से।

ट. सईद अब्दुल हुसैनी की दरगाह, सिकंदरी गेट, मंदिर स्थल पर।

ठ. बाल हिसार पर पाँच बीबी दरगाह, मंदिर भवन सामग्री से।

ड. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

7. सिंधनूर, गुम्बद के निकट आलमगीरी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

8. तवागेरा, बंदा नवाज की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

शिमोगा जनपद

1. आलमेल, गालिब शाह की मजार, मंदिर स्थल पर।

2. बासवपन्ना, किले के पास की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

3. नगर, टीपू सुल्तान द्वारा बनवाई गई मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

4. सन्ते बेन्नूर, रन्धुल्ला खंन की मस्जिद (1637), रंगनाथ मंदिर भवन सामग्री से।

5. सिराजपुर, चन्नकेशव मंदिर के ऊपर मुहम्मद का बाल रखने के लिए बनाई गई मस्जिद, मंदिर की स्मृतियों को कुचलकर मंदिर स्थल का उपयोग शौचालय की तरह किया जा रहा है।

तुमकुर जनपद

1. सरा

   क. इब्राहिम रौजा, कई मजारें और जामा मस्जिद मंदिरों को परिवर्तित करके।

   ख. मालिक रिहान की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

2. सिरोल, जामा मस्जिद (1696), मंदिर स्थल पर।

केरल

1. कोल्लम, (कोजिकोड जनपद) जामा मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

2. पालक्काड़, टीपू सुल्तान द्वारा निर्मित किला मंदिर भवन सामग्री से।

लक्षद्वीप

1. कल्पेनी, मुहीउद्दीन पल्ली मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

2. कवरती, प्रोत पल्ली मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

तमिलनाडु

चिंगलपुट जनपद

1. अचर्वक, शाह अहमद की मजार, मंदिर स्थल पर।

2. कांचीपुरम्

   क. बड़ी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. आठ दूसरी मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।

   ग. बाबा हमीद वली का गुम्बद, मंदिर स्थल पर।

3. करकट्पला, मुराद शाह मस्तान की मजार, मंदिर स्थल पर।

4. कोवलम्, मलिक विन दीनार (1593-94), मंदिर स्थल पर।

5. मुनरोपेट

   क. मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. शाह अली मस्तान की मजार, मंदिर स्थल पर।

6. पल्लवरम्

   क. पान्चपड्यामलाई की पहाड़ी के मौला पहाड़ और प्राचीन गुफा मंदिर के हॉल में अब नमाज पढ़ी जाती है।

   ख. शेख हुसैन कादिरी उर्फ बूड् शहीद की मजार, मंदिर स्थल पर।

   ग. पूनमल्ले, मीर जुमला की मस्जिद (1653) मंदिर भवन सामग्री से।

7. राजाकोइलपेट्ट, हाजी उमर की मजार, मंदिर स्थल पर।

8. रामपुर, फकीरों की तब्काती का तकिया, मंदिर स्थल पर।

9. रायपेटा, वालाजाही मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

10. वलजाहबाद, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

कोयम्बटूर जनपद

1. अन्नामलाई, कला, टीपू सुल्तान द्वारा मंदिर तोड़कर निर्मित।

2. कोयम्बटूर, टीपू सुल्तान की बड़ी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

3. शिवसमुद्रम्, पीर वल की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

मद्रास (चेन्नै) जनपद

जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

मदुरै जनपद

1. बोडुवरपेट्ट, मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

2. देवीपट्टनम्, बड़ी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

3. गोरि पलैयम्, ख्वाजा अलाउद्दीन की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

4. मदुरा, ख्वाजा अलाउद्दीन की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

5. नीमरपल्ली

   क. मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. मकदूम जलालुद्दीन की दरगाह मंदिर भवन सामग्री से।

6. पुलियगुलम्, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

7. सोरावन्दम्, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

8. तिरूपरंकुणम, पहाड़ी के ऊपर सिकन्दर मस्जिद, ब्रह्म, बौद्ध और जैन मंदिरों के अवशेषों पर।

उत्तरी अरकाट जनपद

1. **अरकोट, मुस्लिमों के आधिपत्य के पूर्व यह मंदिरों का शहर था।**

   क. जामा मस्जिद मंदिर स्थल पर।

   ख. सादतुल्ला खान का गुम्बद, आत्रेय मंदिर भवन सामग्री से।

   ग. टीपू औलिया की मजार और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   घ. सईद हुसैन शाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   ङ. कला की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   च. शाह हुसैन चिशती की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   छ. पापा साहिब की गुम्बद और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ज. शाह सादिक की गुम्बद और कब्रिस्तान, मंदिर स्थल पर।

   झ. शाह अजमतुल्ला कादिरी की मजार और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ञ. शेख नत्थर की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ट. मुराद शाह की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ठ. मीर अरादुल्ला खान की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ड. मौलवी जमाल अली की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ढ. सईद महमूद उर्फ यार पीर का गुम्बद और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ण. चंदा साहिब की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

त. मिस्कीन शाह की मस्जिद और अमीन पीर का गुम्बद, मंदिर स्थल पर।

थ. हजरत उस्मान खान सरवर की मजार और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

द. मुगलानी के मक़बरे में मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ध. गुलाम रसूल खान की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

न. शाह गुलाम हुसैन दरगाही की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

प. हाफिज अब्दुल अजीज की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

फ. हाफिज करीमुल्ला मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ब. ताजपुरा में गुम्बद और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

शहर के बाहर

भ. कातिल पाण्डु सरगुरोह का तकिया, मंदिर स्थल पर।

म. अहमद ताहिर खान की गुम्बद और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

य. मस्जिद, खानकाह, कब्रिस्तान और हसनपुरा में गुम्बद, मंदिर स्थल पर।

र. हजरत अन्तर जाती की गुम्बद और ईदगाह, मंदिर स्थल पर।

ल. साबित अली शाह की तकिया, मंदिर स्थल पर।

व. सैयद करीम मुहम्मद कादिरी की मजार और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

श. सादतमन्द खान की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ष. अबुल हसन जाकिर की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

स. दाऊद बेग की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ह. हजरत शाह नासिर का गुम्बद और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

क्ष. पुंजी की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

त्र. यादुल्ला शाह की मजार, मंदिर स्थल पर।

ज्ञ. रंगीन मस्ज़िद, मंदिर स्थल पर।

अ. पैगम्बर का पदचिह्न, मंदिर को परिवर्तित करके।

2. अर्णि

क. दो मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।

ख. सात शहीदों की दरगाह, मंदिर स्थलों पर।

2. करे, नौलाख गुम्बद, गौतम और विश्वामित्र मंदिर को पविर्तित करके।

4. कावेरीपाक

क. ईदगाह, मंदिर स्थल पर।

ख. तकिया, मंदिर स्थल पर।

ग. तीन मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।

5. नुसरतगढ़, कई मस्जिदें और मजारें (ध्वस्त किले में), मंदिर स्थलों पर।

6. पीरमालिपक, वाजिद शाह, चम्पार पोश की मजार, मंदिर स्थल पर।

7. रमना

क. कमतू शाह की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. शाह सादिक तबकाती की तकियर, मंदिर स्थल पर।

8. **बेल्लूर**

क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. छोटी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ग. नूर मुहम्मद कादिरी, कई मंदिर नष्ट किए, की मजार, मंदिर स्थल पर।

घ. शाह अब्दुल हसन कादिरी की मजार, मंदिर स्थल पर।

ङ. अब्दुल लतीफ जौकी की मजार, मंदिर स्थल पर।

च. अली हुसैनी चिश्ती की मजार, मंदिर स्थल पर।

छ. हजरत अली सुल्तान की मजार, मंदिर स्थल पर।

ज. अमीन पीर की मजार, मंदिर स्थल पर।

झ. शाह लुत्फुल्लाह कादिरी की मजार, मंदिर स्थल पर।

ञ. साहिब पादशाह कादिरी की मजार, मंदिर स्थल पर।

9. बालाजाहनगर, पहाड़ी पर पीर साहिब की मजार और मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

10. वली मुहम्मद पेट्टा, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

रामनाथपुरम् जनपद

1. एरुवडी

क. हजरत इब्राहीम शहीद की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ख. हजरत फखरुद्दीन की मजार, मंदिर स्थल पर।

2. किलाकरी

क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. मुहम्मद का सम अप्पा की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ग. अप्परपल्ली मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

3. पेरियापट्टनम् सैयद सुल्तान वली की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

4. वोलिनोक्कम

क. पल्लीवासल मस्जिद (1417-18), मंदिर स्थल पर।

ख. कटुपल्ली की दरगाह (1428), मंदिर स्थल पर।

5. रामनाथपुरम्, पुरानी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

दक्षिण अरकाट जनपद

1. आनन्दपुर, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

2. चिदम्बरम्

क. लालखान मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

ख. नवल खान मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

ग. ईदगाह मंदिर भवन सामग्री से।

घ. अमीनुद्दीन चिश्ती की मजार, तंदिर भवन सामग्री सें

ड. सैयद हुसैन की मजार, मंदिर भवन सामग्री से।

3. गिंगी

क. मस्जिद (1718), मंदिर भवन सामग्री से।

ख. मस्जिद (1718), मंदिर भवन सामग्री से।

ग. किले की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

4. कावेरीपेट, कलन्दर शाह की मजार, मंदिर भवन सामग्री से।

5. मन्जकुफम, शाह अब्दर्रहीम की मजार, मंदिर भवन सामग्री से।

6. मन्सूरापेट, इतिबार खान की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

7. नल्लिकुप्पम्

क. मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

ख. शेख मीरान साहिब की मजार, मंदिर भवन सामग्री से।

8. पन्नुति

क. मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

ख. नूर मुहम्मद कादिरी का गुम्बद, मंदिर भवन सामग्री से।

9. स्वामीवरम्, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

10. ताराकम्बारी

क. मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. शेख इस्माइल साहिब की मजार, मंदिर स्थल पर।

11. तिरुमलरयनपटनम्, अब्दुल कादिर शमीनी की मजार, मंदिर स्थल

पर।

12. वाराचकुरी, शाह जलाल हुसैनी की मजार, मंदिर स्थल पर।

तंजावूर जनपद

1. अम्मापेट्टा

   क. मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. मुईनुद्दीन हुसैन कादिरी की मजार, मंदिर स्थल पर।

   ग. शाह जाफर की मजार, मंदिर स्थल पर।

2. इलयुर

   क. मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. इनायतुल्लाह दीरवेश की मजार, मंदिर स्थल पर।

   ग. मुहम्मद मसतान की मजार, मंदिर स्थल पर।

   घ. मीरान हुसैन की मजार, मंदिर स्थल पर।

3. काराम्बरी

   क. अरब शहीद की मजार, मंदिर स्थल पर।

   ख. मुब्तला शाह की मजार, मंदिर स्थल पर।

4. कुरिक्याल पलयम्

   क. मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. मकदूम हाजी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

   ग. मकदूम जहान शाह की मजार, मंदिर स्थल पर।

5. कुरकुटि, हसन कादिरी की गुम्बद, मंदिर स्थल पर।

6. कुशलपलयम्

   क. हजरत ताज फिराक बदनशाही, मंदिर स्थल पर।

   ख. हिदायत शाह अरजानी की मजार, मंदिर स्थल पर।

   ग. यार शाह हुसैन शाही की मजार, मंदिर स्थल पर।

7. नागुर

क. मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. कादिर वली शाह की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

8. उरनचेरी पर कुतुबुद्दीन की मजार, मंदिर स्थल पर।

9. विजयपुरम्, सुल्तान मकदूम का गुम्बद, मंदिर स्थल पर।

10. वडयारकरी, बाबा साहिब शाहिद की मजार, मंदिर स्थल पर।

तिरुचिरापल्ली जनपद

1. पुत्तूर, मजार, मंदिर भवन सामग्री से।

2. **तिरुचिरापल्ली**

क. नत्थार शाह वली की दरगाह, शिव मंदिर को परिवर्तित करके, **शिवलिंग को लैम्प पोस्ट की तरह प्रयुक्त किया गया।**

ख. मस्जिद-ए-मुहम्मदी, मंदिर स्थल पर।

ग. बाबा मुहीउद्दीन सरमस्त की मजार, मंदिर स्थल पर।

घ. हजरत फतुल्लाह नूरी की मजार, मंदिर स्थल पर।

ड. शम्स परान की मजार, मंदिर स्थल पर।

च. सैयद अब्दुल वहाब की मजार, मंदिर स्थल पर।

छ. शाह फजुल्लाी कादिरी की मजार, मंदिर स्थल पर।

ज. शाह नसीरुद्दीन की मजार, मंदिर स्थल पर।

झ. फरीदुद्दीन शहीद की मजार, मंदिर स्थल पर।

ञ. हजरत शाह मसतान की मजार, मंदिर स्थल पर।

ट. तिनूर में सैयद जैनुल आबदीन की मजार, मंदिर स्थल पर।

ठ. सैयद करीमुद्दीन कादिरी की मजार, मंदिर स्थल पर।

ड. अलीमुल्लाह शाह कादिरी की मजार, मंदिर स्थल पर।

ढ. शाह इमामुद्दीन कादिरी की मजार, मंदिर स्थल पर।

ण. काकी शाह की मजार, मंदिर स्थल पर।

त. ख्वाजा अमीनुद्दीन चिश्ती की मजार, मंदिर स्थल पर।

थ. ख्वाजा अहमद शाह हुसैन चिश्ती की मजार, मंदिर स्थल पर।

द. शाह का की मजार, मंदिर स्थल पर।

ध. शाह जमालुद्दीन हुसैन चिश्ती की मजार, मंदिर स्थल पर।

न. कायिम शाह की, ज़िसने 12 मंदिर ध्वस्त किए, मजार, मंदिर स्थल पर।

प. मुसेफ शाह सुहरावर्दीया की मजार, मंदिर स्थल पर।

फ. इत्तेफाक शाह की मजार, मंदिर स्थल पर।

ब. सैयद जलाल कादिरी की मजार, मंदिर स्थल पर।

भ. मत्ताब शाह शिराजी सुहरावर्दीया की मजार, मंदिर स्थल पर।

म. हाजी इब्राहीम की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

3. वलिकोन्डापुरम्

क. किले के सामने की मस्जिद, मंदिर को परिवर्तित कर।

ख. मस्जिद के पास की मजार, मंदिर को परिवर्तित कर।

ग. शेर खान की मस्जिद (1690), मंदिर स्थल पर।

घ. पुरानी जाम मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

तिरुनेलवेल्ली जनपद

1. अम्बा समुद्रम्, ध्वस्त किले के पास हजरत रहमतुल्लाह की मजार, मंदिर स्थल पर।

2. कयलपट्टनम्

क. पेरियापल्ली मस्जिद (1336-36)

ख. सिरुपल्ली मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ग. नयनार मुहम्मद की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

घ. मरुकुडियरपल्ली मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

3. तिरुनेल्वेल्ली, जामा मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

आंध्रप्रदेश

आदिलाबाद जनपद

महुर, पहाड़ी पर किले में मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

अनन्तपुर जनपद

1. गुटी, पहाड़ी किले का प्रवेश द्वार, मंदिर भवन सामग्री से।
2. कोडिरी, जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
3. कोनाकोण्डला, बाजार में मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।
4. पेणुकोंडा
   क. किला, मंदिर भवन सामग्री से।
   ख. किले में मस्जिद, मंदिर को परिवर्तित करके।
   ग. शेर खान की मस्जिद (1546) मंदिर को परिवर्तित करके।
   घ. बबय्या की दरगाह, ईश्वर मंदिर को परिवर्तित करके।
   ड. जामा मस्जिद (1664-65), मंदिर स्थल पर।
   च. शाह फकरुद्दीन की दरगाह (1293-94), मंदिर स्थल पर।
5. तडपत्री
   क. जामा मस्जिद (1695-96), मंदिर स्थल पर।
   ख. इंदगाह (1725-26), मंदिर स्थल पर।
6. थुम्मला, मस्जिद (1674-75), मंदिर स्थल पर।

कुडप्पा जनपद

1. कुडप्पा
   क. भाप साहिब की मस्जिद (1692), मंदिर स्थल पर।
   ख. ईदगाह (1717-18), मंदिर स्थल पर।
   ग. बहादुर खान की मस्जिद (1722-23), मंदिर स्थल पर।
   घ. शाह अमीनुद्दीन गेसू दराज की दरगाह (1736-37), मंदिर स्थल पर।

2. दुव्वुरु, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

3. गांडीकोट, जामा मस्जिद (1690-91), मंदिर स्थल पर।

4. गुण्डलाकुंटा, दस्तगीरी दरगाह, मंदिर स्थल पर।

5. गुरूमकोण्डा, कला और कुछ अन्य मुस्लिम भवन, मंदिर भवन सामग्री से।

6. जम्मलमडुगू, जामा मस्जिद (1794-95), मंदिर स्थल पर।

7. जंगलपल्ली, दस्तगीर की दरगाह, जंगम मंदिर को परिवर्तित करके।

8. सिद्धवतम्

   क. कुतुब शाही मस्जिद (1808), मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. जामा मस्जिद (1701), मंदिर भवन सामग्री से।

   ग. बिस्मिल्ला खान कादिरी की दरगाह, मंदिर भवन सामग्री से।

   घ. किला और प्रवेश द्वार, मंदिर भवन सामग्री से।

   ड़. चौक की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

9. वुतुकुरु

   क. नलिगोतो की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. पुत्तुमियापेट की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

पूर्व गोदावरी जनपद

बिक्कावोलु, मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

गुन्टुर जनपद

1. निजामनट्नम, शाह हैदरी की दरगाह (1609), मंदिर स्थल पर।
2. विणुकोण्डा, जामा मस्जिद (1640-41), मंदिर स्थल पर।

हैदराबाद जनपद

1. चिक्कलगोडा, मस्जिद (1610), मंदिर स्थल पर।
2. दरगाह, शाह वली की दरगाह (1601-02), मंदिर स्थल पर।

3. गोलकुण्डा

क. जामा मस्जिद, बाल हिसार, मंदिर स्थल पर।

ख. तारामती मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

4. **हैदराबाद**

क. शाह मूसा कादिरी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ख. पिरुलकोंडा पहाड़ी की मस्जिद (1690), मंदिर स्थल पर।

ग. टोली मस्जिद (1671), मंदिर भवन सामग्री से।

घ. मियां मिश्क की दरगाह (1680), मंदिर स्थल पर।

ड. मोमिन चुप की दरगाह, आलियाबाद (1322-23), मंदिर स्थल पर।

च. हाजी कमाल की मस्जिद (1657), मंदिर स्थल पर।

छ. बेगम मस्जिद (1593), मंदिर स्थल पर।

ज. इस्लाम खान नक्शबन्दी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

झ. शाह दाऊद की दरगाह (1369-70), मंदिर स्थल पर।

ञ. जामा मस्जिद (1597), मंदिर स्थल पर।

4. मैसाराम, **गोलकुण्डा विजय के उपरान्त औरंगजेब ने 200 मंदिरों को ध्वस्त कर मस्जिद का निर्माण किया।**

5. सिकन्दराबाद, कदम रसूल, मंदिर स्थल पर।

6. शेखपेट

क. शेख की मस्जिद (1633-34), मंदिर स्थल पर।

ख. सरायवली मस्जिद (1678-79), मंदिर स्थल पर।

करीमनगर जनपद

1. धरमपुरी, मस्जिद (1693), त्रिकूटा मंदिर स्थल पर।

2. एलङ्गल

क. मंसूर खान की मस्जिद (1525), मंदिर स्थल पर।

ख. आलमगीरी मस्जिद (1696), मंदिर स्थल पर।

3. कालेश्वरम्, आलमगीरी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

4. सोनीपेट, आलमगीरी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

5. वेमलवाड़ा मुस्लिम फकीर की मजार, मंदिर स्थल पर।

कृष्णा जनपद

1. गुडीमेट्टा, किले में मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।
2. गुड्डुरु, जामा मस्जिद (1497), मंदिर भवन सामग्री से।
3. गुंडूर, जामा मस्जिद, मंदिर को परिवर्तित करके।
4. कोण्डापल्ली

   क. मस्जिद (1482), मंदिर स्थल पर।

   ख. शाह अब्दुल रज्जाक की मजार, मंदिर स्थल पर।
5. कोण्डाविडु

   क. मस्जिद (1337), मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. बरंदौला की दरगाह, मंदिर भवन सामग्री से।

   ग. आदम की कदम शरीफ, मंदिर को परिवर्तित करके।
6. मछलीपट्टम

   क. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. ईदगाह, मंदिर स्थल पर।
7. नंदीग्राम, जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
8. पेड़ाना, इसमाइल की मस्जिद,, मंदिर स्थल पर।
9. राजकोंडा, मस्जिद (1484), मंदिर स्थल पर।
10. तेंगड़ा, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
11. तुर्कशालेम, गालिब शहीद की दरगाह, मंदिर स्थल पर।
12. वाड़पल्ली, नरसिंहस्वामी मंदिर के पास मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।
13. विजयवाड़ा, जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

कर्नूल जनपद

1. अडोणी

   क. जामा मस्जिद (1668-69) कुछ मंदिरों की सामग्री से।

   ख. पहाड़ी में मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

   ग. किला (1676-77), मंदिर भवन सामग्री से।

2. कम्बम्

   क. जामा मस्जिद (1649), मंदिर स्थल पर।

   ख. गचिनाला मस्जिद (1729-30), मंदिर स्थल पर।

3. हावली, जामा मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।
4. करीमुड्डुला, दरगाह, अक्कादेवी मंदिर भवन सामग्री से।
5. कोट्टाकोट, जामा मस्जिद (1501), मंदिर स्थल पर।
6. कुर्नूल

   क. पीर साहिब का गुम्बद (1637-38), मंदिर स्थल पर।

   ख. जामा मस्जिद (1667), मंदिर स्थल पर।

   ग. लाल मस्जिद (1738-39), मंदिर स्थल पर।

7. पसुपला, कलान मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
8. संजनमल, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
9. सिद्धेश्वरम्, अशुरखाना, मंदिर भवन सामग्री से।
10. यादवल्ली, मजार और मस्जिद, मंदिर स्थलों पर।
11. जुहरापुर, कादिर शाह बुखारी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

महबूबनगर जनपद

1. आलमपुर, कला की मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।
2. जातप्रोल, सईद शाह दरवेश की दरगाह, मंदिर भवन सामग्री से।
3. कोडान्गल

   क. हजरत निजामुद्दीन की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ख. जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

4. कुण्दुग, जामा मस्जिद (1470-71), मंदिर स्थल पर।
5. पारगी, जामा मस्जिद (1470), मंदिर स्थल पर।
6. सोमसिला, कमालुद्दीन बाबा की दरगाह (1642-43), मंदिर स्थल पर।

मेडक जनपद

1. अण्डोल, पुरानी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
2. कोमाटूर, पुरानी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
3. मेडक

   क. मुबारक महल के पास मस्जिद (1614), विष्णु मंदिर स्थल पर।

   ख. किला, मंदिर भवन सामग्री से।
4. पलत, मस्जिद, मंदिर स्थल पर।
5. पाटनचेरू

   क. जामा मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. शेख इब्राहिम (मकदूम) की दरगाह (1583), मंदिर स्थल पर।

   ग. अशरफखाना, मंदिर स्थल पर।

   घ. किला (1698), मंदिर भवन सामग्री से।

नलगोंडा जनपद

1. देवरकोंडा

   क. कुतुबशाही मस्जिद, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. शरीफुद्दीन की दरगाह (1579), मंदिर स्थल पर।

   ग. कादिर शाह वली की दरगाह (1591), मंदिर स्थल पर।
2. गाजीनगर, मस्जिद (1576-77), मंदिर स्थल पर।
3. नलगोण्डा

क. गढ़ी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

ख. शाह लतीफ की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

ग. कुतुब शाही मस्जिद (1897), मंदिर स्थल पर।

4. पंगल, आलमगीरी मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

नेल्लूर जनपद

1. कण्डुकुरू, चार मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।
2. नेल्लूर, दरगामित्वा दरगाह, अक्कासालीश्वर, मंदिर भवन सामग्री से।
3. पोडाइल, दरगाह, मंदिर स्थल पर।
4. उदयगिरि

   क. जामा मस्जिद (1642–43), मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. छोटी मस्जिद (1650–51), मंदिर भवन सामग्री से।

   ग. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

निजामाबाद जनपद

1. बालकुण्डा

   क. पत्थर की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ख. ईदगाह, मंदिर स्थल पर।

2. बोधन

   क. देवल मस्जिद, जैन मंदिर को परिवर्तित करके।

   ख. पत्थर की मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

   ग. आलमगीरी मस्जिद (1654–55), मंदिर स्थल पर।

3. डुडकी, अशरफखाना मंदिर भवन सामग्री से।
4. फतुल्लापुर, मुआस्करी मस्जिद (1605–06), मंदिर स्थल पर।

उस्मानाबाद जनपद

औसा, जामा मस्जिद (1680–81), मंदिर स्थल पर।

रंगारेड्डी जनपद

महेश्वर, मस्जिद (1687) मदन्ना पंडित के मंदिर के स्थान पर।

श्रीकाकुलम् जनपद

1. इच्चापुरम् कुछ **मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर।**
2. कलिंगपटनम, सैयद मुहम्मद मदनी की दरगाह (1619-20), मंदिर भवन सामग्री से।
3. श्रीकाकुलम्

   क. जामा मस्जिद (1641-42), मंदिर स्थल पर।

   ख. बन्दे शाह वली की दरगाह (1641-42), मंदिर स्थल पर।

   ग. अटारवाली मस्जिद (1671-72), मंदिर स्थल पर।

   घ. बुढानुद्दीन औलिया की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

विशाखापट्नम जनपद

1. जयनगरम् दरगाह, मंदिर स्थल पर।
2. विशाखापट्नम, शाहमदनी की दरगाह, मंदिर स्थल पर।

वारंगल जनपद

जाफरगढ़, जामा मस्जिद, मंदिर स्थल पर।

पश्चिम गोदावरी जनपद

1. एलुरु

   क. किला, मंदिर भवन सामग्री से।

   ख. सवाई मस्जिद, मंदिर को परिवर्तित करके।

   ग. काजी हाउस, सोमेश्वर मंदिर भवन सामग्री से।

2. नीड़वोलु, मस्जिद, महादेव भवन सामग्री से।
3. राजमुन्दरी, जामा मस्जिद (1324) वेणुगोपालस्वामिन् मंदिर को परिवर्तित करके।



We acknowledge our gratitude to the Hindu Writers Forum 129B-MIG, Rajouri Garden, New Delhi-110027 for allowing this book to be reprinted (Nov. 2001 edition)

Sanskritik Gaurav Sansthan

Why did the Muslims destroy Hindu temples*

ANWAR SHAIKH

Why did the Muslims destroy Hindu temples?

Can one say that it was an excuse to plunder India, 'and an attempt to spread the message of the Koran?

Though there is some truth in both the assertions, the reality is psychological, whose roots go back into the ambitions of the Prophet Muhammad himself. This statement may be somewhat ambiguous and thus requires explanation.

Like the physical order of the universe, the social structure of mankind is also hierarchical, that is broadest at the base and narrowest at the top. This is the reason that an organisation is not, possible without observing this principle. Thus, a nation of several million people is governed by a government of twenty to thirty members, who are themselves headed by one person called the Prime Minister, President, Dictator or King. This truth was represented by the conduct of Alexander, the Great, who believed in a universal monarchy.

What are the connotations of this statement? It means that **humans are endowed with a psychological peculiarity, which may be described as Dominance Urge;** it goads people individually and collectively to dominate others. One can see this urge in operation during political elections when competing candidates use all methods at their disposal to gain power; the concepts of morality, munificence and mercy are shouted at top voice, but are usually rooted in mischief, mordacity and malevolence. The urge of dominance admits only one conduct which leads to victory. **Hence, might is right,**

* Reprinted from **Idolatory, Islam and India** published earlier by Society of Hindu Missionaries, Bombay, (1995)

and the idea of "right as might" acts just as a deceptive joke to appease conscience.

Urge of Dominance

In fact, urge of dominance is a peculiarity of all animates and expresses itself through antagonism. Take, chickens, for example. Chicken "A" pecks chicken "B" simply to express its physical superiority and chicken "B" does it to chicken "C" for the same reason. Not only that, if C becomes stronger, it may turn on B to establish itself as the powerful.

Without urge of dominance, nobody will try to rise to the top, create law and order and compete with others. However, urge of dominance also has its bleak side which occasionally clouds its effulgence as can be observed in the destruction of Hindu temples. Even great countries have suffered a similar fate at the hands of foreign predators. England was subjected to plunder, persecution and perdition by the Vikings for over 250 years. **Subjugation of nations by outlandish raiders through sword and fire is for establishing their dominance.**

Urge of dominance has an unsual aspect; it does not always die with its possessor. When a mundane ruler breathes his last, this urge may die with him, but in people, known as prophets, it proves to be immortal. **A prophet commands people from his grave what to do and what not to do; he succeeds in doing so through the body of laws which he claims to be of divine origin, and leaves behind.** Those who follow them qualify for heaven, and those who defy them go to hell. These laws are, in fact, a .product of the prophetic mind purporting to impress his power on the minds of his followers through a system of reward and punishment, no matter how imaginary.

The Islamic Law devised 1400 years ago is an example in point. Pakistan. was created half a century ago to practise this law but people are still awaiting its introduction. The reason is simple; it is not workable. In fact, Pakistan follows the Common Law of England, which is totally averse to the Muslim traditions. The Islamic Law is the legacy of Muhammad, requiring his followers to acknowledge his supremacy through obedience to his legal code. It cannot be of Divine origin because, this universe

and all that breathes is kept in order by the principle of change which demands constant adjustment. Allah does not seem to realise that humans live in a changing world and do not need static laws, devised fourteen centuries ago! After giving man free will, which enables him to make laws to suit his changing circumstances, He could not have interfered with him by forcing him to observe the archaic laws which have no relevance to his problems.

From the above discussion, one concludes that prophethood is the highest expression of dominance urge. Since **it is the prophetic dominance-urge which caused havoc to the Hindu temples and culture, it is appropriate to delve deeper into its make-up and purpose.**

Prophet and Prophetism

A prophet is a person who claims that he is the *vicar* or lieutenant of God on earth. He stresses that he carries the message of the Almighty who is the Creator of this universe and anxious to make man righteous by waging war against evil. The prophet insists that God does not communicate with anyone directly' but through him. Since he is the divine medium, whosoever wants to approach the Creator must do so through his agency or perish. **Yet the prophet declares that praise (worship) belongs to God; he himself is His humble servant, and does what is told by the Lord.**

In fact, prophethood is a stratagem to project one's self as God in the guise of humanity. By asserting himself to be the agent of God, the prophet asserts his own righteousness by awarding himself a certificate of behavioural excellence irrespective of what he really is; the presumption is that God shall not appoint someone His agent, who has a second-rate character. A part of this stratagem is the assertion that the prophet has no axe to grind in it; whatever he does, he undertakes to obey the Lord. This impersonal approach is a sharp psychological weapon to convince people of the prophetic mission.

Once we look into the nature of prophetic claim, its righteousness soon loses its radiance. If God is the Creator, and He is so anxious for man to go straight, He would have surely designed human nature in such a way that he could not

err. **The God who depends on the good-will of a man, who calls himself a "prophet" cannot be more than a play-thing, and does not have the power to check the prophet from twisting His Word if he so wishes.** This is a logical conclusion; God cannot stop it." Other people from doing what they want to do, how can he coerce the wilful actions of a prophet, who is obviously a clever and determined man? **The God who is "dependent on a man, has a lower stature than him. This is the real purpose of prophethood;** a prophet is a man who aspires to be acknowledged as God indirectly because it is much easier to proclaim one's prophethood than Godhead.

Frankly-speaking, one ought to say that the device of prophethood is not suited to spreading the truth by its very nature; making the prophet an absolute medium of Divine instruction, limits the Godly purpose; one man, no matter how clever, could not reach the whole world. It is especially true in terms of medieval ages. Acquainting mankind with the Divine Will would have been far more effective if the Lord created them with a mechanism to receive His message directly. Since He has not done so, He obviously needs no prophets, who are the cause of social strife, mutual hatred and wars. As man is endowed with intelligence and free will, he is quite capable of steering his own ship of life. It amounts to self-contradiction on part of God to coerce the intelligence and free will of man by sending messengers. In fact, the mere **concept of prophethood has an air of ridiculing God.**

Of course, a prophet declares that praise (worship) belongs to God, and he himself appears to be praising and worshipping Him. This is, in fact, mockery of Godhead for two reasons: firstly, worship is the worst type of flattery, **and it is well known that a lover of sycophancy has a dwarfed, devious and detestable personality because it seeks to destroy the dignity, decorum and distinctiveness of others by forcing them to demean, degrade and debase themselves.** A person with a flattened ego is like a bird with trimmed wings which loses the ability to fly higher. The purpose of life is to elevate ego with moral splendour, a superb will and sense of personal greatness which come from being upright and serving the cause of fellow-beings, and not by crying, creeping and

serving and crawling before an imaginary God, whose arrogance knows no bounds.'

Idol Worship

The second reason is more profound but crafty. In fact it is a piece of psychological chicanery: The truth, as we know, is that the concrete attracts and holds attention far more easily than the abstract. This is the reason that modern methods of teaching make use of toys, pictures, drawings, etc., instead of relying on mere verbal instructions, which are less effective for being abstruse and thus usually beyond the reach of imagination. **The concrete objects serve as visual aids to comprehend facts and the reality, behind them. This is the philosophy of idol worship**, All devotees know that a statue is just a stone, a piece of wood or a lump of clay, but their shapes help impart understanding of the meaning of reality. **It is a "symbolical representation" of the truth**. Though there is no mention of idol-worshtp or temples in the Rigveda, I am inclined to think that the origin of organised idolatory lies in India. The reason is, the Vedic people believed that there is a power of divine origin behind every natural phenomenon such as lightening, cloud, fire, wind, etc. That power, they referred to as god or goddess, and adored it.

These physical phenomena did have visibility: lightening could be seen, thunder could be heard, wind could be felt. They were glimpses of the gods and goddesses lurking behind these natural processes. Eventually, it led to the creations of idols representing the truth, the ordinary worshipper accorded godly status to the idol itself. As every idol identified a particular natural phenomenon, it did not represent the totality of Divine Power individually. Though worshippers were particularly enthusiastic about the greatness of the statues they worshipped, they did not revile the idols of other devotees because of their belief that they, too, were divine for representing natural forces. This is what created pantheism, i.e., the doctrine that identifies God with the universe, leading to the worship of all gods. Oneness of God became ascendant, almost every nation followed the model of a Hindu temple which housed ail the gods. Thus jealousy among the gods did not exist, and if it did, lacked the force to engenderd sectarian

animosity and carnage. **In fact, the coexistence of idols prompted the attitude of "live and let live."**

The device' of prophethood is very similar to the idols as far as they act as the symbols or visual aids to recognise the divine power or deity concealed behind them, and eventually worshipping the idols themselves and not the deity concerned. **When a person claims to be a prophet, he projects himself as the shadow, and God as the Reality, but as he possesses an immense dominance- urge, he is extremely anxious to reverse the order of priority, that is people should think of the shadow as the Reality and of Reality as the shadow. This inverse ratio of relationship is the real goal of prophethood.** The difference between idolatory is: (a) people worship statues through ignorance, (b) alternatively they know them to be mere visual aids, having no divinity in themselves.

I ought to add that hypocrisy is no part of idolatory because it is brought about by ignorance or the fact that a statue is just a visual aid. On the contrary, prophethood lacks sincerity because it is the goal of a prophet to be treated as God without taking off his mantle of humanity. It is done by exaggerating the wonders of the prophet to such an extep that he begins to look the reality, and God recedes into to background as shadow. This reversal in terms of power and reverence imitates the principle and practice of idolatory whereby people take the idol for the Reality and forget all about Reality itself.

Judaism and Idolatory

Since Islam is an offshoot of Judaism, it may be helpful to illustrate the issue with reference to Moses, the founder of the Jewish nation and its philosophy. It was Moses who brought out of Egypt, the Jews who had been subjected to cruelty and hard labour for over four centuries. They had lost their moral dignity and intellectual capacity through an incessant pressure of torment, tyranny and torture. The long servitude had made them submissive, and receptive to suggestion, Moses, who had been brought up in Egypt as a prince, was not only endowed with high capabilities but also had a tremendous urge of dominance. With these qualities went his stupendous love for his people whom he wanted to

make into a great nation. This extraordinary man had the ability to turn his own ambition and national dignity into a harmonious whole.

As the Jewish history shows, he projected himself as the model of behaviour by declarinq himself as the law-giver. But he did not say that the laws were invented by him. Following the old Semitic tradition, he announced that he had been appointed as the Vicar (prophet) by God, who had revealed His will through the laws which must be obeyed to escape the Divine condemnation. He knew that the nationhood of the Jews, who were no more than a rabble at that time, could not be affected without giving them a common measure of identity. So he declared:

(1) Yahwe is the God of Israel.t(the Jews) who are his chosen and blessed people.

(2) To make Godhead of Yahwe as the foundation stone of the Jewish nationhood, he assured them that the Lord would not forsake them (**Deuteronomy** 4; 31) provided they kept his law. The first commandment says: "You shall have no other gods before me."

The Bible goes even further to declare that the extreme love is to be reserved for God: "And thou shalt love the Lord thy God with all thine heart, and with all thy soul, and with all thy might." (***Deuteronomy*** 6 : 5).

To make sure that his divine order is taken seriously, (**Deuteronomy** 5: 9) spells out in no uncertain terms that the Jewish God is a jealous God, who visits the iniquity of the fathers upon the children unto the third and fourth generation of them who hate Him i.e. worship someone other than of Yahwe.

With a view to inculcating this message still further into the J.ewish heart, (**Exodus** 22: 20) declares: ***"He that sacrificeth unto any god, save unto the Lord only, he shall be utterly destroyed."***

Here I seem to be contradicting myself because Moses attaches supernatural authority and reverence to God and not himself. This is the sophistication of the doctrine of revelation or prophethood. The concept of God is abstract and therefore cannot be easily comprehended by the masses who need a

visual aid for proper understanding. Once people have confirmed their faith in God, the prophet, who is His sole medium of approach, projects himself as the Symbol of Divinity the same way as an idol acts as the representation of God. The stratagem lies in the fact that prophet looks uninterested in the divine honour, yet he bestows so much sanctity on himself that he begins to look God's superior, and people actually adore him instead of God, who ranks as a euphemism. ***Thus, in fact, it is the prophet who is jealous of idols and everything else which may be adored. Therefore, he wants to see no other idol except his own and insists on their destruction.***

As the story goes, worship of the molten calf by the Jews kindled Yahwe's jealousy. He appears in divine glory and intends to consume the children of Israel with his boiling wrath. This gives Moses a chance to establish his superiority over God. He tells Yahwe impolitely that He is about to do a wicked thing against his own people and shames Him by asserting what the Egyptians would say if He destroyed them. After all, Yahwe had gone out of the way to secure the release of the Jews from Egypt.

Moses commands the Lord to refrain from this evil and repent. (**Exodus** 32: 12-14). What an event it becomes! God surrenders to man! Yet the Jews claim that their faith is monotheistic. I must add that this is not the only occasion when Moses, the Prophet, humiliates God in front of everyone. In an episode of similar nature when the Jews denigrate the Promised Land, and want to return to Egypt, Yahwe's indignation reaches boiling point and He threatens to kill them all. Moses steps in and shames God publicy. He yields to Moses as usual (**Numbers** 14: 11-20).

In conjunction with the above events, one should also remember the following episode described in chapter 32 of **Exodus**:

As Moses took longer to return from God, his people contributed golden earings to make a molten calf to worship it. God tells Moses to rush back to his people who have corrupted themselves. As he came near the camp, he found them dancing round the calf. Moses' anger knew no bounds; he burnt the calf in the fire, and ground it to powder, which he dissolved in water and made the children of Israel drink.

Had Moses left the molten calf to stand, it would have become a symbol of divinity, and eventually the Divine. He could not accept this situation because he had assumed the status as the sole Medium of God.

Islam and Idolatory

This Semitic tradition was enthusiastically followed by the Prophet Muhammad, who repeatedly 'claimed that Islam was not a new faith but the same religion as promulgated by Adam, Noah, Ibrahim, Moses and Jesus. He called- himself the last exponent of this faith. **He hated idols, and advocated their destruction because he himself wanted to be treated as an idol to be worshipped.** It seems a crazy theory, but it happens to be the truth. To understand it, one must bear in mind that Allah was originally an idol of the Kaaba where it was worshipped by the Quresh, clan. of the Prophet. I shall demonstrate later, Muhammad was inspired to idolise himself by Allah-worship. He destroyed all statues of Kaaba including that of Allah, yet he raised Allah to the status of God who is the Almighty, the Creator and the Omnipotent. He did so to replace Allah's statue with himself as the symbol of divinity. He knew that it is the symbol of divinity, i.e., the idol, which eventually comes to be worshipped as God.

Now I may provide evidences in support of my claim :

1. Following the Mosaic model, first he claimed that Allah, the Islamic God, has forced him into accepting prophethood. (**Sahih Muslim**: 301)
2. In the beginning, to impress upon people that he had no axe to grind the matter, he asserted: ***"There is no God but Allah and Muhammad is His Messenger"***. This is the basic belief of Islam and is called Shahadah. Until he gained a large following which guaranteed him suzerainty, he projected himself as a mortal who was entrusted with the duty of Allah's message. See for yourself:
   (a) "The Koran calls the Prophet a servant". (**The Cow** 20).
   (b) "He does not know the Unseen". (**Cattle**: 50)
   (c) "He does not have the power to perform miracles". (**Thunder**: 5)".

(d) " ... I have only been commanded to serve God, and not to associate aught with Him. To Him I call, and to Him turn". (**Thunder**: 35)".

(e) **'The Prophet, being a mortal, is equally subject to Allah's reward and punishment:** "If He will, He will have mercy on you (Muhammad), or if He will, He will chastise you" (**The Night Journey**: 55)

(f) The Prophet is warned by Allah: "Set not up with Allah another God, or you will be cast into Gehenna (Hell), reproached and condemned". (**The Night Journey**: 40) So far the Prophet has claimed that he is just a human who has been forced by Allah to convey His message to the people. He desperately needs this approach to convince people that he is simply discharging his duty. Thus it is easier for the masses to listen to him and believe him, but when he becomes powerful enough and can stand on his own, he discards this style and expresses himself as an integral part of Allah:

(g) It is no longer enough to be God only: "(Obey God and the Messenger, (Muhammad). (**The House of Imran**, 25)

(h) "Who so obeys God and His Messenger, He will admit him to gardens .. ": (**Women**: 15)

(i) As the Prophet gets stronger, he becomes a co-sovereign with Allah because whatever they do, they do it together, and people are not left with any choice but to obey the decision:

"It is not for any believer, man or woman, when God and His Messenger have decreed a matter, to have the choice in the affair. Whosoever disobeys God and His Messenger has gone astray into clear error". (**The Confederates**: 35)

Gradually, the Prophet who was once a mortal and Allah's servant, and then an equal partner in Godhead, now raises himself to the status of real God, and Allah Himself becomes Muhammad's devotee. It sounds blasphemous, but this is how the Koranic truth is here is the authority:

" God and His angels pray peace to the Prophet, 0 believers, do you also bless him, and pray him peace." (**The Confederates** : 55)

Praying peace is the highest form of worship. It is very much like the devotional movement within Hinduism known as Bhakti which came into being during second or third century A.D. The

Bhakti attitude has been inspired by the Bhagavadgita though Ramayana and Puranas have also contributed towards it. Bhakti means the intense emotional attachment and love of a devotee to his personal God. Though a Hindu can choose any of his gods as the centre of his devotion, it has been particularly developed around Vishnu represented by his two earthly incarnations, namely, Rama and Krishna. The Hindu worship includes the recitation of God's name, singing of hymns in his praise, undertaking pilgrimages to the places associated with him, adoring him in shrines, private meetings and temples as well as through charitable acts .

The Muslims, especially of the Indian sub-continent, have adopted the same attitude towards the Prophet: they have developed a highly emotional cult known as "/shq-e-Rasool" i.e. the intense love of Muhammad. This devotion is so great that a priest, politician or "pioneer" can easily mislead the Muslims in the name of Muhammad, and make them do anything, no matter how irrational.

The Muslims hold exclusive meetings to recite the name of Muhammad for hours, sing his praises endlessly, visit the holy places and even recite his name in the regular daily prayers.

It is amazing that when the Hindus pray to their gods with the aid of their statues, which are symbolic representations of the reality, they are dubbed as idolators, but when the Muslims resort to similar practices, they become monotheists! In fact, they carry the magic of this riddle even further. **In Hinduism it is inevitably man who worships God, but in Islam, both angles and Allah worship Muhammad by praying peace to him!**

Muhammedanism and Idolatry

Islam is essentially the cult of Muhammad- worship, yet it is

called the True Religion of God, instead of being termed as Muhammadanism. How did the Prophet create such a large band of followers, who worship him but claim to prostrate before God?

One can find the answer to this enigma by considering the following facts:

1. He destroyed the statue of Allah which was housed in the Kaaba; it was considered the most sacred idol of the Arabs because people took it for the real God owing to ignorance and tradition. As long as the statue of Allah existed, nobody could take the place of Allah because His statue was His divine symbol. It had to be demolished by someone to present (12) himself as the divine symbol of Allah. Muhammad did that by projecting himself as the sole representative of Allah on earth, and like other idols came to be treated as the real God. He chose Allah because it represented his tribe and was considered the most sacred and powerful.

2. To further his cause, the Prophet, claimed that he was sent into this world as mercy i.e love for mankind:

   "We have not sent you, except as mercy unto all beings." (***The Prophets:*** 100) By projecting himself as love of his followers. There are several Hadiths which ardently advocate for the love of Muhammad. For example: "No person attains faith, till I am dearer to him than the persons of his household, his wealth and the whole of mankind." (**Muslim Sahih**, Vol. 1 :70)

3. To be obeyed to the dot, he claimed that he was the divine model of behaviour and must be copied by all his followers: **"You (believers) have a good example in God's Me~ssenger for whosoever hopes for God and the last Day." (The Confederates:**20)

   It is clearly stated herein that whoever wants to go to paradise ("hopes for God and the last day") must imitate the behaviour pattern of the prophet. This is what Sinnah is; all Muslims want to live as Muhammad did, even to the minor details such as eating, drinking, walking, talking, sleeping, dressing, etc. **In fact, the Prophet has come to control the psyche of his followers.**

4. Intercessory power of the Prophet is the master stroke of his divinity. I may briefly state here the Koranic attitude for the benefit of readers; it repeatedly states that on the last Day, it is exclusively for Allah to decide whether a person will go to heaven or hell. To suit Muhhamad's purpose, as in several other important affairs, the Koran changes its tone and eventually states:

"On that Day no intercession availeth except (that of) him unto whom the Beneficient (God) hath given leave and whose He accepteth." (**TA HA**: 109)

This point is well explained by the following Hadith (**Sahih Muslim**: Vol. 4:5655).

"I will be the first intercessor (मध्यस्थ) and the first person whose intercession will be accepted (by Allah)" .

It means that the Prophet has the power to force Allah to do whatever he wills. He will send his followers to paradise even if they are murderers, rapists, thieves and liars but shall specify hell for all non-believers even if they have been highly riqhteous, The Koran states :

"Truly this is the word of a nobel Messenger having power, with the Lord of the Throne secure, obeyed, moreover trusty." (**The Darkening**: 15-20).

The Muslims interpret it to mean that on the Day of Judgement, the Prophet will share the Throne of Justice with Allah and sit on His right-hand side. His recommendations will be binding on God. This is what they sincerely believe is meant by "obeyed, moreover trusty."

Now, one can see that Allah is no more than a figure of speech because the Prophet has taken, over the destiny of humankind. Allah is a factotum of Muhammad because He does what He is told by the latter. For example, the change of Kibla, the vital issue, is decided by Allah to please Muhammad. Again, it is an Islamic law that if a Muslim has more than one wife, he must treat them all equally but God gave dispensation to the Prophet to suspend any of his wives as he thought fit. **One should also bear in mind that the Islamic law lays down that a Muslim cannot have more than four wives at the same time, but the Prophet had at least nine wives**

simultaneously. He was obviously above Allah's laws. It is universally accepted that law is equally binding on the law giver. Unless Muhammad believed himself to be Allah's superior, he could not defy His law. It shows the intensity of the Prophetic dominance urge.

Now, It is obvious that the Prophet did not disapprove of idolatory but hated other idols because he wanted to substitute himself for them. In short, he himself aspired to be worshipped to the total exclusion of all other idols. However, the Prophet realised that there are other people who have a tremendous ego and want to be remembered as spiritual heroes and adored accordingly. So he allowed the creation of a pantheon (देवगण) under his own divine shadow, which means that whoever believed in these lesser deities automatically followed him. One learns about these minor divinities in Hadith no. 145 of the Sahih Muslims: they are members of the household of the Prophet, namely Ali (Fatima, Hassan and Hussain) as well as Abu Bakr, Umar Usman and several others who served him well to make his mission a success.

I think that I have said enough about the nature of Islamic attitude towards idolatory: it is really not iconoclastic i.e. anti-idol, but idolatrous as long as it is only the Prophet Muhammad, his close relations and associates who are adored under his spiritual hegemony.

Muslims and Idolatory

As students of history know, **the Muslims have always done their worst to destroy the pre-Islamic period of every country where they have been able to spread their tentacles**. Even Arabia, the cradle of Islam, is no exception to this rule. It is not easy to trace its pre-Islamic history. However, certain facts can be discovered from the Hadith (sayings and practices of the Prophet) and scholarly writings found in the Encyclopaedia Britannica. Having studied these sources of information, I come to the conclusion that the **Prophet Muhammad had developed an unfavourable attitude towards India**, it is because he was a national leader, par excellence. **His patriotic zeal required of him to destroy the glory of Egypt, Iran, Byzantine and India.** The last i.e. India, posed a special problem. Why?

It is because India constituted a real threat to the dreams of Muhammad, who was highly enthused by the love of his people, the Arabs and wanted to make a great nation of them. He also knew that Moses, before him, had created a magnificent nation of Jews who should perpetuate this name. So the national dream of Muhammad sought to deify (देवता बनाना) himself through the efforts of a great Arab nation to fight for his glory, which should also prove the pivot of Arab nationalism. India stood in the' way of the apostolic designs of Muhammad. The reason was that the **Arabian way of life and religion were deeply influenced by the Indian culture and religious attitudes.** To make the position clear, I must add that as the Indian subcontinent is dominated by the Islamic way of life today, so was the Arabian peninsula under the Hindu influence at the time of the Prophet's advent. Unless he could successfully strike at the roots of Hinduism, he could not make himself adorable. **In a nutshell, he had to destroy the Hindu idols to erect his own.**

Is there evidence for this point of view? Of course, there is. Let us start with the following Hadith:

Abdullah bin Amr bin Al-As reported. "Allah's Messenger (may peace be on him) saw me wearing two clothes dyed in saffron, whereupon he said: 'These are the clothes (usually worn by) the non-believers, so do not wear them". (**Sahih Muslim**: 51 73)

The next Hadith no. 5175 reports this event in a heated manner: Seeing Abdullah b. Amr attired in two clothes which had been dyed in saffron, the Prophet said, "Has your mother ordered you to do so?" Abdullah replied: **"I will wash them."** The prophet replied: **"Burn them."**

The Hadith no. 5177 adds that the prophet forbade reciting the Koran when one wore gold and clothes dyed in saffron.

To understand the built-in prophetic hatred of Hinduism in particular, and India at large, one must realise that colour of the Hindu or Om flag is saffron, which is also called Bhagwa, Gerua and Kesariya. The Om flag also represents the rising sun which not only alludes to the saffron colour but also to the internationally ascendant might of the then India. **Saffron was,**

in fact, the national colour of India because the Hindu heroes, seers, sages and monks wore clothes dyed in saffron. Moreover, it implied the Hindu tradition of valour, elegance and commitment to noble causes as laid down by the Scriptures: some hymns of the Atharva Veda openly refer to the saffron colour. Therefore, it is not just traditional but also a part of the Hindu religious piety, purity and probity. (सत्य-निष्ठा)

From the above quoted Hadiths, it is evident that not only the Arab divines but also ordinary people wore yellowish clothes under the Indian influence which the Prophet hated to such an extent that he advocated burning of saffron dresses and forbade the recitation of the Koran when one wore such garments.

One should bear in mind that the Prophet wanted to create a distinct Arab nation dedicated to spreading his greatness. This is the reason that he told his followers to dye their hair and beards red (henna) so that they should look different from the jews wean then from the' Hindu tradition, he prescribed green colour for his followers ..

The Koran has stated almost all its major tenets (सिद्धांत) ambiguously i.e. relationship between Allah and Prophet, free will and predestination and so on. It equally applies to the Idea of creation and procreation. In this context, one can see the influence of the Gita on the Koran, which states:" "God originates creation, then brings it back again, and unto him you shall be returned." (**The Greeks**: 10)

The Druzes of Lebanon., a sect of Islam, practise the Hindu doctrine of Samsara ardently even today. This is a continuation of the pre-Islamic tradition which is a remnant of the Hindu influence on the Arab culture. The prophet practically obliterated the pre- Islamic history of his people, which makes cultural assessment of Arabia a very hard task, indeed. Yet the modern scholarship has discovered certain religious facts about this country which confirm that if would have been impossible to establish Muhammadanism without destroying Hinduism in Arabia and elsewhere.

The truth is that the Arabs were not only statue-

worshippers but their idolatory was founded on the Hindu principle of triad, also known as Trimurti, Since the Prophet wanted to plant his own image in people's mind, it was not possible without supplanting the Hindu idols, which had considerable appeal owing to their visual effect and the legendary magic, built-up over a period of many centuries. I am certainly not forging history; the Hadith provides cogent evidence to this effect :

"Jabir b. Samura reported Allah's Messenger (may peace be upon him) as saying: I recognise the stone in Mecca which used to pay me salutations **before my advent as a Prophet** and I recognise that even now. (**Sahih Muslim**: 56~4)

The Hadith confirms three facts:

1. Though the Muslims assert that Muhammad was a prophet even before the creation of Adam, this statement demonstrates that it is not so, and is borne out by ***"before my advent as a Prophet."*** Again, **it is historically known that he claimed to have received his first revelation when he was forty. It is at this point of life that the Prophet started preaching Islam. Obviously, it could not have been his religion earlier.** If it were, he would have started disseminating its fundamentals from his cradle. **What was then his religion previously ? This Hadith also answers this question:**
2. ***"Stone in Mecca"*** Cannot be anything but the Black Stone (Hajr-E-Asward) at Kabba, **the main temple of Mecca, which also housed many other statues.** The Words: ***"used to pay me salutations"*** **clearly show that the Prophet Muhammad was a fairly regular visitor to the temple before becoming the founder of Islam.** I hardly need say why people go to the temples.

The Black Stone, as I shall discuss shortly, is an unshaped idol which still adorns the Kaaba, and forms a prominent part of Islamic rituals. The Prophet claims that this statue Used to salute him. Since salutation is a form of worship, Muhammad was inspired by idolatory at Kaaba to be worshipped like an idol. Therefore, it was necessary for him to replace other idols with his own person to perpetuate Muhammadanism. **He picked on Hinduism because it was the Source of the Arab**

idolatory.

Description of the god Agni as having three faces is the basis of the three-headed Shiva, who has been depicted as such on some seals found in the Indus Valley. It should be borne in mind that Shiva is a Vedic god, known as Rudra. He has been mentioned so often in the Rigveda that it is hard to call him a minor deity. Though there is no mention of image-worship in the Rigveda, the Shirite traditions represent the tampered form of the Vedic doctrines the sarne way as nonviolence has become the basic principle of the modern Hinduism though the Vedas and Gita prescribe fighting for a righteous cause and declare it the greatest honour for a true Hindu. Dasa and Dasyus, the epithets of contempt, were invented for these dissenters, who were every bit as Aryan as anyone else. **It shows that the Rigveda is older than the Indus Valley Civilisation, and this fact is also supported by the archaeological excavations which have taken place in the areas close to Rawalpindi** (Pakistan) during recent years. It demonstrates the antiquity of the Indian civilisation. The idolatrous principle associated with the three-faced Shiva became a fundamental doctrine of the Arab religion and culture as triad in the same way as it is known in India the triad of Vishnu-Brahma and Shiva. One has only to look at the Arab history to realise this fact.

Despite their lofty claims of antiquity, the word "Arabs' does not appear in historical sources until the middle of the First millenium B.C. **The Arabian peninsula had received cultural inspiration from the Indus Valley many centuries earlier,** but its religious influence increased dramatically when changes took place in the Greco- Roman trade routes to India during the first century B.C. **The southern Arabia i.e. Yemen had experienced the Indian faith tor a long time,** but then its cultural effect shifted northward to the Hejaz, land of the Prophet Muhammad.

In the south Arabian kingdom, the principle of Triad or Trimurti was practised extensively. For example, they had a triad of astral deities representing the moon god, the sun god and. the Venus god. The chief deity of this triad was the moon god, who protected the principal cities. However, it ought to be

mentioned that the god EL, the Allah of Mecca, was not well known in the south. A triad of gods was also found in Palmyra; it consisted of Bel, Yarhibol, a solar deity, and Aglibol; a lunar deity. Belshamini (Lord of the Heavens) also stood in a triadic relationship with the god Malakbel and Aglibol.

This triadic principle travelled from the south to Mecca. The Koran itself describes the three daughters of Allah, namely, al-Lat, al-Uzza and Manat. It is worth mentioning that al-Lat in Palmyra was equated with the Greek goddess of Athena; al-Uzza was a goddess of the Nabataeans whereas Manat (fate) was associated with the Greek Nemesis at Palmyra. **It is absolutely misleading to say that Islam is free from idolatory. They have an idol in the central Islamic shrine of Kaaba which marks the climax of hajji because the faithful have to kiss it individually.** This is the Black Stone known as Hajr-Easwad, and, according to Ibn al-Kalbi, is a continuation of the Square Stone which was central to the cult of al-Lat at at- Taif. Suidas, a Greek compiler of encyclopaedia of CAD. 1000, states that the Dhu- Shara at Petra had a similar Black Stone on a gold base.

The Muslims say that when Allah expelled Adam from paradise, he gave Adam the Black Stone which is now built into the eastern wall of the Kaaba and consists of three large pieces and some fragments, surrounded by a stone ring and held together by a silver band. It was carried away by "members of the Qarmatian sects in 930. **However, the above evidence shows that the other Arab temples had similar black stones;.** God would not have given Adam so many black stones to carry. What was then, the reality behind a black stone in the Arab culture?"

"A principal sacred object in Arabian religion was the stone, either a rock out cropping or a large boulder, often, a rectangular of black basaltic stone without representative sculptural details." Such stones were considered suitable material of worship to former part of the house of a god i.e .. temple. This is the reason that the Christian writers of Byzantine during the 5th and 6th centuries called such a stone Baetyl, which is derived from Bet'E (House of the god).

Shape or no shape, a stone which is an object of worship.

is an idol. Moses forbade images of any kind but Muhammad allowed to continue the worship of Kaaba made it the most sacred shrine of Islam for national reasons. The idea was, if Arabia, lost its political dignity, even then the Muslim nations must bow before it. God lives overywhere in the world but the genius of Muhammad seems to have permanently housed Him in Mecca for the benefit of his own people, the Arabs.

One should also realise that annual pilgrimage was a principle celebration of the pre-Islamic Arabs. All tribes having the same god were required to gather at his sanctuary and go around the baetyl in a ceremonial procession. **The Prophet also retained this pre-Islamic rite to benefit his nation financially**. What relationship can have this pagan ceremony with the true God? " **The faithful usually forget that the Prophet was the founder of the Arab Empire; it could not be built without structuring a realy strong nation which could batter, blast and bewilder the powers of the time such as Iran and Byzantine**. As other nations sought strength from their gods through crying, cringing and crawling, the Prophet wanted his people solicit and supplicate him for inspiration, might and victory. **For this reason, he aspired to become an idol himself, the object of adoration and worship.** Adroitly, (चतुरता से) he projected Allah as the God but became the driving force behind Him on the Indian principle, which holds that there is a deity behind every physical phenomenon. However, he could achieve this ambition by destroying other idols only. As long as they existed, his chances of becoming the object of worship were minimal. ***Since India was the home of idolatory, the Muslim warriors made this land the target of their ambitions.***

Human culture is not based on uniformity but multiety. It is because man is endowed with free will. Without free choice, humans cease to be human. Therefore, Allah, if He is the real God, cannot order murder of those who do not believe in him. In the case of India, it is even more absurd because the Hindus had developed the concept of Prajapati, the Lord of Creatures; He was more monotheistic than the Arabian Allah whose divinity is shared by Prophet," his descendants and companions. His oneness is theoretical only. ***Therefore the Muslims had no quarrel with India on account of a Universal God. Their***

dispute centred around Muhammad who declared that faith, without believing in him along with Allah, was useless.

The true God is the champion of virtue, but the God, who sanctions murder, rape, arson, slavery to make people acknowledge Him, falls far short of the standard of righteousness. He is not only extremely selfish but also impotent; if He is the Almighty Creator, He could have surely created a believing and obedient man. Again, what kind of God is He whose own satisfaction depends upon man's acknowledgement? When man accepts Allah, the concept of Godhead is nothing but the gross contempt of Allah. The Muslims must realise that they do not adore Allah but deplore Him.

Finally religion is the search for peace of mind and moral perfection. Making innocent children orphans, and turning happily married women into widows, cannot be the command of God. Seeking suzerainty over other people for their freedom is no part of righteousness, but the reliqion that the Prophet Muhammad invented expressly sought dominance over non-believers. The Koran repeatedly says:

"He (Allah) is who hath sent His messenger with the guidance and the Religion of Truth, that He may cause it to prevail over all religions, however much the idolators may dislike" (**Repentance**: 33)

To establish a permanent exercise for fighting non-believers, the Prophet abrogated (रद्द कर दिए) all other religions by declaring them as false (**Sahih Muslim**, CHAPTER: **LXII)** and then announced a permanent state of war against them until they were completely uprooted (**Sahih Muslim no. 31, 32 and 33**). The whole purpose of acquiring dominance through carnage is that the Prophet should have the largest following. (**Sahih Muslim no. 381**).

This search for followers to satisfy the Prophetic urge of dominance brought the Muslims to India, the home of polytheism. (बहुदेव वाद)

A serious search for the roots of polytheism not only leads to India but also to the Indian glory whose radiance has been tarnished by the dark clouds of history for a very long time,

indeed. I am not trying to be a misguided patriot who treats fiction as a fact to mollify the painful national scars inflicted by the caprices (सनक) of history, but a sober stúdent of this subject who is satisfied with establishing the truth irrespective of its palatability. (रुचिकरता)

The Hindu aversion to writing, especially the reluctance to keeping historical records, is the main cause of the Hindus lacking pride in their traditions; it has heavily contributed to the lowering of national aspirations and standards of honour. However, the truth cannot be held back infinitely. It is like the sunlight which eventually breaks through the barriers of a dark eclipse. (ग्रहण) Until some fifty years ago, we were told that the Hindus had been so primitive in their ways' that they never left the Indian soil. **Thank to the modern technical advancement which revealed that the Hindus held a political sway over the Malay Peninsula, Sumatra, Java, Bali, Borneo, Champa (Annam), Cambodia, Burma, Siam and Indo-China. The political hegemony (आधिपत्य) of India over these lands extended for about a 1000 years, while her cultural influence over all the Far Eastern countries survives even today.**

Yet, it is only a part of the Indian glory. This picture becomes more vivid when we study the European civilisation with reference to paganism. Then, **one can see that once European countries were dominated by the Vedic culture, which is a peculiarity of India and clearly shows that the Aryans were the people of Indian origin, and not the other way round, as we have been led to believe by historians.** If this were not true, one could not find the Europeans observing Asvamedha i.e. the horse-sacrifice, closely associated with the Vedas. On a 5,000 years old Harappan seal, we find an ithyphallic figure (Shiva as Pasupati) on the interior of the cauldron, which is in the Danish National Museum, Copenhagen, and belongs to the 2nd century. **Shiva, a Vedic god, would not have reached the Western lands without the Hindus themselves.** That the Europeans took their polytheistic faith from India is proved by the triadic principle of representing godhead as discussed earlier. **Even today there are thirty images of a three-**

headed god extant on the European Continent. That is the mighty Shiva of India.

By comparing the Greek mythology with that of India, we realise that Zeus, the Chief god of Greece, is none other than Indra, the Chief god of India. There is abundant evidence which demonstrates that the Greco-Roman polytheism is firmly rooted in the Indian doctrine of idol worship. The Christian writers refer to it as paganism or heathenism. (मूर्तिपूजक)

As Islam challenged idolatory in India, Christianity, declared war on it in the West. However, the two tales have different endings. Christianity succeeded in smashing idolatory in the West, and whatever persists in the Roman Catholic Church is just a shadow of the original but it has survived in India despite persistent persecution at the hands of the foreign predators (लुटेरे) and has risen once again with a vigour, virility and vivacity unknown to any religious movement. On the contrary, Islam has ceased to have any relevance with the Koranic principles; it has become a slogan of the power seekers, and this fact is fully vouched for by the recent histories of Pakistan and Afghanistan.

Why do these monotheistic religions i.e., Islam and Christianity seek destitution of idolatory? Firstly, **both these religions are dictatorial in essence,** They both claim that the government belongs to God and must be run by the theocrats i.e., the clergy and the Mullah. Idea of the Oneness of God is appealing and logical but presenting God as a power-maniac is the gross insult to Him. To start with, presentation of monotheism through the exclusive agency of a prophet is a big joke indeed. No matter what the prophet calls himself, he is an equal partner in Godhead right from the outset; for example, belief in Allah alone is totally useless unless Muhammad is also included in it. If God is absolute and Almighty, then believing in the Prophet is a glaring proof of Shirk or polytheism. Not only that, a prophet always bestows daintily on the members of his family, and thus creates a pantheon. Just look at the Sayyads of the Indian sub-continent who are believed to possess intercessory powers for their Muslim followers. What applies to the Muslims is equally true of the Christians. The Popes became

infallible despite the fact that many of them were just mundane rulers, and had mistresses and illegitimate children. The Christ rose to become the Son of God, and many Christians believe that He was God- incarnate.

Why do these so-called monotheists oppose polytheism? It is because monotheism serves the purpose of dominance-urge by concentrating power in one person. It is the representation of human jealousy for personal worship and glory. On the contrary, polytheism advocates belief in many gods, who happen to be equally sacred. This is the reason that the Vedic society calls for electing a king if he fails to govern according to the dharma, or leaves no issue to follow him.

More sins have been perpetrated to please God than to suppressing Devil. **Destruction of the Hindu idols was partly an exercise of the Muslim invaders to satisfy their lust for power and wealth.** This is what brought Mahmud Ghaznavi to India repeatedly. Though his raids were abominable, yet I am reluctant to praise my Hindu ancestors who defied the Vedic Principle of Power and became the devotees of Ahimsa, an utterly non-Hindu doctrine. I find it hard to bear this most painful disgrace but accept the fact that set is the destiny of a sparrow to be humbled by a falcon. **One ought to know that Falcon, (बाज़/श्येन) being a Vedic bird is a symbol of the Kshatriya qualities. The Hindus brought misery on themselves by acting as sparrows.** The nation which loses its hawkish virtue is bound to be molested, mutilated and murdered by the Messengers of perdition such as Mahmud Ghaznavi, Juna Khan and Feroz Shah Tughlaq.

The Christians acted likewise against polytheism in the West. They closed down pagan temples and confiscated their property. Constantine discouraged pagan sacrifices; Constans went even further to forbid them on pain of death. Constantius ordered the closing of all pagan temples and rituals. Those who disobeyed perished at his command. **However, these Byzantinian Emperors were succeeded by Flavius Claudius Julianus who was born in 332. He was not only a competent administrator and solider but also a philosopher. He ridiculed the basic tenets of monotheism and justified use of idols in worship.** He thought of the deities

of polytheism as impersonal forces and did not believe in their anthropomorphic (मानवतारोपी) forms. He preferred to be called the priest of polytheism instead of an emperor. He was able to reverse the tide of Christianity, at least during his reign, by withdrawing state subsidies from the Church and close to the Christians chairs of rhetoric, philosophy, and literature in the universities. He insisted that these subjects should be taught by the pagans only. He went even further: he permitted demolition of the Christian Churches, which had been built on the lands seized from the pagan shrines. He ordered reconstruction of the pagan temples and imposed levies on the Christians to make full reparations for-the damage that had been caused to the pagan institutions during preceding reigns of the Christian emperors. His orders provoked riots but he stood firm, and succeeded.

What Hindus Should Do

Here is an example for the Hindus to follow. Polytheism represents the Hindu ethos. They shall not be able to live honourably without sticking to their basic way of life, especially when it harms nobody. Though I am not an idolater, I support the Human right to worship as one thinks fit.

Dominance urge is the biggest predator of human rights. It has another aspect; human psychology is polar, like physical objects, which have negative and positive sides. As humans are naturally kind and curt, sagacious and stupid, they are also dominant and submissive. Thus, dominance and submissiveness are the opposite poles of human disposition. They both have their virtues, but when dominance has no purpose except enjoyment of power at the expense of people's honour, safety and freedom, then it becomes the worst evil that there can be. On the other hand, submission without fighting the dominance-seeker or aggressor is even greater vice because it makes the dominant or aggressor a lot more daring, devilish and destructive. A wolf without pugnacity is just a lamb - only fit for the dining table. The nation which loses nerve to defend its bonour, becomes a football to be played with by every Tom, Dick and Harry, **By making Ahimsa i.e., non-violence the way of life, Hindus have made themselves a tempting target for any aggressor.** This is not a religious virtue but a sign of profanity

(अपवित्रता) and a shameful exercise to enshrine a most despicable vice as a splended virtue. **Gods do not want cowards for devotees**; they bless the Vedic patriots who fight with a sense of honour.

Finally as a footnote to the above discussion, I may add that this thesis agitated my mind for a long time but I resisted the temptation of putting it on paper because I did not want to open up the old wounds. After reading works of some patriotic Hindu scholars, I realised my mistake; their cuts have not healed but become deeper. Though it is painful, it is a sign of renaissance - a new life, because it is only the senseless who forget the humiliation of 1000 years; the lively seek rejuvenation through honourable conduct based on determination and the will to succeed.

Though my views are totally different, **I salute the Indian' writers who have written on this subject. Among them was intellectual giant, Sri Ram Swarup,** whose piety forbids him to pass judgement on the atrocious conduct of the foreign iconoclasts. **Sri Sita Ram Goel is another scholar whose patriotic protests echo through the flourish of his pen** and desperately seek, the restoration of Hindu ascendancy. **Sri G.M. Jagtiani, the Maratha mystic, was Vedic preacher, whose writings are national glary. Sri A. Ghosh of Texas, is the Kshatriya stalwart who wonders what happened to the cutting edge of his ancestral sword.** He will do anything to revive the martial character of his people.

ANWAR SHAIKH
(LONDON)

What the Invaders Really Did*

RIZWAN SALIM

On the anniversary of the Babri Masjid demolition (December 6, 1992), it is important for Hindus (and Muslims) to understand the importance of the event in the context of Hindustan's history, past and recent, present and the future.

Savages (वहशी) (जंगली) at a very low level of civilisation and no culture worth the name, from Arabia and west Asia, began entering India from the early eighth century onwards. Islamic invaders demolished countless Hindu temples, shattered uncountable sculptures and idols, plundered innumerable palaces and forts of Hindu kings, killed vast numbers of Hindu men and carried off Hindu women. This story, the educated - and a lot of even the illiterate Indians - know very well. History books tell it in remarkable detail. But many Indians do not seem to recognise that the alien Muslim marauders destroyed the historical evolution of the earth's most mentally advanced civilisation, the most richly imaginative culture, and the most vigorously creative society.

It is clear that India at the time when Muslim invaders turned towards it (8 to 11 th century) was the earth's richest region for its wealth in precious and semi-precious stones, gold and silver; religion and culture; and its fine arts and letters. Tenth century Hindustan was also too far advanced than its contemporaries in the East and the West for its achievements in the realms of speculative philosophy and scientific theorising, mathematics and knowledge of nature's workings. **Hindus of the early medieval period were unquestionably superior in more things than the Chinese, the Persians (including the Sassanians), the Romans and the Byzantines of the immediate preceding centuries.** The followers of Siva and Vishnu on this subcontinent had created for themselves a society more mentally evolved - joyous and prosperous too - than had been realised by the Jews, Christians, and Muslim monotheists of the time. Medieval India, until the Islamic invaders

destroyed it, was history's most richly imaginative culture and one of the five most advanced civilisations of all times.

Look at the Hindu art that Muslim **iconoclasts** (मूर्ति भंजक) severely damaged or destroyed. Ancient Hindu sculpture is vigorous and sensual in the highest degree - more fascinating than human figural art created anywhere else on earth. (Only statues created by classical Greek artists are in the same class as Hindu temple sculpture.) Ancient Hindu temple architecture is the most awe-inspiring, ornate and spell-binding architectural style found anywhere in the world. (The Gothic art of cathedrals in France is the only other religious architecture that is comparable with the intricate architecture of Hindu temples.) No artists of any historical civilisation have ever revealed the same genius as ancient Hindustan's artists and artisans.

Their minds filled with venom (विष) **against the idol-worshippers of Hindustan, the Muslims destroyed a large number of ancient Hindu temples.** This is a historical fact, mentioned by Muslim chroniclers and others of the time. A number of temples were merely damaged and remained standing. But a large number - ***not hundreds but many thousands*** - of the ancient temples were broken into shreds of cracked stone. In the ancient cities of Varanasi and Mathura, Ujjain and Maheshwar, Jwalamukhi and Dwaraka, not one temple survives whole and intact from the ancient times.

The wrecking of Hindu temples went on from the early years of the 8th century to well past 1700 AD, a period of almost 1000 years. Every Muslim ruler in Delhi (or Governor of Provinces) spent most of his time warring against Hindu kings in the north and the south, the east and the west: and ***almost every Muslim Sultan and his army commanders indulged in large-scale destructions of Hindu temples and idols.*** They also slaughtered a lot of Hindus. It is easy to conclude that virtually every Hindu temple built in the ancient times is a perfect work of art.

The evidence of the ferocity with which the Muslim invaders must have struck at the sculptures of gods and goddesses, demons and apsaras, kings and queens, dancers and musicians, is frightful. At so many ancient temples of Rajasthan and Madhya Pradesh, for example, shattered portions of stone

images still lie scattered in the temple courtyards. Considering the fury used on the idols and sculptures, the stone-breaking axe must have been applied to ***thousands upon thousands of images of hypnotic beauty.***

Giving proof of the resentment that men belonging to an inferior civilisation feel upon encountering a superior civilisation of individuals with a more refined culture, Islamic invaders from Arabia and western Asia broke and burned everything beautiful they carne across in Hindustan. **So morally degenerate were the Muslim Sultans that, · rather than attract Hindu "infidels" to Islam through force of personal example and exhortation, they just built a number of mosques at the sites of torn down temples - and foolishly pretended they had triumphed over the minds and culture of the Hindus**. I have seen stones and columns of Hindu temples incorporated into the architecture of several mosque, including the Jama Masjid and Ahmed Shah Masjid in Ahmedabad; the mosque in the Uparkot fort of Junagadh (Gujarat) and in Vidisha (near Bhopal); the ***Adhai Din Ka Jhonpra*** right next to the famous dargah in Ajmer - and the currently controversial ***Bhojshala*** "mosque" in Dhar (near Indore).

Hindu culture was at its imaginative best and vigorously creative when the severely-allergic-to-images Muslims entered Hindustan. ***Islamic invaders did not just destroy countless temples and constructions but also suppressed cultural and religious practices; damaged the pristine vigour of Hindu religion; prevented the intensification of Hindu culture, debilitating it permanently; stopped the development of Hindu arts; ended the creative impulse in all realms of thought and action; damaged the people's cultural pride, disrupted the transmission of values and wisdom, cultural practices and tradition from one generation to the next; destroyed the proper historical evolution of Hindu kingdoms and society; affected severely the acquisition of knowledge, research and reflection and violated the moral basis of Hindu society. The Hindus suffered immense psychic damage.***

The Muslims also plundered the wealth of the Hindu kingdoms, impoverished the Hindu populace, and destroyed

the prosperity of Hindustan.

Gaze in wonder at the Kailas Mandir in the Ellora cave and remember that it is carved out of a solid stone hill, an effort that (inscriptions say) took nearly 200 years. This is art as devotion. The temple built by the Rashtrakuta kings (who also built the colossal sculpture in the Elephanta caves off Mumbai harbour) gives proof of the ancient Hindus' religious fervor. But the Kailas temple also indicated a will power, a creative imagination, and an intellect eager to take on the greatest of artistic challenges.

The descendents of those who built the magnificent temples of Bhojpur and Thanjavur, Konark and Kailas, invented mathematics and urban surgery, created mind-body disciplines (yoga) of astonishing power, and built mighty empires would almost certainly have attained technological superiority over Europe.

It is not just for "political reasons" that Hindus want to build grand temples at the sites of the (wrecked) ***Babri Masjid*** in Ayodhya, the ***Gyanvapi*** (ज्ञानवापी) mosque in Varanasi, and the ***Mathura idgah.*** The efforts of religion-intoxicated and politically active Hindus to rebuild the Ram Mandir, the Kashi Vishwanath Mandir, and the Krishna Mandir are just three episodes in a one-thousand year long Hindu struggle to reclaim their culture and religion from alien invaders.

The demolition of the Babri Masjid in Ayodhya, on 6 December 1992, was just one episode in the millennial struggle of the Hindus to repossess their religion-centered culture and nation. Meanwhile, hundreds of ancient Hindu temples forsaken all over Hindustan await the reawakening of Hindu cultural pride to be repaired or rebuilt and restored to their original, ancient glory.

* ***The Hindustan Times***, New Delhi, (28 December 1997.)

Temples Destroyed and Islamic Constructions Raised by Moghuls in India

(States, Districts and places devastated are furnished Names of Temples destroyed and names of Islamic constructions raised. Source - Hindu Temples what Happened to them 2 volumes by S.R. Goel, Voice of India, New Delhi)

BRIEF ON LAKHS OF TEMPLES DESTROYED BY MOGULS IN INDIA

All the Islamic invadors plundered poor Indians, raped, converted & to establish Allah's triamph over Hindu Gods, erased emblems of Hindu identity vehemently. Why to name those BASTARD'S and weep on the names of the glorious temples destroyed, but the fact remains that from 1192 AD till 1707 the death of Aurangazeb Hindu Temples got destroyed looted and Islamic Masjids, Tombs, etc constructed and lakhs of Hindus forcibly converted, ladies raped. What's the REACTION!

ANDHRA PRADESH

Adilabad-Mahur; **ANANTAPUR**: Gooty, Kadiri, Konakondla, Penukonda, Tadpatri; Cuddapah, Duvvuru,' Gandikot, Gangapuru, Gundlakunta, Gurramkonda, Jammalamadugu, Jangalapalle, Siddhavatam, Vutukuru, **EAST GODAVARI DIST** : Bikkavolu; **GUNTUR DIST** : Nizampatnam, Vinukonda, Rajahmundry, **HYDERABAD DIST** : Chilakalguda, Secunderabad, Golconda, Maisaram, Sheikhpet; **KARIMNAGAR DIST**: Dharmapuri, Elangal, Kaleswaram, Sonipet, Vemulavada; **KRISHNA DIST**: Gudimetta, Guduru, Gundur, Kondapalli, Kondavidu, Machilipatnam, Nandigama, Pedana, Raikonda, Tengda, Turkapalem, Vadpalli, Vijayawada. **KURNOOL DIST**: Adoni, Cumbum, Havli, Karimuddla, Kottakot, Kurnool, Pasupala, Sanjanmala, Siddheswaram, Yadavalli, Zuhrapur; **MAHABUBNAGAR DIST**: Alampur, Jatprole, Kodangal, Kundurg, Pargi, Somasila, **MEDAK DIST**: Andol, Komatur, Medak, Palat, Patancheru: NALGONDA DIST: Devarakonda, Ghazinagai:, Nalagonda, Pangal, **NELLORE DIST**: Kandukuru, Nellore Podili, Udayagiri; **NIZAMABAO DIST**: Balkonda, Bodhan, Dudki, Fathullapur; **RANGAREOOY DIST**: Maheswaram, Moulali, **SRIKAKULAM**: Icchapuram, Kalingapatnam, Srikakulam **VISAKHAPATNAM DIST** : Jayanagaram, Visakhapatnam; **WARANGAL DIST:** Warahgal, Hanumakonda,' Zafargarh: **WEST GODAVARI DIST**: Eluru, Nidadavolu, Rajahmundry.

ASSAM

KAMRUP DIST : Hajo, etc. Assam,

BENGAL

BANKURA DIST : Lokapura, **BARISAL**: Kasba, **BIRBHUM DIST** : Moregram, Patharchapuri, Rajnagar, Sakulipur, Siyan; BOGRAOIST : Mahasthan; **BURDWAN DIST** : Inchalabazar, Kasba, Kalna; Mangalkot, Raikha, Suata, **CULCUTTA**: Bania Pukur **CHATGOAN DIST** : **DACCA DIST** : Narayangunj, Rampal, Sonargoan, **DINAJPUR DIST** : Basu-Bihar, Devatala, Devikot, Mahisantosh, Nekmard, **FARIDPUR DIST**: Faridpur, **HOOGHLY** : Jangipura, Pandua, Santoshpur, Satgoan, Tribeni **HOWRAH DIST** : Jangalvilas, **KULNA DIST** : Masjidkur, Satkhira MALDA DIST : Gangarampur, Gaur, Maida, Pandua **MIDNAPUR DIST** : Gagneswar, Hijli, Kesiari, Kharagpur, **MURSHIDABAD DIST** : Chuna Khali, Murshidabad, Rangamati,/ **NOAKHALI DIST** : Begamgunj **PABNA DIST** : Balandu **RAJSHAHI DIST** : Bhaturia, Kamarpura, Kusumba, **RANGAPUR DIST** : Kamatpur, **SYLHET DIST**: Baniachung, Sylhet, **24-PARGANAS DIST** : Barasat, Berachamp **CHIKMANGLUR DIST**: Baba Budar; **CHITALOURG DIST** : Haripur, **DHARWAD DIST**: Alnavar, Bankapur (6), Balur, Dambal, Dandapur, Dharwad, Hangal, Hubli, Hulgur, Lakshmeshwar, Misrikot, Mogha, Renebennur, Savanur, (3) **GULBARGA DIST** : Chincholi, Dornhalii, Firozabad, Godur, Gogi (3) GULERGA (ancient Kalabargi city built on Temples destroyed) 1 Gulsharara, Maikhed, Sagar, (4) Seram, Shah Bazar, Shahpur, (3) Yadgir, **KOLAR DIST** : Mulgagal, Nalndi: **MANDYA DIST**: Pandavapur, Srirangapatnam; **MYSORE DIST** Mysore, Tonnur, **NORTH KANAA DIST**: Bhatkal, Haliyal, **RAICHUR DIST**: Jaladura Kaliur, Koppal (3) Manvi, Mudgal (4) Raichur (15) Sindhanur, Tawagera, **SHIMOGA DIST**: Almel, Basavapatna, Nagar, Sante Bennur, Sirajpur, Chennakesava Temple destroyed to house the hair of Prophet Mohammad-part of temple used as latrine. **TUMKUR DIST**: Sira Sir.

KASHMIR

Amburher, Badgam, Bijbehra, Bumzu (3) Gulmarg, Gupkar, Hutimar Kohnmuh, Kitshom, Loduv, Lohar, Lokbavan, Marcus, Pampor, Pandrethan, Sangar, Sar, Shalmar Garden, **SRINAGAR** - Ancient City converted - 23 Islamic constructioins

raised on Temples destroyed : Sudarbal, Tapar, Theda, Vernag, Wular Lake, Zukur, (several temples destroyed and materials used)

KERALA

Kollam (Kozhikode Dist), Palghat fort with temple materials by Tippu Sultan.

LAKSHAOWEEP

Kalpeni, Kavarati.

MADHYA PRADESH

BETUL DIST : Pattna, Umri **BHOPAL DIST** : Bhopal, Berasia; **BILASPUR DIST** : Khimlasa (4) **DAMOH DIST** : **DEWAS DIST**: Dewas (3) Gahdhawai, Sarangpur, (4) Unchod ; **DHAR DIST** : Dhar Capital of Bhoj Paramara converted into Muslim capital & 3 Islamic, constructions raised. **MANDLA** ancient Hindu city destroyed raising 19 Islamic constructions.

DHOLPUR DIST : Bari, **EAST NIMAR DIST** : Bhadgaon, Jhiri, Khandwa; **GUNA DIST** : Chanderi: Budhi Chanderi destroyed & 14 Islamic constructions raised: Pipar; Shadoragaon **GWALIOR DIST**: Gwalior, (4) Jajao, Mundrail, Sipri **INDORE DIST** Depalpur, Maheshwar (2) Mehdipur (2) Sanwar **MANDSAUR DIST** : Kayampur (2) Mandasaur (2) Rampura **MORENA DIST**: Alapur (3): **PANNA DIST**: Ajarqarh Nachm RAISEN DIST: Raisen, **RAJGARH DIST** : Khujner **RATLAM DIST** : Baraudi **SAGAR DIST** : Dhamoni, Kanjia (3) Khimlasa : **SEHORE DIST** : Sehore **SHAJAPUR** Agartal, **SHIVPURI DIST** : Narod, Narwar (3) Pawaya, Ranod (4) Shivpuri : **UJJAIN DIST** : Barnagar, Ujjain (3): **VIDISHA DIST** : Basoda, Bhonrasa (10) Parasari, Renkla Shamsabad, Sironj, (3) Tal, Udaypur (6) Vidisha (4) **WEST NIMAR DIST** : Asirgarh (4) Bhikarigaon, Baidia, Burhanpur (5).

MAHARASHTRA

AHMADNAGAR DIST : Amba Jogi, Bhingar, Gogha Jambukhed, Madhi **AKOLA DIST** : Akot, Balapur, Basim, Jamod, Karaj (3) Manglurpii (3) Narnala, Patur, Uprai, **AMRAVATHI DIST**: Amner, Ellichpur (6) Ritapur **AURANGABAD DIST** : Antur, Aurangabad (3) Daulatabad (6) Gangapur, Kaghzipura Khuldabad, (5) Paithan (4), Taltam fort, Vaijapur; **BID DIST** : Bid (5) **BOMBAY DIST** : Bombay (3), **BULDANA DIST** :

Fathkhelda, Malkapur, **DHULE DIST**: Bhamer, Erandol, Nandurbar (3) Nasirabad, Nizamabad; JALGAON DIST: Jalgaon, Phaskhanda, Shendurni, **KOLHAPUR DIST** : Bhadole, Kagal, Kapshi, Panhala, (4) Shirol, Vishalgarh; **NAGPUR DIST** : Ramtek **NANDED DIST** : Bhaisa, Deglur, Kandhar (3) Nanded **NASIK DIST** : Galna, Gondengaon, Malegaon, Nasik (Mahalakshmi Temple turned Masjid), Pimpri, Rajapur, **OSMANABAD DIST** : Ausa, Naldurg, Parenda (2) : **PARBHANI DIST** : Khari, Latur, Malevir **PUNE DIST** : Chakan, Ghoda, 33 temples destroyed, Junnar, (6) Khed, Mancher, Sasvad **RATNAGIRI DIST** : Chaul, (3) Dabhol, Raipuri, Yeshir **SANGHLI DIST** : Mangalvedh, Mka] (5) **SATARA DIST** : Apti, Karad, Khanpur, Rahimatpur **SHOLAPUR DIST** : Begantpur, Sholapur, THANE DIST : Kalyan, Malanggadh. **WARDHA DIST**: Ashti, Girad, Paunar.

ORISSA

BALESHWAR DIST : Baleswar **CUTTACK DIST** : Cuttack, Alamgir Hill, Guttack, (5) Jaipur, Kendrapara, Salepur, **GANGAM DIST** : Lalape!.

PUNJAB

BHATINDA DIST : Bhatinda **GURDASPUR DIST** : Sultanpur, **LUDHIANA DIST** : **PATIALA DIST**; Bahadurgarh: Bawal, Samana, (4) **ROPAR DIST**: **SANGRUR DIST** : Sunam.

RAJASTHAN: AJMEER DIST: Hindu Capital desecreated. (9) **ALWAR DIST** : Alwar, Bahror, Tijara **BHARATHPUR DIST** : Barambad, Bayana (10) Etmada, Kaman, **CHITTAURGARH DIST** : Chittaurgarh; **JAIPUR DIST** : Amber, Chatsu, Dausa, Naraina, Sambhar, **JAISALMER DIST** : Jaisalmer, Pokaran **JALOR DIST** : Jalor, Sanchor **JHALAWAR DIST** : Sunel **JHUNJHUNU DIST** : Narhad **JODHPUR DIST** : Jodhpur, Mandor, Pipar City **KOTA DIST** : Baran, Bundi, Gagraun, Shahabad, (3) Shergarh, **NAGAUR DIST** ; Amarpur, Bakalia, Balapir, Badi Khatu (15) Basni, Chhoti Khatu, Didwana (22) Kathoti, Ladnun, (6) Loharpura, Makrana (4) Merta (13), Nagaur (27) Parbatsar, Ren, Rohal, Sojat, **SAWAI MADHPUR DIST** : Garh, Hinduan, (6) Ranthabor, **SIKAR DIST** : Nagar **UDAIPUR DIST** : Mandalgarh;

TAMILNADU

CHENGALPUT DIST : Acharwak, Kanchipuram, (3)

Karkatpala, Kovalam, Munropet, Pallavaram (3) Rajkoilpetta, Rampur, Rayapeta, Walajahbad **COIMBATORE DIST** : Annamalai, Coimbatore, Sivasamudram. **MADRAS DIST** : Madras, (now Chennai) **MADHURA DIST** : sonouvaraoette. Devipatnam, Goripalaiyam, Madura, Nimarpalli, Puliyagulam, Soravandanam, Tlrupurakunrarn, **NORTH ARCOT DIST** : Arcot (33) Islamic constructions with material of temples destroyed, Ami, Kare, Kaveripak, Nusratgarh, Pirmalipak, Ramna, Vellore (10) Walajahnagar, Wali-Muhammad-Peta.

RAMANTHAPURAM DIST : Eruvadi, Kilkari, Periapattanam, Valinbkkam, Ramanthapuram; **SALEM DIST** : Sankaridurg, SOUTH *ARGOT* DIST : Anandapur Chidambaram (5) Gingee (3), Kawripet, Manjakuphanv Mansurpeta, Nallikuppam, Pannuti, Swamiwaram, Tarakambari; Tirumalarayanapatnam, Warachkuri **TANJAVUR DIST** : Ammapettah, liayur (4) Karambari, Kurikyalpalayam, Kurkuti, Kushalpalayam (3), Nagur, Urancheri, Vijayapwram, Wadayarkari **TIRUCHIRAPALLI DIST** : Puttur (25) Valikondapuram (4) **TIRUNELVELLI DIST** : Ambasamudratn, (4) Tirunelvelli.

UTTTAR PRADESH

AGRA DIST : Agra(6) Bisauli, Fathepur Sikri (4) Firozabad, Jajau, Rasutpur, Sikanda, ALiGARH DIST : Aligarh(S) -Pilkhana, Sikindra Rao. **ALLAHABAD DIST** : Allahabad(S) Koh Inam, Mauima, Shahbazpur, **AZAMGARH DIST** : Dohrighat, Ganjahar, Mehnagar, Nizambad, Oasba, **BADAUN DIST** : Alapur, Badaun (5) Sahiswan, Ujhai, **BAHRAICH DIST** : Baharaich, **BALLIA DIST** : Kharid **BANDA DIST** : Augasi, Badausa, Kalinjar, (3) Soran, BARA BANKI DIST : Bhado Sarai, Dewa, Fatehpur, Rudauli, Rauza Gain, Sarai Akbarabad, Satrikh, **BAREILLY DIST** : Aonla, Bareilly, Faridpur, **BIJNOR DIST** : Barimih-ka-khera Jahanabad, Kiratpur, Mandawar, Najibabad, Nihtaur, Seohara, **BULANDSHAHR DIST** : Bulahdshadar(6) Khurja, Shikarpur, Sikandarabad **ETAH DIST** : Atranjikhera, Jalesar, Kasganj, Marahra? Sakit, **ETAWAH DIST** : Auraiya, Etawah, Phaphund, DIST : Farrukhabad Kannauj, (5) Rajgirhar, Shamsabad, **FATEHPUR DIST** : Haswa, Hathgaon, Kot (Jahanabad) Kot, **FYZABAD DIST** : Akbarpur, Ayodhya (5) Fyzabad, Hatila, Kichaucha; **GHAZIPUR DIST** : Bhitri, (3) Ghazipur, Hingtar, Khagrol **GONDA DIST** : Sahet - Mafiet (Sravasti) (4) Gorakiipur,

Lar, Pava, **HAMIRPUR DIST** : Mahoba (5), Rath; **HARDOI DIST** : Bilgram (3), Gopamau, Pihani, Sandila, **JALAUN DIST** : Kalpi (4), Katra, **JAUNPUR DIST** : Jaunpur, (12) Machhlishahar: (3) Shahgunj, Zafarabad, (7) **JHANSI DIST** : Irich, Lalithpur, Talbilat, KANPUR DIST : Jajmau, (4) Makanpur; **LUCKNOW DIST**: Kakori, Lucknow, (6) Musanagar, Nimsar, Rasulpur, **MAINPURI DIST** : Rapri, (3) **MATHURA DIST** : Mahaban, Mathura, (4) Naujhil, **MEERUT DIST** : Barnawa, Garhmukteswar Hopur, jalali, Meerut, Phalauda. **MIRZAPUR DIST** : Bhuli, Chunar, Mirzapur, **MORADABAD DIST** : Amroha, (5) Azampur, Bachhraon, Moradabad, Mughalpura- Agwanpur, Sirsi, Ujhari, Sambhal(4) **MUZAFFARNAGAR DIST** : Daira Din Panah, Ghausgah, Jhinhjhana, Kairana (4) Majhera, Sambhalhera, Thana Bhawan, **PILIBHIT DIST** : Pilibhit **PRATAPGARH DIST** : Manikpur, **RAMPUR DIST** : **RAE BARELI DIST** : Dalmau, Jais, Rai Bareli (4) **SAHARANPUR DIST** : Ambahata, Deoband, Gangoh, Jaurasi, Kaliyar, Manglaur, Rampur, Saharanpur, Sakrauda, Sirasawa; **SHAHJANPUR DIST** : Kursi, Shahjahanpur **SITAPUR DIST** : Biswan, Khairabad, Laharpur, **SULTANPUR DIST** : Amethi, Isuli, : **UNAO DIST** : Bangarmau, (4) Rasulabad, Safipur (6); **VARANASI DIST** : Asia, Varanasi (8)

N.B: The same converts to Islam and Intruders into the pious Bharath when **SRI RAMAJANMA BHOOMI** was reclaimed the tollowrnp **HINDU TEMPLES WERE DEVASTATED**: In Dhaka itself: 11-11-1989 : 400 years old Kali Temple looted & set on fire, Same way Shiv Temple, Brahmanadi, Bhelanagar, Narsingdi, Milan Kali Temple of Srirampur, Hashmipur & in **TANGIL DIST** : Tangail, Bajitpur, Pak rail under Deldaur, Pakutia, Akua, Moulavi Bazar, Naogaon Siragunj, Rangpur, Netrokona, Magura,Barishal Dharmura, Agove- Ijhara, Chitt agong, Sadhanpur (25) Temples, Fatikchar Upajila, Kox's Bayar Naokhali, Chadpur, Nilfamari Jhalakati, Narayangunj, Dhaka, Lakshmipur, Sylhet, Khulna, Bagerghat, Maimensingh, Feni Bhola, Comilla, Brahmanbaria, Madaripur, Munshigunj, Manikganj, Pabna and Habigunj were destroyed, Hindu shops looted and Hindu forces. attacked. When the book **LAJJA** exposed the attrocities of Bengali Muslims on Hindus, the writer was banned. All Muslims join to anhilate Hind So Hindus born of Hindus should be more **HINDUS** to save **HINDUSTAN**. In India several Bastards have born and forlorn traditions in the

name of **SECULARISM**, hot understanding **SARVAMATHA SAMA BHAVA**. Beware of those bastard brothers that hate Hindu traditions. PLEASE do not invite any bastard without BINDI to your house. Talk to the bastards in the street and send them and do not cultivate friendship with them. Secularism, Communism, Radicalism, Christianity, Islam are vehemently aiming to extinguish the eternal **JYOTHI** of Sanathana Dharma: BEWARE BROTHER: **SAVE INDIA!**

GAYA DIST : Amthua, Gaya, Kako **MONGHYR DIST** : Amoljhori, Charuanwan, Kharagpur, Monghyr, **MUZAFFARPUR DIST**: **NALANDA DIST**: Biharjsharif, (12 monuments) Parabathi, Shaikhupura, **PATNA DIST** : Hilsa, jana, Kailvan, Maner, Muhammadapur Patna, (13 monuments) Phulwarisharif, **PURNEA DIST** : Hadaf, Puranea, **SARAN DIST** : Chirand, Narhan, Tajpur- Basahi, **SHAHABAD DIST** : Rohtasgarh; Sasaram, **VAISHALI DIST** : Amer Chehar. Hajipur. Basarh. Hasanpura. Jhangira.

DELHI

Cities ruined: "Indraprastha, Dhillika" & Mehrauli (1,1 monuments) Sulthangunj, Palam, Begumpur, Tughlaqabad, Chiragh - Delhi, Nizamuddin, (6) Hauz Khas (8) Malviyanagar (4) Lodi Gardens (4) Purana Oila, Shahjanabad(5) Ramakrishnapuram(6) The Ridge, (5) Wazirabad, South Extension etc.t 10)

DIU : In 1401 Temples destroyed and Masjid constructed.

GUJARATH

AHMADABAD DIST : This city founded on the ruins of Temples of Asavel, Patan, & Chandravathi (13) Oekwara, Oholka (6) Isapur, Mandai, Paldi, Ranpur, Sarkhej, Usmanpur **BANASKANTHA DIST** : Haldwar, Halol Malan; **BARODA DIST** : Baroda, Oabhoi (5) Danteswar, Sankheda; **BHARUCH DIST** : Amod, Bharuch, (6) Jambursar, Tankaria, **BHAVNAGAR DIST** : Botad, Tolaja, Ghoda, **JAM NAGAR DIST** : Amran, Bet Owaraka, Dwaraka : JUNAGARH DIST : Junagarh, Loliyana, Kutiayana, Mangrol (8) Somnath Patan(13), Vanasthali,Veraval, (6) **KACHCHH DIST** : Bhadreshwar, Bhuj, Mundra-Jain Temples destroyed of Bhadreswar. **KHEDA DIST** : Kapadwani, Khambhat (11) Mahuda, Sojali : **MEHSANA DIST** : Kadi, Kheralu, Modhera, Munjpur Patan, (9) Sorni, Sidhpur, Una, Vijapur,

PANCH MAHALS DIST : Champaner, Godhra, Pavangadh Rayania, **RAJKOT DIST** : Jasdan, Khakhrechi, Mahftvia, Malia, Morvi, Satrampur, **SABARKANTHA DIST** : Hersel, Himmatnagar, Prantij : **SWRAT DIST** : Navasari, Rander (Jain Temples destroyed & 5 Masjids constructed), Surat, Tadkeshwar, **SURENDRANAGAR DIST** .: Sara, Vadnagar, Wadhwan.

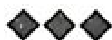
HARYANA

AMBALA DIST : Pinjor, Sadhaura, (5) **FARIDABAD DIST** : Faridabad, Nuh, Palwal, (5) **GURGAON DIST** : Palwal, Farrukhnagar, Sohna, **HISSAR DIST** : Barwala, Fatehabad, Hansi (14) Hissar (Argoba Temple material destroyed in 1191 by Ghuri used to build the city) (8), Sirsa (3) **KARNAL DIST**: Panipat, (4) **KURUKSHETRA DIST** : Kaithal, (4) Kurukshetra (3) **MAHENDERGARH DIST** : Naraaul **ROHTAK DIST** : Jhajjar, Maham (5), Rohtak (8) **SONEPAT DIST** : Gohana,

HIMACHAL PRADESH : Kangra.

KARNATAKA

BANGALORE DIST : Dodda - Ballapur, Hoskot; **BELGAUM DIST** : Belgaum, Gokak, Hukeri, Kudachi, Madbhavi, Raibag, Sampgaon, **BELLARY DIST** : Bellary : Temples destroyed by Tippu Sultan (1789-90) & Masjid constructed (9). **BIDAR DIST** : Bidar Hindu city destroyed 16 Masjids/ DargaiMadrasa constructed on Temples, Chandpur, Chillergi, Kalyani (7), Koir, Shahpur, Udbal, **BIJAPUR DIST**: Afjalpur, Badami, Bokkunal, Bijaur: Hindu City destroyed & 22 Islamic centers built. Hadginhali, Horti, fnglesvara, Jirankalgi, Kelkeri (3), Naltvad, Pirapur.



DESTRUCTION OF HINDU TEMPLES

Swami Vivekanand

"You have withstood the shocks of centuries simply because you took great care of it, yet sacrificed everything else for it. Your forefathers underwent everything boldly, even death itself, but preserved their religion. Temple after temple was broken down by the foreign conqueror, but no sooner had the wave passed then the spire of the temple rose up again. Some of these old temples of southern India, and those like Somnath of Gujarat, will teach you volumes of wisdom, will give you a keener insight into the history of the race than any amount of books. Mark now these temples bear the marks of a hundred attacks and a hundred regeneration, continually destroyed and continually] springing up out of the ruins rejuvenated and strong as ever"

(Complete Work, III, 289)

Sita Ram Goel

"Thus the practices of the Prophet or Sunnah vis-a-vis idols and their temples was added to prescription of the Quran, in this respect and the Islamic theology of iconoclasm stood completed. Ever since, iconoclasm has been a prominent as well a permanent part of the theology of Islam.

Allah had denounced the idols and their worship as abominable. His prophet got the idols broken or burnt, and their temples destroyed.

The Prophet added a few nuances on his own. He got the sites and materials of Pagan temples used in the construction of mosques that replaced them. In many cases, idols were placed on the foot steps of the mosques so that the faithful could tample upon them while entering coming out of Allah's abodes. These acts, too, become pious precedents and were followed by Islamic invaders wherever they came across idols.

There are very few historical mosques, particularly Jama Masjids, in the world of Islam which do not stand on sites occupied earlier by other people's places of worship. Many Christian churches yi~lded place to mosques all over West Asia, North Africa, Spain and Southern Europe, even though Christians were People of the Book whose places of worship were to be protected once they agree to be Zimmis. Fire-temples of the Zoroastrians suffered the same fate all over what constituted the empire of Iran on the eve of Muslim conquest. The greatest havoc, however was wrought in the vast cradle of Hindu culture where hundreds of thousands of Buddhist, Brahmanical, Jain and other Hindu temples disappeared or yielded place to mosques and other Muslim monuments.

Today there are no Hindu temples in the Central Asian Republics of Russia, Sinkiang province of China, Makran and Seistan provinces of Iran, and the whole of Afghanistan, all of which were honeycombed with them before the advent of Islam. Whatever Hindu temples had come up during the Siklh and British rule in what are now known as Pakistan and Bangladesh, are fast disappearing. The same has been happening in the valley of Kashmir.

The Archaeological Survey of India, which included Pakistan and Bangia Desh till 1947, has identified quite a few mosques and other Muslim monuments which stand on the sites of Hindu temples and/or have temple materials embedded in their masonry. Many inscriptions in Arabic and Persian beat testimony that Hindu temples were destroyed for constructing mosques. Local traditions can point out many more mosques which have replaced Hindu temples. Cartloads of Hindu idols are known to have been brought and placed on the steps of the Jama Masjids in several cities which were Muslim capitals at one time. Some of those idols may still be bride under the stairs of the same mosques. In sho.rt, the study of Islamic iconoclasm in this country, not to speak of the whole cradle of Hindu culture, has yet to make a meaningful start.

-(Hindu Temples What Happened to them, Vol. 1.)

